

# दस

# महाविद्या

# सिद्धि



“दस महाविद्या” 10 प्रकार की शक्तियों का प्रतीक हैं और अलग-अलग कार्यों हेतु शिव के वरदान स्वरूप देवियों की उत्पत्ति मानी गयी है। आप इनकी साधना करके अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।





# दस महाविद्या सिद्धि



लेखक

पंडित वाई.एन.झा तूफान

विश्व विख्यात ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक

प्रकाशक

212696

## अमित पाकेट बुक्स

सखुजा मार्केट, नज़दीक चौक अड्डा टांडा,  
जालन्धर-8

40/-



*Published by :*



## **AMIT POCKET BOOKS**

Sakhuja Market, Near Chowk Adda Tanda, Jalandhar City.

☎ (S) 212696 (R) 261421

Typesetting by : *Sunshine Computers*



मुद्रक : सरताज प्रिंटिंग प्रेस, जालन्धर शहर।

*Writer :*

**पंडित वाई.एन.झा तूफान**

विश्व विख्यात ज्योतिषाचार्य एवं तांत्रिक

मकान न० 61, टोबरी मुहल्ला,

टांडा रोड, ( नजदीक देवी तालाब मंदिर )

जालन्धर शहर-144 004 ( पंजाब )

फोन न० 0181-490311



# विषय सूची

## प्रथम भाग श्री दस महाविद्या अवतार खण्ड

|                                        |    |
|----------------------------------------|----|
| 1. दस महाविद्या कौन है ?               | 9  |
| 2. दस महाविद्या अवतार कथा              | 13 |
| 3. दस महाविद्याओं के मूल फूल           | 14 |
| 4. दस महाविद्याओं के रूप               | 15 |
| 5. दस महाविद्याओं के दार्शनिक तात्पर्य | 15 |
| 6. महाविद्या साधना का स्वरूप और महत्व  | 16 |
| 7. दस महाविद्या तत्व                   | 21 |
| 8. दस महाविद्याओं के कुल               | 37 |

## दूसरा भाग सिद्धि साधना प्रारम्भ से पूर्व अति आवश्यक ज्ञान खण्ड

|                                                                           |    |
|---------------------------------------------------------------------------|----|
| 9. मानव को सिद्धि करने की आवश्यकता क्यों ?                                | 39 |
| 10. सिद्धि काल में शुद्ध भावनाओं का महत्व                                 | 40 |
| 11. सिद्धि काल में अटूट निश्चय और श्रद्धा का महत्व<br>तथा साधना में सहायक | 41 |
| 12. मन की चंचलता एवं सिद्धि का प्रदर्शन सफलता में बाधक                    | 42 |
| 13. साधक की योग्यता                                                       | 44 |
| 14. सिद्धि करने हेतु स्थान का चुनाव                                       | 44 |
| 15. सिद्धि की साधना में आसनों का प्रयोग                                   | 44 |
| 16. कुशा आसन पर साधना करने पर लाभ                                         | 45 |
| 17. मृगचर्म आसन पर साधना का लाभ                                           | 45 |
| 18. व्याघ्र चर्म आसन पर साधना का लाभ                                      | 45 |
| 19. कम्बल के आसन की उपयोगिता                                              | 45 |



|                                                                                                       |    |
|-------------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| 20. रेशमी आसन की उपयोगिता                                                                             | 46 |
| 21. सिद्धि काल में वर्जित आसन                                                                         | 46 |
| 22. सिद्धि काल में माला की उपयोगिता और फेरने का नियम                                                  | 46 |
| 23. विभिन्न जप कार्यों में विभिन्न मालाओं का प्रयोग                                                   | 48 |
| 24. सिद्धि काल में पूजन हेतु पुष्प तोड़ने की विधि और मंत्र                                            | 48 |
| 25. बिल्व पत्र तोड़ने का मंत्र और विधि तथा<br>बिल्व पत्र तोड़ने का निषिद्ध काल                        | 48 |
| 26. बासी जल और पुष्प पूजन में वर्जित                                                                  | 49 |
| 27. सामान्यतः निषिद्ध पुष्प                                                                           | 49 |
| 28. पूजन के लिए विहित पत्र पुष्प एवं विभिन्न प्रकार के फूलों को<br>चढ़ाने से मिलने वाले फल का तारतम्य | 50 |
| 29. पुष्पादि चढ़ाने और उतारने की विधि                                                                 | 50 |
| 30. निवास स्थान में एक ही देवता या देवी के<br>कई प्रतिमा रखना निषेध                                   | 51 |
| 31. सिद्धि साधना आरम्भ से पूर्व साधकों के लिए<br>अति आवश्यक निर्देश                                   | 51 |
| 32. सिद्धि काल में आवश्यक निषेध                                                                       | 52 |
| 33. सिद्धि साधना की अवधि और ब्रह्मचर्य                                                                | 54 |
| 34. सिद्धि में सफलता के आवश्यक सूत्र                                                                  | 54 |
| 35. सिद्धि-साधना के दिनों में आहार                                                                    | 56 |
| 36. साधना के दिनों में साधक हेतु भोजन पात्र                                                           | 57 |
| 37. सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय सिद्धि करने का फल                                              | 57 |
| 38. सिद्धि-साधना में सावधानी                                                                          | 57 |
| 39. साधना आरम्भ से पूर्व पवित्री धारण का विधान                                                        | 58 |
| 40. सिद्धि काल में मंत्र जप हेतु स्वच्छ व शुद्ध माला का चुनाव                                         | 58 |
| 41. साधकों के लिए माला पूजन मंत्र                                                                     | 58 |
| 42. करमाला द्वारा जप विधि                                                                             | 59 |
| 43. करमाला जप में सावधानी                                                                             | 59 |
| 44. जप करते समय उंगलियों का विधान                                                                     | 59 |
| 45. सिद्धि साधना के क्षेत्र में गुरु की महानता                                                        | 59 |



|                                                                                                              |    |
|--------------------------------------------------------------------------------------------------------------|----|
| 46. सिद्धि साधना में गुरु द्वारा प्राप्त सिद्धि यंत्र सिंहासन पर स्थापित करना, व मंत्र जप की आवश्यकता क्यों? | 61 |
| 47. यंत्र-मंत्र साधना में कितने साधकों को सफलता पहली बार ही क्यों नहीं मिलती                                 | 62 |
| 48. सिद्धि साधना के मंत्रों में सांकेतिक शब्दों का तात्पर्य                                                  | 63 |
| 49. सिद्धि साधना में भगवती को नर बलि एवं पशु बलि चढ़ाना भयानक अपराध                                          | 65 |
| 50. देवि-देवताओं की साधना में षोडशोपचार पूजन की प्रधानता और षोडशोपचार पूजन का अर्थ                           | 68 |
| 51. पूजन सामग्री                                                                                             | 68 |
| 52. पूजा के कुछ आवश्यक नियम                                                                                  | 69 |

### तृतीय भाग

#### माता महाकाली षोडशोपचार पूजन एवं दश महाविद्या साधना खण्ड

|                                          |     |
|------------------------------------------|-----|
| 53. महाकाली साधना                        | 70  |
| 54. षोडशोपचार पूजन आरम्भ                 | 71  |
| 55. भगवती तारा महाविद्या सिद्धि          | 80  |
| 56. भगवती तारा महाविद्या कवच             | 83  |
| 57. श्री तारा महाविद्या यंत्र साधना विधि | 84  |
| 58. भगवती छिन्नमस्ता महाविद्या सिद्धि    | 87  |
| 59. भगवती छिन्न मस्ता कवच पाठ            | 88  |
| 60. भगवती छिन्न मस्ता सिद्धि मंत्र       | 91  |
| 61. भगवती धूमावती महाविद्या सिद्धि       | 93  |
| 62. भगवती बगला मुखी महाविद्या सिद्धि     | 96  |
| 63. भगवती महाविद्या साधना                | 103 |
| 64. भगवती भुवनेश्वरी महाविद्या साधना     | 106 |
| 65. भगवती त्रिपुर भैरवी महाविद्या साधना  | 113 |
| 66. भगवती कमला महाविद्या साधना           | 116 |
| 67. भगवती कमला महाविद्या साधना से लाभ    | 117 |
| 68. भगवती षोडशी महाविद्या साधना          | 121 |



# भूमिका

साधकों ! सिद्धि-साधना के महत्व को मानव के लिए प्रायः सभी आध्यात्मवेत्ताओं ने स्वीकार किया है। प्रत्येक मानव जब तक साधना को अपने जीवन में नहीं अपनाता है, तब तक उसके अंग-प्रत्यंग के महत्वपूर्ण तत्व सुप्त अवस्था में होते हैं, जिससे वह जीवन में वांछित प्रगति नहीं कर पाता। जीवन में ऊंचा उठने की प्रक्रिया केवल उस चिन्तन एवं प्रयास के माध्यम से सम्भव है, जिसके माध्यम से एक सामान्य मनुष्य पूर्णता तक पहुंच सकता है। एक सामान्य मानव नर से नारायण तक पहुंच सकता है और प्रभु के दर्शन कर सकता है, जो जीवन का आधार है और इसका मुख्य माध्यम “साधना” है।

मानव जीवन में प्रायः कुछ न कुछ अभाव बना ही रहता है, सुन्दर पत्नी है तो सन्तान नहीं है, यदि सन्तान है तो वह कहना नहीं मानती, पढ़ाई के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पाता, व्यवसाय में विशेष प्रगति नहीं होती, शत्रु बाधा एवं आकस्मिक दुर्घटना से मन भयभीत रहता है। इन कारणों से उसके मन-मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है, जिससे उसके स्वास्थ्य में गिरावट आती है। इन सब कारणों पर यदि नियंत्रण प्राप्त न कर सके, तो जीवन एक प्रकार से बेजान एवं बेझिल बन जाता है और साथ ही आत्म कल्याण की सम्भावनाएं भी नहीं बन पाती। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह पूर्णत्व प्राप्ति के लिए - “महाविद्या साधना” सम्पन्न कर अपने जीवन से दुर्भाग्य की लकीर को मिटा दे।

“दस महाविद्याएं” 10 प्रकार की शक्तियों का प्रतीक हैं और अलग-अलग कार्यों हेतु शिव के वरदान स्वरूप देवियों की उत्पत्ति मानी गयी है। साधक इनकी साधना सम्पन्न कर अपना जीवन धन्य करता है। परन्तु साधना की सरल विधि साधकों को प्राप्त न होने के कारण अधिकतर साधकों को सिद्धि में असफलता का सामना करना पड़ रहा है। इन्हें



कठिनाईयों को देखते हुए तीस वर्ष के अध्ययन के पश्चात् “दस महाविद्या सिद्धि” की सरल विधि साधकों के लिए समर्पित कर रहा हूँ।

इस दिव्य-दस महाविद्या सिद्धि-पुस्तक में दस महाविद्या अवतार कथा, दस महाविद्या तत्त्व, दस महाविद्याओं के रूप, सिद्धि के सरल मार्ग, पंचोपचार पूजन, षोडशोपचार पूजन, हवन, समस्त न्यास, मूल मंत्र, माला जप विधि, साधना में विभिन्न आसन प्रयोग, कवच एवं विविध स्तोत्र, यंत्र-मंत्र साधना की मूल विधि, कलश स्थापना विधि, मातृका पूजन विधि सहित अनेकों विषयों का वर्णन विस्तृत रूप से वर्णित किया गया है। यदि आप इस परम पवित्र पुस्तक में वर्णित विधि से यंत्र-मंत्र साधना करेंगे तो असफलता का प्रश्न ही नहीं उठता।

सिद्धि साधना में मार्ग दर्शन प्राप्त करने हेतु, सिद्ध महाविद्या कवच यंत्र, अथवा किसी भी समस्याओं से उबरने हेतु, मनोकामना पूर्ति हेतु-सिद्ध यंत्र प्राप्त करना चाहें या जन्म पत्रिका के आधार पर जीवन भर का भविष्य फल प्राप्त करना चाहें तो नीचे लिखित पते पर पत्र लिखें या फोन करें। मैं आपके सभी पत्रों का उत्तर देने हेतु संकल्पित हूँ।

**लेखक कार्यालय का पता**

फोन-0181-490311

**पंडित वाई. एन. झा. “तूफान”**

H. No. 61, टोबरी मुहल्ला,

टांडा रोड, (शाह सिकन्दर गेट)

नजदीक-देवी तालाब हॉस्पिटल गेट

जालंधर सिटी-144004

(पंजाब) भारत



# सम्पूर्ण नव दुर्गा पाठ

( दुर्गा स्तुति सहित )



भगवती दुर्गा स्त्री रूप में पर ब्रह्म है बल्कि पर ब्रह्म के अन्दर विराजने वाली महाशक्ति है यदि परब्रह्म के अन्दर से यह शक्ति निकल जाये तो जैसे 'इ' के निकल जाने से 'शिव' शव हो जाते हैं उसी प्रकार परब्रह्म निर्बल हो जायेंगे।

इस पुस्तक में भगवती दुर्गा की आराधना, पूजा, हवन एवम् ध्यान मंत्र आदि का उचित वर्णन दिया है। दुर्गा स्तुति सहित यह पुस्तक अनमोल रत्न के समान है। दुर्गा जी के भक्त इस पुस्तक को मंगाकर पढ़े और माता की कृपा प्राप्त करें।

सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली 'सम्पूर्ण नव दुर्गा पाठ' पढ़कर लाभ उठायें।

घर बैठे पुस्तक प्राप्त करने के लिए 60/- रु. का मनी आर्डर अवश्य भेजें। हम आपको पुस्तक वी. पी. से भेज देंगे।

## व्रत और त्योहार

हिन्दू धर्म में व्रत और त्योहारों का बहुत महत्व है। इस पुस्तक में बारहों महीने के व्रत एवम् त्योहारों के विषय में विधिवत वर्णन है।

कौन सा व्रत त्योहार किस महीने की कौन सी तिथि को पड़ता है तथा वह व्रत किस प्रकार करना चाहिए। कौन सा व्रत करने से कौन सा पुण्य फल मिलता है। कजरी, तीज, जन्माष्टमी, एकादशी आदि बारहों महीने के त्योहार कथा सहित वर्णित है।

घर बैठे पुस्तक प्राप्त करने के लिए 50/- रु. का मनी आर्डर अवश्य भेजें। हम आपको पुस्तकें वी०पी० द्वारा भेज देंगे।



पुस्तक मंगवाने का पता ————— 212696 ————

## अमित पुस्तक भंडार

ज्ञान मार्किट, नजदीक चौक अड़्डा टांडा, जालन्धर शहर।



## (प्रथम भाग)



# श्री दस महाविद्या अवतार खण्ड

### दस महाविद्या कौन है ?

पाठकों! “दस महाविद्या” महा आद्या शक्ति माहेश्वरी माता पार्वती के शरीर से ही प्रकट हुई है और माहेश्वरी भगवती पार्वती ही आद्या महाशक्ति महाकाली है, जो विभिन्न रूपों में विविध लीलाएं करती हैं।

परमात्मा के पुरुष वाचक सभी स्वरूप इन्हीं अनादि, अविनाशिनी, अनिवर्चनीया, सर्व शक्तिमयी, परमेश्वरी आद्या महाकाली के ही हैं। यही महाशक्ति अपनी माया शक्ति को जब अपने अन्दर छिपाए रखती है, तब निष्क्रिय “शुद्ध ब्रह्म” कहलाती हैं। यही जब उसे विकाशोन्मुख करके एक से अनेक होने का संकल्प करती हैं तब स्वयं ही पुरुष रूप में मानो अपनी ही प्रकृति रूप योनि में “संकल्प” द्वारा चेतन रूप बीज स्थापना करके सगुण निराकार “परमात्मा” बन जाती है। इसी की अपनी शक्ति से गर्भाशय में वीर्य स्थापना से होने वाली विकार की भांति उस प्रकृति में क्रमशः सात विकृति होती है। महा तत्त्व—समविष्ट बुद्धि, अहंकार, और सूक्ष्म पञ्चतन्मात्राएँ—मूल प्रकृति के विकार होने से इन्हें “विकृति” कहते हैं, परन्तु इनके अन्य सोलह विकारों की उत्पत्ति होने के कारण इन सातों के समुदाय को — “प्रकृति” भी कहते हैं।

फिर “अहंकार” से मन और दस [ज्ञान कर्म रूप] इन्द्रियों और “पञ्चतन्मात्रा” से “पञ्चभूतों” की उत्पत्ति होती है [इसलिए इन दोनों समुदायों का नाम “प्रकृति” और “विकृति” है] मूल प्रकृति के सात विकार, सप्तधा विकार रूपा प्रकृति से उत्पन्न सोलह विकार और स्वयं मूल प्रकृति — ये कुल मिलाकर चौबीस तत्त्व हैं यों वह महाशक्ति ही अपनी प्रकृति सहित चौबीस तत्त्वों के रूप में यह “स्थूल संसार” बन जाती हैं और जीव रूप से स्वयं पच्चीसवें तत्त्व स्वरूप में प्रविष्ट होकर खेल खेलती हैं।

चेतन परमात्म रुपिणी महाशक्ति के बिनु जड़ प्रकृति से यह सारा कार्य कदापि सम्पन्न नहीं हो सकता। इस प्रकार महाशक्ति महाकाली विश्व रूप “विराट



पुरुष" बनती है और इस सृष्टि के निर्माण में स्थूल निर्माता "प्रजापति" के रूप में आप ही अंशावतार के भाव से "ब्रह्मा" और पालन कर्त्ता के रूप में विष्णु एवं संहारकर्त्ता के रूप में रुद्र बन जाती हैं और ये ब्रह्मा, विष्णु शिव प्रभृति अंशावतार भी किसी कल्प में दुर्गा रूप में, महाशिव रूप में, किसी में श्री राम रूप में और किसी में श्री कृष्ण रूप से। अर्थात् एक ही महाशक्ति विभिन्न कल्पों में विभिन्न नाम रूप से सृष्टि रचना करती है। इस विभिन्नता का कारण और रहस्य भी उन्हीं को ज्ञात है। यही महाशक्ति अनन्त ब्रह्माण्ड में असंख्य ब्रह्मा, विष्णु, महेश बनी हुई हैं और अपनी माया शक्ति से अपने को ढककर आप ही "जीव संज्ञा" को प्राप्त हैं।

ईश्वर, जगत, जीव तीनों आप ही हैं। भोक्ता, भोग्य और भोग तीनों आप ही हैं, इन तीनों को अपने ही से निर्माण करने वाली तीनों में व्याप्त रहने वाली भी आप ही हैं।

इन्हीं सगुण, निर्गुण रूप भगवान या भगवती से उपर्युक्त प्रकार से कभी "महादेवी" रूप के द्वारा कभी "महाशिव" रूप के द्वारा, कभी महाविष्णु रूप के द्वारा, कभी श्री कृष्ण रूप के द्वारा और कभी श्री राम रूप के द्वारा सृष्टि की उत्पत्ति होती है और यही परमात्मा रूपा महाशक्ति पुरुष और नारी रूप में विविध अवतारों में प्रकट होती हैं। अपने पुरुष रूप अवतारों में स्वयं महाशक्ति [महाकाली] ही लीला के लिए उन्हीं के अनुसार रूपों में उनकी "पत्नी" बन जाती हैं। ऐसे बहुत से इतिहास मिलते हैं जिनमें महाविष्णु ने लक्ष्मी से श्री कृष्ण ने राधा से श्री सदाशिव ने उमा से और श्री राम ने सीता से कहा है कि - "हम दोनों सर्वथा अभिन्न हैं, एक के ही दो रूप हैं, सिर्फ लीला के लिए एक के दो रूप बन गए हैं, वस्तुतः हम दोनों में कोई अन्तर नहीं है।"

यही आदि के तीन जोड़े उत्पन्न करने वाली "महालक्ष्मी" है। इन्हीं की शक्ति से ब्रह्मा, विष्णु रुद्र बनते हैं, जिनसे विश्व की उत्पत्ति होती है। इन्हीं की शक्ति से विष्णु और शिव प्रकट होकर विश्व का पालन और संहार करते हैं।

दया, क्षमा, निद्रा, स्मृति, क्षुधा, तृष्णा, तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, घृति, मति, तुष्टि, पुष्टि, शान्ति, कान्ति, लज्जा आदि इन्हीं महाशक्ति [महाकाली] की "शक्तियाँ" हैं। यही गोलोक में श्री राधा, साकेत में श्री सीता, क्षीरोद सागर में लक्ष्मी, दक्ष कन्या सती, दुर्गति नाशिनी दुर्गा हैं। यही वाणी, विद्या, सरस्वती सावित्री और गायत्री हैं। यही सूर्य की प्रभा शक्ति, पूर्ण चन्द्र की सुधा वर्षिणी शोभा शक्ति, अग्नि की दाहिका शक्ति, वायु की दहन शक्ति, जल की शीतलता शक्ति, धरा की धारणा शक्ति और शस्य की प्रसूति शक्ति हैं। यही तपस्वियों का तप, ब्रह्मचारियों का त्याग, गृहस्थों की सर्वाश्रम आश्रयता, वान प्रस्थों की संयम शीलता, सन्यासियों का त्याग, महापुरुषों की महत्ता और मुक्त पुरुषों की "मुक्ति" है।

यही आद्या शक्ति महाकाली शूरो का बल, दानियों की उदारता, माता-पिता का वात्सल्य, गुरु की गुरता, पुत्र और शिष्य की गुरुजन भक्ति, साधुओं की साधुता, चतुरों की चातुरी और मायावियों की माया है। यही लेखकों की लेखन



शक्ति, नरेशों की प्रजा-पालन शक्ति और प्रजा की राजशक्ति है। यही विद्वानों की विद्या सम्पत्ति, धनवानों की अर्थ सम्पत्ति, ज्ञानियों की ज्ञान शक्ति और प्रेमियों की प्रेम शक्ति है।

यही मातेश्वरी महाकाली राजाओं की राज लक्ष्मी, वणिकों की सौभाग्य लक्ष्मी, सज्जनों की शोभा लक्ष्मी, और श्रेयार्थियों की “श्री” हैं। सारांश यह है कि जगत में तमाम जगह परमात्मा रूपी “महाशक्ति” ही विविध शक्तियों के रूप में खेल रही हैं। तमाम जगह स्वभाविक ही “शक्ति” की पूजा हो रही है। “जहां शक्ति नहीं है वहीं शून्यता है।”

यह आद्या महाशक्ति [महाकाली] ही सर्वकारण रूप प्रकृति की आधार भूता होने से “महा कारण” हैं। यही मायाधीश्वरी हैं, यही सृजन, पालन, संहार-कारिणी आद्या नारायणि शक्ति हैं।

जो श्री कृष्ण की उपासना करते हैं, वे भी इन्हीं की करते हैं। जो श्री राम शिव या गणेश रूप, अथवा दुर्गा, वैष्णवी, ज्वाला, छिन्न मस्ता, चामुण्डा, दस महाविद्या, लक्ष्मी, सरस्वती रूप में उपासना करते हैं—वे भी इन्हीं “आद्या शक्ति” की करते हैं। श्री कृष्ण ही काली हैं, माँ महाकाली ही श्री कृष्ण हैं।

“शिव” जो “शक्तिमान” हैं, उनसे “शक्ति” भिन्न नहीं है। अधिष्ठान से अध्यस्त की सत्ता भिन्न नहीं होती, वह तो अधिष्ठान रूप ही है। “शिव” एक रस अपरिणामी हैं और “शक्ति” परिणामी हैं, यह जगत “परिणामी शक्ति” का ही विलास है। शिव में शक्ति का आविर्भाव होते ही तीनों लोक और चौदहों भुवन उत्पन्न होते हैं और शक्ति का तिरोभाव होते ही जगत का अत्यन्त अभाव हो जाता है। “वेदान्त” से नीचे के श्लोकों में इसी बात को स्पष्ट किया गया है—

[ श्लोक ]

“शक्तिजातं हि संसार तस्मिन् सति जगत्त्रयम्।”

तस्मिन् क्षीणे जगत क्षीणं तच्चिकरिस्यं प्रयत्नतः॥

हिन्दी अनुवाद—“शक्ति” का कार्य यह संसार है। शक्ति के आविर्भाव से तीनों ही जगत उत्पन्न होते हैं और शक्ति का तिरोभाव होने से जगत का अत्यन्त अभाव हो जाता है।

“विद्यारण्य मुनि” भी यही कहते हैं—

[ श्लोक ]

न केवलम् ब्रह्मैव जगत कारणं निर्विकार त्वात्।

नापि केवलम् शक्तिः कारणं स्वतंत्रया भावात्॥

तस्मादुभयं मिलित्वैव जगत्कारणं भवति-॥

हिन्दी अनुवाद—केवल “ब्रह्म” जगत का कारण नहीं है, क्योंकि वह निर्विकार है और केवल “शक्ति” भी जगत का कारण नहीं, क्योंकि उसमें स्वतंत्रता का अभाव है। इस कारण ब्रह्म और शक्ति दोनों के संयोग से संसार उत्पन्न होता है।



“उपनिषद्” भी शक्ति की महिमा से भरे पड़े हैं। नीचे के कुछ मंत्रों से स्पष्ट हो जायेगा। लेख बढ़ जाने के कारण अधिक प्रमाण नहीं दिए जाते।

[ श्लोक ]

मायां तु प्रकृति विधान्मायिनं तु महेश्वरम् ।

तस्यावयवभूतैस्तु व्याप्तं सर्वमिदं जगत् ॥

न तस्य कार्ये करणं च विद्यते ।

न तस्सम श्राभ्यधिकश्च दृश्चते ॥

परास्य शक्ति विविधैव श्रूयते ।

सवाभाविकी ज्ञान बलक्रिया च ॥

ते ध्यान योगानुगता अपश्यन् ।

देवास्म शक्ति निरिवभानि तानि ।

कालास्म युक्तान्य धितिष्ठ व्येकः ॥

हिन्दी अनुवाद—“माया” को “प्रकृति” जानो, माया के अधिपति और प्रेरक “महेश्वर” हैं। महेश्वर के अवयव रूप भूतों से यह जगत् भरा पड़ा है। महेश्वर और माया को व्यापक समझो। “ब्रह्मा” का न कोई “कार्य है न करण,” न उसके समान कोई है न कोई अधिक है। परमात्मा की शक्ति नाना प्रकार की सुनी जाती हैं, शक्ति में ज्ञान, बल और क्रिया स्वभाविक है। मुनियों ने ध्यान के बल से अपने ही गुणों से निगूढ़ आध्यात्म शक्ति (प्रकृति) और ईश्वर को देखा जो कालस्व भावादि कारणों के भी कारण रूप में एक होकर अधिष्ठित है।

मुनियों ने योगबल से यह सिद्धान्त निकाला कि इस जगत् के कारण “शिव और शक्ति” [भगवान् शिव व माता पार्वती अर्थात् महाकाली] दोनों हैं, जो एक ही हैं, मात्र लीला करने हेतु दो रूप में विभक्त हैं।

“दुर्गा सप्तशती”—में भी शिव की अव्यक्तास्पन्द रूपा शक्ति देवी ने अनेक रूप धारण किए हैं। पांचवें अध्याय में शक्ति रूपी देवी की विलक्षण शक्तियों का खूब स्पष्ट वर्णन आया है। जैसे —

यह “शिव की शक्ति” अव्यक्त रूप से दृश्य मात्र जगत् में और सब शरीरों में विष्णु की माया, चेतना, बुद्धि, शक्ति, लक्ष्मी, वृत्ति, आदि नामों से आप ही स्थित हैं। दृश्यमान जगत् की और सब इन्द्रियों की अधिष्ठात्री हैं और दृश्य-अदृश्य जगत् मात्र में व्याप्त हैं और चेतन रूप हैं। ऐसी जगन्माता देवी को बारम्बार प्रणाम है। यही शक्ति रूपी देवी अव्यक्त रूप से नामों को धारण करती हैं और भक्तों की भावना के अनुसार अव्यक्त होकर ही व्यक्त (प्रकट) रूपों को धारण करती हैं। दुर्गा काली, राधा, अन्नपूर्णा, सरस्वती, लक्ष्मी, तारा इत्यादि अनेक रूपों को धारण करती हैं। महादेवी में अनन्त-सामर्थ्य है। जैसे “बीज” से “अंकुर” भिन्न नहीं है, सूर्य की किरणों से जैसे सूर्य भिन्न नहीं है, वैसे ही शिव से शक्ति (महाकाली) भिन्न नहीं है।

सूर्य की किरणों का आश्रय लेकर हम सूर्य में लीन हो सकते हैं। वैसे ही



शक्ति रूपी महाकाली की साधना सिद्धि व उपासना का आश्रय लेकर हम “ब्रह्म” में लीन हो सकते हैं।

परात्पर नाम से प्रसिद्ध विश्वातीत महाकाल पुरुष शिव की “शक्ति” का ही नाम “महाकाली” है और शक्ति शक्तिमान से अभिन्न नहीं। “अर्धनारीश्वर” की उपासना का यही मौलिक रहस्य है।

पाठकों! उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि सृष्टि जगत की सबकुछ आदिशक्ति “महाकाली” ही हैं। समस्त देवी देवता इन्हीं के अंशों से अवतरित हैं और संचालित हैं। यही महाकाली दस रूपों में विभक्त होकर “दस महाविद्या” कहलायी हैं, जिसकी संक्षिप्त कथा इस प्रकार है—

### “दस महाविद्या” अवतार कथा

एक समय की बात है कि शक्तिमान महेश्वर भगवती “उमा” (पार्वती) से रूठकर कहीं चलने को तत्पर हुए। भगवती ने कहा हे परमेश्वर। हे प्राणनाथ!! आप इस प्रकार हमसे रुष्ट होकर कहाँ जा रहे हैं ? भगवान् शंकर ने उत्तर दिया — “हमारी जहां इच्छा होगी वहां मैं जाऊँगा।”

भगवती ने मुस्कराते हुए निवेदन किया “हमारे पास से अन्यत्र जाने का विचार आप त्याग दीजिए।” परन्तु भगवान् सदाशिव ने भगवती के शब्दों पर ध्यान न देते हुए अन्यत्र जाने के विचार से प्रस्थान कर ही दिया। कुछ दूर जाने पर देखा कि मार्ग अवरुद्ध करके भगवती उमा “महाकाली” रूप में सामने खड़ी हैं और भगवान् शंकर से बोली—

“इस दिशा में आप नहीं जा सकते।”

पुनः भगवान् शंकर ने उस ओर से प्रत्यावर्तित होकर विभिन्न दिशाओं की ओर क्रमशः प्रस्थान किया। परन्तु जिस-जिस दिशा की ओर भगवान् शंकर गये, उन-उन दिशाओं में भगवती का कोई न कोई स्वरूप मार्ग रोके हुए उपस्थित रहा।

इस प्रकार भगवती महाकाली (उमा) के दस दिशाओं में दस स्वरूप प्रकट हुए। जो आगम ग्रन्थों में — “दस महाविद्या” के नाम से विख्यात हुए। इन दस महाविद्याओं के अलग-अलग नाम निम्नलिखित हैं :—

1. काली 2. तारा 3. षोडशी 4. त्रिपुर भैरवी 5. भुवनेश्वरी 6. कमला
7. छिन्नमस्ता 8. धूमावती 9. बगला मुखी (बल्गामुखी:) और 10. मातङ्गि।

इन दशों रूपों में काली का सर्वोच्च स्थान है। “चामुण्डा तंत्र” एवं “मुण्डमाला” तंत्र में इनका उल्लेख इस प्रकार आया है—

काली तारा महाविद्या षोडशी भुवनेश्वरी।

भैरवी छिन्न मस्ता च विद्या धूमावती तथा ॥

बगला सिद्ध विद्या च मातङ्गी कमलात्मिका।

एषा दश महाविद्याः सिद्धविद्याः प्रकीर्तिता ॥



यद्यपि यह संख्या यहीं तक सीमित न रहकर आगे भी बढ़ी है। “मालिनी विजय वार्तिक ग्रन्थ” में 12 और “तंत्रसार” में 18 रूपों का वर्णन है, तथापि दश महाविद्या की प्रसिद्धि ही प्रमुख है। महिष मर्दिनी, त्वरिता, दुर्गा, प्रत्यंगिरा, स्वप्नावती और मधुमती देवियों के नाम और कुछ अन्य नामों के संयोजन से यह संख्या 24 तक भी पहुंची है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि विष्णु के प्रमुख दश अवतार और उनके बाद 24 अवतारों की जिस प्रकार प्रसिद्धि हुई है उसी प्रकार महाविद्याओं के अवतारों की भी प्रसिद्धि हुई है।

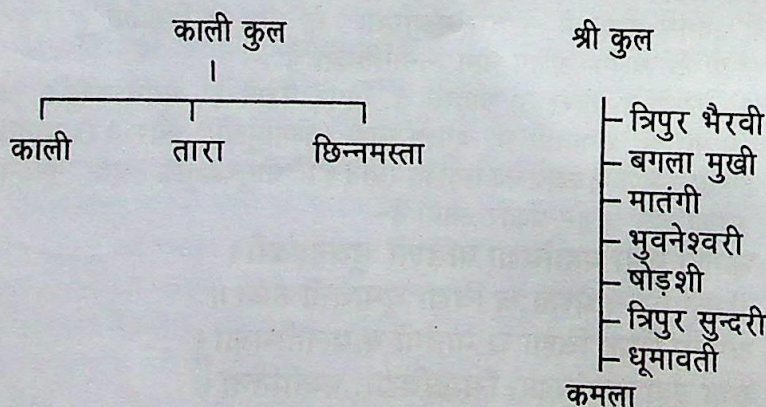
आद्या शक्ति महाकाली के “श्यामा” एवं “रक्ता” दो भेद हैं। कुछ विद्वान “राधा” को श्यामा मानते हैं, क्योंकि श्री कृष्ण को श्याम कहा जाता है। परन्तु ज्यादातर विद्वान इसे उचित नहीं मानते। माँ काली का रंग काला होने से उन्हें श्यामा की उपाधि से विभूषित किया जाता है, जबकि “रक्ता” भेद से यही “श्री सुन्दरी” हैं।

अतएव ये कहा जा सकता है कि यहां मातेश्वरी आद्या भवानी के ही दो रूप हैं। इसी को दो विभागों में महाविद्या के रूप में बताया गया है। इनमें श्री सुन्दरी को “श्री विद्या” कहते हैं। श्री विद्या में दो शब्द प्रधान रूप है—प्रथम “श्री” तथा द्वितीय “विद्या”। इसमें श्री शब्द से — “श्री सुन्दरी” तथा “विद्या” शब्द से “विद्याराज्ञी” भगवती कालिका को माना गया है। इस प्रकार स्पष्टतया सिद्ध हो जाता है कि यह दोनों भेद महाशक्ति कालिका के ही हैं।

### दश महाविद्याओं के मूल-कुल

सिद्धि करने वाले साधको! माहेश्वरी महाकाली के अंशावतारी दस महाविद्याओं का तंत्र शास्त्रों में “दो कुलों” के आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

1. काली कुल और 2. श्री कुल  
देखें नीचे का चित्र —



कमला



उपरोक्त “काली कुल” में तीन महा-विद्याओं की गणना की जाती है -

1. काली 2. तारा और 3. छिन्न-मस्ता।

“श्री कुल”- में सात महाविद्याओं की गणना होती है

1. त्रिपुर भैरवी 2. बगला मुखी 3. मातंगी 4. भुवनेश्वरी 5. षोडशी 6. धूमावती और 7. कमला।

### दस महाविद्याओं के रूप

पाठकों! कुछ महर्षियों ने तंत्र शास्त्र के अन्तर्गत दस महाविद्याओं को तीन रूपों में व्यक्त किया है, जिनमें -

1. सौम्य 2. उग्र और 3. सौम्योग्र।

सौम्य कोटि में ..... त्रिपुर सुन्दरी, भुवनेश्वरी, मातंगी और कमला [महालक्ष्मी] आती है।

उग्र कोटि में - काली, छिन्न मस्ता, धूमावती और बगला मुखी मानी जाता है।

सौम्योग्र कोटि में - तारा और त्रिपुर भैरवी का नाम वर्णित है।

प्रत्येक महाविद्या के अनंत रूप हैं जो तंत्र शास्त्रों में दर्शित सृष्ट्यादि क्रम, आम्नाय क्रम, कालमक्रम व कल्प क्रमादि विभिन्न क्रमों के कारण अनेक रूपता को प्राप्त हैं। इनमें भी काली, तारा और षोडशी के भेद तो सबसे अधिक विख्यात हैं।

### दस महाविद्याओं का दार्शनिक तात्पर्य

साधकों! आद्या शक्ति भगवती परमेश्वरी “विश्वातिरिक्त” और “विश्व व्यापिनी-विश्व रूपिणी” शक्ति के रूप में वर्णित हैं। जो एक अद्वितीय होते हुए भी बहुविधमूर्ति हैं। दस महाविद्याओं में एक अखण्ड विश्व शक्ति ही दसविध होकर प्रकाशमान हैं और इन्हीं शक्तियों से पराशक्ति समस्त जगत् का नियंत्रण और परिचालन करती हैं।

तन्त्र शास्त्रों ने इसलिए बार-बार यह निर्देश किया है कि - “साधक चाहे जिस महाविद्या की उपासना करता हो, किन्तु वह उनमें परस्पर भेद-बुद्धि न रखे। लीला भेद के कारण विभिन्न स्वरूप धारण करने पर भी स्वरूपतः एकत्व बुद्धि रखने और अभेद ज्ञान पर स्थिर प्राण प्रतिष्ठा पूर्वक आराधना करना ही समुचित है।

यह अभेद बुद्धि दर्शन का सामान्य तत्व है। “शाक्त दर्शन” भी इस तत्व का प्रतिपादन करता है। काली, तारा आदि नाम भी दार्शनिक तत्वों के पोषक हैं तथा प्रत्येक नाम से वर्जित “उपनिषद ग्रन्थ” भी इन्हें परम तत्व की अधिष्ठात्री के रूप में इनका वर्णन करते हैं।



महाविद्याओं का स्वरूप वस्तुतः एक ही आद्या शक्ति के विभिन्न स्वरूपों का विस्तार है। दस-महाविद्याओं का अंक गणित वेद-शास्त्र के दस के अंक की प्रधानता की ओर ही संकेत करना है।

“यजुर्वेद” में — “तेभ्यो दस प्राचीर्दशदक्षिणा दश प्रतीचीदेशो दीचीर्दशोर्ध्वा” मंत्र इसका सूचन करते हैं। अंक कुल — “9” — हैं और दशवां उसकी पूर्णता का सूचक 0 शून्य है, जो पूर्ण से पूर्ण और पुनः पूर्ण होने का आध्यात्मिक संदेश देता है।

मानव स्वभाव तथा कर्म, कामना, स्वरूप वैभव आदि के आधार पर एक ही वस्तु अनेक रूपों में ग्रह्य बनती है। यहां भी साधकों की रुचि विचित्रता से विविधता आई है, यह स्पष्ट है और हमारी विविधता में जो एक रुपता निहित है वही यहां भी नित्य स्थिर हैं, इसी दृष्टि से साधना करनी चाहिए।

### महाविद्या साधना का स्वरूप और महत्व

साधकों ! दस महाविद्याओं में—महाकाली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, छिन्नमस्ता, त्रिपुरा भैरवी, धूमावती, बगलामुखी, मातंगी और कमला महाविद्या आती हैं। ये कलियुग में “कल्प वृक्ष” के समान शीघ्र फल प्रदान करने वाली एवं साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक हैं।

तंत्र की आधार भूत दसों महाविद्याओं से सम्बन्धित दीक्षा यदि गुरु कृपा से किसी को प्राप्त हो जाये, तो व्यक्ति के कई-कई जन्म संवर जाते हैं। महाविद्या दीक्षाएं प्राप्त कर यदि साधक श्रद्धा से साधना सम्पन्न करता है, तो असफलता सम्भव ही नहीं होती। साधना के महत्व को मानव के लिए प्रायः सभी अध्यात्मवेत्ताओं ने स्वीकार किया है। किन्तु इनके स्वरूप को उचित रूप से प्रतिपादित नहीं कर पाए हैं। इसी कारण से साधक साधना में असफलता प्राप्त करते हैं। “दस महाविद्याओं” पर चालीस वर्षों का रीसर्च और अध्ययन के पश्चात् यह ग्रन्थ आपकी सेवा में प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिसे व्यक्ति जीवन में सरलता से अपना सके। साधकों ! साधना का क्षेत्र इतना विस्तृत है कि उसे कुछ पन्नों पर या कुछ शब्दों के द्वारा व्यक्त करना अत्यन्त कठिन है।

किन्तु साधना के महत्व को ध्यान में रखते हुए यदि यह कहें कि साधना ही वह क्रिया है, जिसके माध्यम से मनुष्य जीवन को व्यवस्थित ढंग से संचालित कर सकते हैं, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मानव शरीर “शिव-शक्ति” सायुज्य का प्रतिफल है, उन्हीं के माध्यम से मनुष्य के शरीर की सारी गतिविधियाँ नियंत्रित होती हैं और इसका मुख्य माध्यम साधना है।

साधना का तात्पर्य—“शरीर साधयति सः धर्मः” अर्थात् शरीर को साध लेना ही साधना है, जिसके माध्यम से इस शरीर पर नियंत्रण प्राप्त किया जा सकता है



और जीवन का निर्माण किया जा सकता है। जब तक जीवन में साधना नहीं है, तब तक शरीर संतुलित नहीं बन सकता और जब तक स्वस्थ नहीं रहेंगे, तब तक जीवन में पूर्णता नहीं है और इस अधूरे जीवन को पूरा करने के लिए—“महाविद्या साधना” करना ही एक श्रेष्ठतम मार्ग है।

इन साधनाओं में सफलता के लिए “सद्गुरु” मार्ग दर्शन एवं आर्शीवाद अत्यन्त आवश्यक है, जिससे साधक मंत्र जप सम्पन्न कर अपने लक्ष्य तक पहुँच सके और आनन्द प्राप्त कर सके, जो जीव का आधार है।

प्रत्येक मानव जब तक वह “साधना” को अपने जीवन में नहीं अपनाता है, तब तक उसके अंग-प्रत्यंग के “महत्वपूर्ण तत्व” सुप्त अवस्था में होते हैं, जिससे वह जीवन में वांछित प्रगति नहीं कर पाता है। जीवन में ऊँचा उठने की प्रक्रिया केवल उन चिन्तन एवं प्रयास के माध्यम से संभव है, जिसके माध्यम से एक सामान्य मनुष्य पूर्णता तक पहुँच सकता है। एक सामान्य मानव नर से नारायण तक पहुँच सकता है और प्रभु के दर्शन कर सकता है, जो जीवन का आधार है, जो जीवन का चिन्तन है और यदि व्यक्ति दर्शन नहीं कर पाए, तो उसका जीवन व्यर्थ है।

मानव जीवन में प्रायः कुछ न कुछ अभाव बना ही रहता है, सुन्दर पत्नी है तो सन्तान नहीं है, यदि सन्तान है तो वह कहना नहीं मानती, पढ़ाई के क्षेत्र में आगे नहीं बढ़ पाता, व्यवसाय में विशेष प्रगति नहीं हो पाती, शत्रु बाधा एवं आकस्मिक दुर्घटना से मन सदैव भयभीत रहता है। इन कारणों से उसके मन मस्तिष्क पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना स्वभाविक है, जिससे उसके स्वास्थ्य में गिरावट आती है।

इन सब कारणों पर यदि नियंत्रण प्राप्त न कर सके तो जीवन एक प्रकार से बेजान एवं बोझिल बन जाता है और साथ ही आत्म कल्याण की सम्भावनाएँ भी नहीं बन पाती। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि वह पूर्णत्व प्राप्ति के लिए—“महाविद्या साधना” सम्पन्न कर अपने जीवन में दुर्भाग्य की लकीर को मिटा दें, मैंने भी कुछ साधना किए हैं आप भी करके देखें, मैं मार्ग दर्शक बनने को भी तैयार हूँ, बस इसके लिए व्यक्ति का दृढ़ निश्चय, प्रयास एवं चिन्तन अति आवश्यक है।

दस महाविद्याएँ 10 प्रकार की शक्तियों का प्रतीक हैं और अलग-अलग कार्यों हेतु शिव के वरदान स्वरूप देवियों की उत्पत्ति मानी गयी है। साधक इनकी साधना सम्पन्न कर अपना जीवन धन्य करता है और जीवन में शक्ति के जिस तत्व की कमी होती है, उस कमी को पूरा करने के लिए आवश्यक क्षमता प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार से व्यक्ति के जीवन में महाविद्या साधना महत्वपूर्ण स्थान रखती है, किन्तु साधना के मूल मर्म एवं रहस्य को समझना साधक के लिए नितान्त आवश्यक है। इसमें मुख्य बात यह है कि साधक अन्तर्मन से, करुण हृदय से और अत्यन्त विनीत भाव से महाविद्या का आवाहन करता है और साधक अपने प्रयास में सफलता प्राप्त कर अद्वितीय “युग पुरुष” बनने का गौरव प्राप्त कर लेता है।



इन दस महाविद्याओं में सर्वश्रेष्ठ—

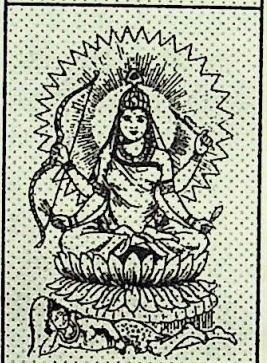
1. श्री महाकाली—कलियुग में “कल्प वृक्ष” के समान शीघ्र फलदायी एवं साधक की समस्त कामनाओं की पूर्ति में सहायक है। जब जीवन में प्रबल पुण्योदय होता है तभी साधक ऐसी प्रबल शत्रुहन्ता, महिषासुरमर्दिनी, वाक् सिद्धि प्रदायक महाकाली साधना सम्पन्न करता है।



2. श्री तारा—आर्थिक उन्नति एवं अन्य बाधाओं के निवारण हेतु—“तारा महाविद्या” का स्थान महत्वपूर्ण है। इस साधना के सिद्ध होने पर साधक की आय के नित नये श्रोत खुलने लगते हैं और वह पूर्ण ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत कर जीवन में पूर्णता प्राप्त कर लेता है।



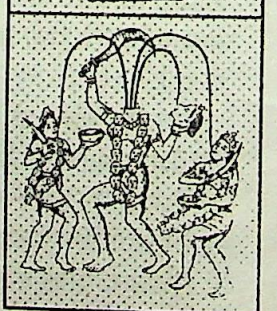
3. श्री त्रिपुर सुन्दरी—“त्रिपुर सुन्दरी” महाविद्या का स्थान दस महाविद्याओं में सबसे मुख्य हैं, क्योंकि यह शान्त स्वरूप और उग्र स्वरूप दोनों ही स्वरूपों की साधना है। जीवन में काम, सौभाग्य व शरीर सुख के साथ-साथ वशीकरण, सरस्वती सिद्धि, लक्ष्मी सिद्धि, आरोग्य सिद्धि की भी यही साधना है। वास्तव में त्रिपुर सुन्दरी साधना को तो “राज-राजेश्वरी” कहा गया है, क्योंकि यह अपनी कृपा से साधारण व्यक्ति को भी राजा बनाने में समर्थ है।



4. श्री भुवनेश्वरी—महाविद्याओं में भुवनेश्वरी महाविद्या को आद्या शक्ति अर्थात् मूल प्रकृति कहा गया है और इसलिए तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट किया गया है कि जिसने अपने जीवन में भगवती भुवनेश्वरी महाविद्या सिद्ध नहीं की वह साधक नहीं हो सकता है।



5. श्री छिन्न मस्ता—छिन्न मस्ता महाविद्या साधना जहाँ जीवन में पूर्णता देने में समर्थ है वहीं साधक के लिए वायुगमन प्रक्रिया की श्रेष्ठतम साधना है। इस प्रकार की साधना के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति की आवश्यकता होती है और जो साधक जीवन में निश्चय कर लेते हैं कि उन्हें साधनाओं में सफलता प्राप्त करनी ही है, वे इस तरह की शिष्ट साधनाएँ “गुरु मार्ग निर्देशन में” सम्पन्न करते हैं।

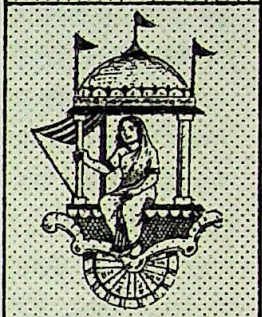




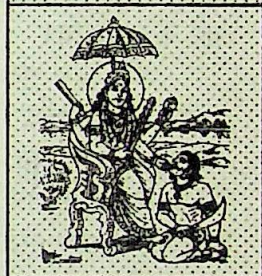
6. श्री त्रिपुरा भैरवी—शत्रु संहार एवं तीव्र तंत्र बाधा निवारण के लिए भगवती त्रिपुर भैरवी महाविद्या साधना अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गयी है। इस साधना की मुख्य विशेषता यह भी है, कि व्यक्ति के सौन्दर्य में निखार आने लगता है और वह अत्यधिक सुन्दर दिखने लगता है।



7. श्री धूमावती—जो साधक अपने जीवन में निश्चित एवं निर्भीक रहना चाहते हैं और जीवन में निरन्तर उन्नति प्राप्त करना चाहते हैं, उन्हें भगवती धूमावती साधना सम्पन्न करनी चाहिए। इस महाविद्या के सिद्ध होने पर साधक की ख्याति दूर-दूर तक फैल जाती है। इसी महाविद्या की साधना से मैं संसार से यश, मान व ख्याति प्राप्त कर रहा हूँ।



8. श्री बगलामुखी—महाविद्या बगलामुखी का दूसरा नाम “बल्गामुखी” है। यह साधना शत्रु बाधा को समाप्त करने के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण साधना है। “रूद्रायमल तंत्र” में स्पष्ट रूप से बताया गया है कि बगलामुखी साधना की पीठ पद्धति अपने आप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है।



9. श्री कमला—कमला महाविद्या साधना मुख्य रूप से महालक्ष्मी साधना का आधार है और जिनके घर में दरिद्रता ने कब्जा कर लिया हो अथवा घर में सुख-शांति न हो, आय का पर्याप्त स्रोत न बन रहे हों, उनके लिए यह साधना सौभाग्य के द्वार खोलती है।

10. श्री मातंगी—यह साधना सम्पन्न करने से साधक जीवन में सभी आयामों को स्पर्श करते हुए संसार में अद्वितीय महापुरुष बनने का गौरव प्राप्त कर लेता है।

इस प्रकार साधनात्मक ऊँचाई प्राप्त करने में अनेकों बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। कभी आर्थिक विषमता, तो कभी सांसारिक बंधन व पग-पग पर अन्य कठिनाईयाँ आती ही हैं। किन्तु मनुष्य तो वह होता है, जो छलांग लगा कर इनको पार करता हुआ, तीर की तरह अपने लक्ष्य की ओर निरन्तर बढ़ता ही रहता है। ये बाधाएँ तो आएँगी और आती रहेंगी, आपके पूर्व जीवन में भी आती रही हैं, मगर एक सामान्य स्तर





पर इन बाधाओं से जूझ करके जीवन बरबाद कर देना जीवन नहीं कहलाता है। जीवन तो वह कहलाता है, जहां लक्ष्य हो कि जीवन कि उस ऊँचाई पर पहुंचे, जहां हम अपने आप को गौरवान्वित अनुभव कर सकें।

इसके लिए एकमात्र साधन है—“दस महाविद्या साधना”। यूं तो शास्त्रों में हजारों प्रकार की साधनाएं दी हुई हैं, मगर ऋषियों ने उनमें से चुन करके इन दस महत्वपूर्ण साधनाओं की जीवन में पूर्णता के लिए आवश्यक माना है। जो व्यक्ति इन दसों महाविद्याओं की साधना को पूर्णता के साथ सम्पन्न कर लेता है, वह निश्चय ही जीवन में ऊँचाई पर उठ जाता है।

परन्तु मात्र पुस्तकों से पढ़ करके साधनाएं सम्पन्न नहीं हो पाती, अधिकचरे गुरुवों के माध्यम से ये साधनाएँ सिद्ध नहीं हो पाती, क्योंकि भगवान शिव ने प्रत्येक मंत्र को कीलित कर रखा है और उसको उत्कीलित करना, उस ताले को खोलने की क्रिया उस गुरु को ही ज्ञात हो सकती है, जिसने उच्च कोटि की साधनाएँ सिद्ध कर रखी हों। वही जानता है कि इस मंत्र का उत्कीलन क्या है—और जब तक मंत्र का उत्कीलन शिष्य को प्राप्त नहीं हो पाता, तब तक शिष्य साधना में सफलता प्राप्त नहीं कर सकता।

और जब गुरु साधना से सम्बन्धित “दीक्षा यंत्र” प्रदान करता है, उसके पश्चात् जब साधक साधना में प्रविष्ट होता है और साधना सम्पन्न करता है तभी साधना के द्वारा धन, मान, प्रतिष्ठा, भोग—विलास आदि सब कुछ प्राप्त कर सकता है। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी वह कुण्डलिनी जागरण, दिव्य दर्शन, ब्रह्माण्ड—भेदन, वायु गमन, अष्ट सिद्धियाँ, नौ निधियाँ, सोलह कलाएँ, इन सब विद्याओं में पारंगत होकर जीवन के उन आयामों को भी स्पर्श कर सकता है, जो अद्वितीय है, श्रेष्ठ और दिव्य है।

जब तक जीवन में साधना का प्रवेश नहीं हो जाता, जब तक जीवन में गुरु की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक जीवन अधूरा है। गुरु से दीक्षा यंत्र प्राप्त कर जब व्यक्ति साधनाएं सम्पन्न करता है, तो वह सिद्ध पुरुष बन जाता है, वह महापुरुष बन जाता है, वह प्रज्ञावान बन जाता है और फिर साधनाओं में सफलता उसके लिए एक बहुत छोटी सी बात रह जाती है।

मानव जीवन में तो अनेक प्रकार की स्थितियाँ बनती—बिगड़ती रहती हैं। कभी घात लगाकर आक्रमण करने वाले शत्रु होते हैं, तो कभी आकस्मिक रूप से घटने वाली दुर्घटनाएँ होती हैं, ऋण, पारिवारिक समस्याएँ, जीवन के उतार—चढ़ाव यह सब तो ऐसी स्थितियाँ हैं, जिनसे व्यक्ति एक बार फिर भी अपने प्रयासों से जूझ सकता है, लेकिन जहां कोई भावी, अज्ञात, अनिष्ट मंडरा रहा हो, उसके निराकरण का तो एकमात्र उपाय इस “देवीय बल” का आश्रय ही होता है।



## द्वय महाविद्या तत्त्व

1. महाकाल पुरुष और उसकी शक्ति महाकाली-परात्पर नाम से प्रसिद्ध विश्वातीत महाकाल पुरुष की शक्ति का ही नाम “महाकाली” है। शक्ति-शक्तिमान से अभिन्न है। उद्वेतवाद अक्षुण्ण रहता है। अग्नि की दाहक शक्ति जैसे अग्नि से अभिन्न है, प्रकाश शक्ति जैसे सूर्य से अभिन्न है, तथैव चिदात्मा की शक्ति चिदात्मा से अभिन्न है। वह एक ही तत्त्व “शिव-शक्ति” रूप में परिणत हो रहा है। “अर्धनारीश्वर” की उपासना का यही मौलिक रहस्य है। शक्ति-शक्तिमान में स्त्री-पुरुष भेद मानना आनुचित है। इसी आधार पर “रहस्य शास्त्र” कहता है-

रसा च ब्रह्म स्वरूपा च नित्या सा च सनातनी ।

यथात्मा च तथा शक्तिर्यथाग्नौ दाहिका स्थिता ॥

अतएव ही योगीन्द्रैः स्त्री पुरुषभेदो न मन्यते ।

सर्वं ब्रह्ममयं ब्रह्मान् शश्वत सदीप नारद ॥

[ दे. भा. 9/1/10-11 ]

अपि च-

अहमे वास पूर्व तु नान्यत् किञ्चिन्नगाधिप ।

तदात्मरूपं चित्सेवित् परब्रह्मै कनामकम् ॥

तस्य काचित् स्वतः सिद्धा शक्तिर्मायेति विश्रुता ।

पावकस्यो वणतेवे चमुशर्णाशोरिव दीधितिः ॥

स्वशक्तैश्च समायोगादहं बीजास्मतां गता ।

[ दे. भा. 9/32/6 ]

जब कुछ न था, उस समय केवल अनुपाख्य तम था। उसी स्थिति का निरूपण करते हुए “भगवान् मनु” कहते हैं-

आसीदिदं तमोभूत मप्रज्ञात मलक्षणम् ।

अप्रतर्क्य मनिर्देश्यं प्रसुप्तमिव सर्वतः ॥

[ मनु 1/5 ]

वह अप्रज्ञात, अलक्षण, अप्रतर्क्य, अनिर्देश्य तत्त्व ही “महाकाल” है। उसी की शक्ति “महाकाली” है। सृष्टि से पहले इसी महाविद्या का साम्राज्य रहता है। वह पहला स्वरूप है। अतएव महाकाली आगम शास्त्र में प्रथमा, आद्या आदि नामों से व्यवहृत हुई हैं। रात्रि प्रलयकाल का स्वरूप है। उसमें भी रात्रि के बारह बजे का समय तो घोरतम है। यही महाकाली है। सूर्योदय से पहले, रात्रि के बारह बजे से बीच का सारा समय महाकाली है। उत्तरोत्तर तम का हास है। इतने समय को तम के तारतम्य के कारण ऋषियों ने 84 विभागों में विभक्त किया है। वही महाकाली के 84 अवान्तर विभाग हैं। प्रत्येक का स्वरूप भिन्न-भिन्न है। शक्ति के उन्हीं स्वरूपों



को समझाने के लिए “निदान विद्या” के आधार पर ऋषियों ने उनकी मूर्तियों का निर्माण किया है। सभी शक्तियाँ अचिन्त्या हैं। निर्गुण हैं। प्रत्यक्ष से परे हैं। परन्तु-

**अचिन्त्य स्वाप्न मेचस्य निर्गुणस्य गुणात्मनः।**

**उपासकानां सिद्धयर्थं ब्रह्मणो रूप कल्पना ॥**

इस आर्य-सिद्धान्त के अनुसार उनके स्वरूप ज्ञान एवं उपासना के लिए उनकी कल्पित मूर्तियाँ बनायी गयी हैं। धनुर्वेद, गान्धर्व वेद, रहस्य, गाथा आदिवत् दुर्भाग्य से आज निदान शास्त्र भी लुप्त हो गया है। मूर्तियों के रचना वैचित्र्य पर आज जो सन्देह हो रहे हैं, उसका मूल कारण निदान विद्या का लोप है।

दस महाविद्याओं के स्वरूप का निदान से सम्बन्ध है, अतः संक्षेप में “निदान शब्द” का निर्वचन कर देना अनुचित न होगा-

“संकेत” का ही नाम “निदान” है। अमुक को अमुक समझो, यही निदान है। इहलौकिक, पारलौकिक दोनों भावों में निदान का समान सम्बन्ध है। शोक का निदान काला वस्त्र है। खतरे का निदान लाल वस्त्र है। निरुपद्रवता का निदान हरित वस्त्र है। कीर्ति का निदान श्वेत वस्त्र है। पृथ्वी का निदान कमल है। मोह शक्ति का निदान “सुरा” है। लक्ष्मी का निदान हस्ती है। विजय का निदान ध्वज है। संहार शक्ति का निदान कटा मस्तक है। न केवल भारतीय ही, अपितु संसार के मनुष्य मात्र हमारी इस निदान विद्या के उपासक हैं। पाश्चात्य मनुष्य शोकावसर पर काली पट्टी हाथ में बांधते हैं। फांसी का हुक्म सुनाने वाला जज लाल वस्त्र पहनता है। भारतीय मूर्ति निर्माण पर नाक भौं सिकोड़ने वाले उन महानुभावों से हम पूछते हैं कि काले वस्त्र से शोक का क्या सम्बन्ध है ? इसके उत्तर के लिए उन्हें भारतीय निदान विद्या की शरण लेनी पड़ेगी। परन्तु इतना अवश्य समझ लेना चाहिए कि इस निदान का सजातीय भाव से ही सम्बन्ध रहता है। चाहे जिसपर “संकेत-सम्बन्ध” नहीं हो सकता है। शोक से ज्ञान प्रकाश मन्द हो जाता है। सारी चेतना-ज्योत शोक सन्ताप से आवृत हो जाती है। इधर कृष्ण वस्त्र सारे प्रकाश को पी जाता है। इसी समानता को लक्ष्य में रखकर काले वस्त्र को शोक का निदान माना गया है। कीर्ति मनुष्य में रश्मिवत् निकलकर चारों ओर उस मनुष्य को प्रकाशित कर देती है। प्रकाश का रूप शुक्ल वर्ण है। साथ ही में कृष्ण वस्त्र वत् इसमें सौर-रश्मियाँ लीन न होकर प्रतिफलित होती हैं। इसी सादृश्य से शुक्ल वस्त्र को कीर्ति का निदान माना गया है। पानी में रुद्रवायु के प्रवेश से धनता आती है। वही धन पानी हरित कोई बनती है। वही “पुष्कर पर्ण” है-

“आपो वै पुष्कर पर्णनम्” [ शत 6/4/2/21 ] के अनुसार यह पत्ता पानी का है। यही आगे जाकर फेन, मृत, सिकता, शर्करा, अश्ना, अय, हिरण्य, इस रूप में परिणत होकर पृथ्वी पुर रूप में परिणत हो जाता है। पुरकर होने से ही इसे पुष्कर कहा जाता है। पृथ्वी की सृष्टि “पुष्करपर्ण” से ही हुई है। अतएव उसी पानी से उत्पन्न होने वाले कमल को पृथ्वी का निदान माना गया है।

जिस देवता के हाथ में आप कमल पुष्प देखो विश्वास करो सम्पूर्ण भूमण्डल पर उस देव-प्राण का साम्राज्य है। माया जनित मोह से मनुष्य की विवेक शक्ति



नष्ट हो जाती है। उधर सुरा का भी यही गुण है। अतएव सुरा को मोह-शक्ति का निदान माना गया है।

भगवती के हाथ में “सुरापात्र” है, इससे ऋषि यही सिखलाते हैं कि उस महामाया ने अपनी “मोह-मदिरा” से सबको उन्मत्त बना रखा है। फांसी रक्तपात है, अतएव रक्त वस्त्र को इसका निदान माना गया। खूब वृष्टि होने पर वृक्षों में हरियाली आ जाती है। रूक्षता जाती रहती है। सर्वत्र शान्ति का साम्राज्य हो जाता है। अतएव हरित वस्त्र को शान्ति रस का निदान माना गया। स्टेशनों पर हरी झंडी निरूपद्रवता का निदान है। लाल झंडी खतरे का द्योतक है। इन सब उदाहरणों से बतलाना यही है कि निदान अनुरूप भाव से ही सम्बन्ध रखता है। प्रकृत में शक्ति-तत्त्व ही निरूपणीय है। अतः प्रधान रूप से शक्ति सम्बन्धी निदान पर ही प्रकाश डाला जायेगा।

“शक्ति प्रतिमाओं” का अनेक रूप हैं। किसी के चौंसठ भुजाएं हैं। किसी के बत्तीस, किसी के आठ, किसी के चार, किसी के दो हैं। किसी ने जिह्वा निकाल रखी है। किसी के हाथ में कमल है। किसी के हाथ में नरमुण्ड, किसी के कर्तरी, (कैंची) किसी के परशु हैं। कोई मुर्दे पर खड़ी हैं। कोई अट्टहास करती हुई सुरापान कर रही हैं। कोई नग्न हैं। न समझने वाले उपहास भले ही करें, परन्तु जिस दिन उन्हें निदान रहस्य मालूम हो जायेगा, उस दिन अवश्य ही वे भारतीय संस्कृति के सामने अपना मस्तक झुका देंगे।

महाकाल पुरुष की महाशक्ति रूपा जिस महाकाली का पूर्व में निरूपण किया गया है, सर्व प्रथम उसी के निदान की ओर आपका ध्यान आकर्षित किया जाता है। तत्रदेवताओं की तत्रच्छाकित्यों की तत्रच्छक्तियों को समझाने के लिए ऋषियों ने निदान द्वारा तत्रदेवताओं का तत्रदनुरूप ध्यान बना डाला है। प्रत्येक देवता की उपासना विधि के प्रारम्भ में ही “अथध्यानम्” लिखा रहता है। ऋषि आदेश करते हैं कि जिस देवता की तुम उपासना करने चले हो, पहले उसके स्वरूप का ध्यान करो। यदि महाकाली की उपासना या साधना करना चाहते हो तो निम्नलिखित ध्यानानु मोदित स्वरूप पर दृष्टि डालो—

**शवारूढां महाभीमां घोरदंष्ट्रां हसन्मुखीम् ।**

**चतुर्भुजां खड्गमुण्ड वराभयकरां शिवाम् ॥**

**मुण्डमाला धरां देवीं ललजिह्वां दिगम्बराम् ।**

**एवं सञ्चिन्तयेत् कालीं श्मशाना लचवासिनीम् ॥**

[ शाक्त प्रमोद—कालीतंत्र ]

अर्थात्—“वह महाकाली मुर्दे पर सवार है। उसकी शरीर कृति महा-डरावनी है। उसकी दंष्ट्रा बड़ी तीक्ष्ण अतएव महाभयावह है। ऐसे महाभयानक रूपवाली वह आदि माया हँस रही हैं। उसके चार हाथ हैं। एक हाथ में खड्ग है। एक में नरमुण्ड है। एक में अभय मुद्रा है। एक में वर है। गले में मुण्ड माला है। जिह्वा बाहर निकल रही है। वह सर्वथा नग्न है। श्मशान ही उसकी आवास भूमि है।”



पूर्वोक्त ध्यान का यही अक्षरार्थ है। अब “रहस्यार्थ” पर दृष्टि डालिए—

हम बतला आए हैं कि महाकाली नाम की महाशक्ति प्रलयरात्रि के मध्यकाल से सम्बन्ध रखती हैं। संसार जब तक शक्तिमान रहता है, तभी तक वह शिव है। शक्ति निकल जाने पर वह “शव” बन जाता है। दूसरे शब्दों में, उसका स्वरूप ही नष्ट हो जाता है। विश्वातीत परात्पर नाम से प्रसिद्ध महाकाली की शक्तिभूता महाकाली का विकाश विश्व से पहले है। विश्व का संहार करने वाली कालरात्रि का विकाश कालरात्रि वही है। सृष्टि काल उसकी प्रतिष्ठा नहीं हैं, प्रलय काल उसकी प्रतिष्ठा है। दूसरे शब्दों में विश्व उसकी प्रतिष्ठा नहीं है, अपितु शक्ति शून्य अतएव शवरूप विश्व का निदान माना गया है। वह अनुपाख्य तमरूपा है। नाश करने वाली है। शत्रु संहार करने वाले योद्धाओं की आकृति महाभयावह हो जाती है। साधारण मनुष्य तो उसकी ओर देख भी नहीं सकता। बस, प्रलय रात्रिरूपा संहार कारिणी शक्ति के इसी स्वरूप को बतलाने के लिए “भयानक आकृति” को निदान माना गया।

शत्रु पक्ष की सेना को नष्ट कर योद्धा अट्टहास करता है। उसका वह हँसना भीषणता के लिए होता है। उस समय उसी का साम्राज्य हो जाता है। यही स्थिति महाकाली की है। अतएव उसके लिए “हसन्मुखीम्” कहा गया। अपि च निर्वल मनुष्यों के आक्रमणों को विफल कर सबल मनुष्य उसकी निर्बलता पर हँसा करता है। आज वही दशा इस विश्व की है। जो विश्व एवं विश्व की प्रजा अपने आप को सर्वेसर्वा समझते थे आज वे उससे परास्त हैं। इस भाव का निदान भी हँसना है। प्रत्येक गोल वृत्त में 360 अंश माने जाते हैं। उसमें नब्बे-नब्बे के चार विभाग माने जाते हैं। यही उस वृत्त की चार भुजाएँ हैं। इन्हीं को “स्वस्तिम” कहा जाता है। खगोल के वही चारों स्वस्तिम इन्द्रोपलक्षित चित्रा नक्षत्र, पूषोपलक्षित रेवती नक्षत्र, तार्क्ष्योपलक्षित श्रवण नक्षत्र, बृहस्पत्युपलक्षित लुब्धकबन्धु नक्षत्र, इन चार नक्षत्रों से सम्बन्ध हैं। चित्रा से श्रवण ठीक षडभान्त पर (२८० अंश पर) हैं। रेवती से लुब्धक इतने ही फासले पर है। आकाश की इन्हीं चारों भुजाओं का निरूपण करती हुई “श्रुति” कहती है—

**स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः ।**

**स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥**

[ यजु. वे. ]

बतलाना इससे यही है कि पूर्ण वृत्त में चार भुजाएँ होती हैं। वह महाकाली पूर्ण रूपा है—यह पूर्वोक्त संख्या विज्ञान में स्पष्ट हो चुका है। अनन्ता काश रूप महाअवकाश में चतुर्भुज रूप में परिणत होकर ही वह विश्व का संहार करती हैं। इसी रहस्य का निदान चार भुजाएँ हैं।

नाशशक्ति का निदान “खड्ग” है। नष्ट होने वाले प्राणियों का निदान “कटा मस्तक” है। स्थिति-विच्युति का नाम कम्प है। कम्प ही भय है। यही क्षोभ है। विश्व ससीम है अतएव वह सभय है। परन्तु व्यापक तत्व में कम्परूप भय का अभाव है। उससे अतिरिक्त कोई स्थान नहीं, अतएव उसमें भय नहीं। ऐसा है एकमात्र



विश्वातीत "महाकाल पुरुष"। क्योंकि वह व्यापक है। "अभयं गतो भवति"—इत्यादि रूप से उसी परात्पर को "उपनिषद्" अभय बतलाता है। वह संहार करती है, डरावनी हैं, घोर रूपा है, सब कुछ हैं। परन्तु विश्वास कीजिए, अभय पद प्राप्ति भी उसी की आराधना पर निर्भर है। "अभयमुद्रा" इसी का निदान है।

विश्व सुख क्षणिक है। अतएव दुःख रूप है। परम सुख तो उसी की आराधना से मिल सकता है। परम शिव रूपा तो वही है। जीवित व प्रलय काल में भी वही सबका आधार है। ध्वंस्त विश्व के निर्जीव प्राणियों का निर्जीव भाग भी उसी पर प्रतिष्ठित है। उस व्यापक तत्व से बाहर कोई कैसे बच सकता है। इसी परायण भाव का निदान "मुण्डमाला" है।

विश्व उस शक्ति का आवरण हो जाता है। "तत् सृष्ट्वा तदेवानु प्राक्सित"—के अनुसार वह शक्ति विश्व निर्माण कर उसके भीतर प्रविष्ट हो जाती है। विश्व ही उसका वस्त्र है। परन्तु विश्व नाश के अनन्तर वर स्व-स्वरूप से उल्बण है। उस स्थिति में आवरण का अभाव है। वहाँ केवल दिशाएँ ही वस्त्र हैं। इसी अवस्था का निदान "नग्न भाव" है।

उस महाशक्ति का पूर्ण विकाश काल है विश्व का प्रलय काल। सारा जीवन जब श्मशान बन जाता है, तब उस तमोमयी का विकाश होता है। "श्मशान" इसी अवस्था का निदान है। यह है "महाकाली" का स्वरूप। साधारण मनुष्य इस गम्भीर भाव की आराधना करने में असमर्थ हैं। अतएव उनके कल्याण के लिए परम कारुणिक महर्षियों ने निदान द्वारा पूर्वोक्त प्रतिमाओं की कल्पना की है। प्रलय काल की कैसी स्थिति है ? उसके जानने से हमारा क्या लाभ है ? पूर्वोक्त ध्यान विज्ञान से सबका उत्तर हो जाता है। अन्त में उसी परमाराध्या का स्मरण करते हुए इस प्रथमा विद्या के निरुपण को समाप्त कर दूसरी विद्या की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हैं।

2. अक्षोभ्य पुरुष और उसकी महाशक्ति "तारा"—रात्रि के १२ बजे से प्रातः ६ बजे तक (सूर्योदय से पहले) चतुरशीति (८४) भेदभिन्ना महाकाली की सत्ता बतलायी गयी है। इसके बाद "तारा" का साम्राज्य है। "हिरण्यगर्भ विद्या" के अनुसार निगम शास्त्र ने सम्पूर्ण विश्व की रचना का आधार "सूर्य" को माना है। सौर मण्डल आग्नेय होने से हिरण्मय कहलाता है। क्योंकि अग्नि हिरण्य रेटा है। उस हिरण्यमय मण्डल के (आग्नेय सोलर सिस्टम के) केन्द्र में वह सौर ब्रह्म तत्व प्रतिष्ठित है। अतएव सौर ब्रह्म को "हिरण्यगर्भ" कहा जाता है। भूः भुवः स्वः रूप रोदसी त्रिलोकी के निर्माता एवं अधिष्ठाता, स्वयंभू परमेष्ठी रूप अमृता सृष्टि, पृथ्वी चन्द्रमा रूपा मर्त्यासृष्टि के विभाजक एवं सञ्चालक, विश्व केन्द्र में प्रतिष्ठित इन्हीं "भगवान हिरण्य गर्भ" का प्रादुर्भाव होता है।

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्ने भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिविं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

[ यजु. वे. 23/2 ]

यह श्रुति इसी सिद्धान्त का प्रतिपादन करती है। जैसे "विश्वातीत महाकाल



पुरुष की शक्ति" महाकाली हैं वैसे ही विश्वाधिष्ठाता इस "हिरण्यगर्भ पुरुष की शक्ति" तारा हैं। घोर तम में दीपक-बिम्ब तारा-सदृश प्रकाशित रहता है। उस महातम के केन्द्र में उत्पन्न होने वाले सूर्य की वही स्थिति है। अतएव श्रुति में सूर्य "नक्षत्र" नाम से प्रसिद्ध है। [देखो शत०० 2/1/2/18] अतएव इनकी शक्ति आगम शास्त्र में-"तारा" नाम से प्रसिद्ध हुई। यह पुरुष तन्त्र शास्त्र में "अक्षोभ्य" नाम से प्रसिद्ध है। वैदिक सिद्धान्त के अनुसार सूर्य सर्वथा स्थिर है। "वृहतीछन्द-नाम से प्रसिद्ध सुप्रसिद्ध विष्णुद्वत्त के ठीक मध्य में" क्षोभ रहित होकर स्थिर रूप से भगवान सूर्य तप रहे हैं-

**"सूर्यो वृहतीमध्यू हस्तपति उदयास्तमञ्चैव । दर्शनादर्शनं रथेः ।"**

इत्यादि वचन सूर्य को स्थिर ही बतलाते हैं। चूँकि यह क्षोभ रहित है। अतएव ये "अक्षोभ्य" नाम से प्रसिद्ध हुए। सूर्य को प्रारम्भ में वेदों ने रुद्र कहा है। एवं शिव-घोर-भेद से इसके दो शरीर बतलाये हैं। आपोमय पारमेष्ठ्य महासमुद्र में घर्षण द्वारा आग्नेय परमाणु उत्पन्न हुए। अनन्तर "श्वेत वाराह" नाम से प्रसिद्ध प्राजापत्य वायु द्वारा उनका केन्द्र में संघात हुआ। संघात होते होते वह अग्नि-परमाणु-संघ पिण्ड रूप में परिणत होता हुआ सहसा प्रज्ज्वलित हो पड़ा-उसी का नाम "सूर्य" हुआ। उत्पन्न होते ही इस रुद्राग्नि ने अन्न की इच्छा की। क्योंकि अन्नाद अग्नि बिना अन्नाहुति के क्षणमात्र भी प्रतिष्ठित नहीं रह सकता है। इस अन्नाहुति से पहले वह सूर्य महा-उग्र था। संसार को जला डालने वाला था। बस, इस समय के उग्र-सूर्य की जो शक्ति थी वही-"उग्र तारा" नाम से प्रसिद्ध हुई। जब तक अन्नाहुति होती रहती है तब तक "तारा" शान्त रहती है। अन्नाभाव में वही उग्र बनकर संसार का नाश कर डालती है। उसी उग्र भाव का, उग्र शक्ति का निरूपण करता हुआ रहस्य कहता है-

**"प्रत्याली हृपदार्पिताङ्घ्रिसवहृद् घोराट्टहासा परा  
खड्गेन्दी वरकत्रिखर्पर भुजाहुंकार बीजोद्धवा ।  
सर्वा नीलविशाल पिंगल जटाजूटै कनागैर्युता  
जाडयं न्यस्य कपाल कर्तृ जगतां हन्युग्रतारा स्वयम् ॥"**

[ शाक्तप्रभेद-तारा तन्त्र ]

महाकाली महाप्रलय की अधिष्ठात्री हैं, उग्रतारा सूर्य प्रलय की अधिष्ठात्री है। प्रलय करना दोनों का समान धर्म है। अतएव महाकाली और उग्रतारा के ध्यान में थोड़ा ही अन्तर है। इनकी चारों भुजाओं में सर्प लिपट रहे हैं। यह शक्ति प्रलय काल में जहरीली गैस से ही विश्व का संहार करती है। प्रलय काल में हवा जहरीली हो जाती है। दम घुटने लगता है। जिसका यत्किञ्चित् निदर्शन बिहार के परिहार से स्पष्ट हो रहा है-इसी का निदान "सर्प" है। संसार नष्ट हो जाता है। उस शक्ति की सत्ता विश्व-केन्द्र में बतलायी गयी है। शवरूप विश्व-केन्द्र में वह प्रतिष्ठित है। इसी रहस्य को बतलाने के लिए शव के हृदय पर उसे प्रतिष्ठित किया है। सौर-अग्नि अन्नाहुति बन्द होने से प्रबल बेग धारण कर लेता है। सांय-सांय शब्द करने लगता



है, इसी का निदान “अट्टहास” है। प्रलय काल में पृथ्वी, चन्द्रमा, मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सब का रस उग्र सौर-ताप से सूख जाता है। सबका रस भाग वह “उग्रतारा” पी जाती है। रस प्राणियों का श्री भाग है। यह प्रधान रूप से शिरःकपाल में रहता है। श्री (रस) भाग के रहने के कारण ही मस्तक “सिर” कहलाता है। [देखिए-शत० ६/१/१]। इन्हीं को आधार बनाकर वह उस रस का पान करती है। इसी का निदान “खप्पर” है।

“नीलग्रीवो विलोहितः” [यजु० वे० १६/७] के अनुसार उग्र सूर्य नीलग्रीव है। पिङ्गल है। इसकी शक्ति का भी वही रूप है। सूर्य-रूप मस्तक भाग से चारों ओर फैली हुई रश्मियों का भी यही स्वरूप है। ये रश्मियाँ भी उसकी जटाएँ हैं। प्रति सौर-रश्मि में उस महाभीषण काल में जहरीली वायु भरी रहती है। इसी स्वरूप को बतलाने के लिए-“नील विशाल पिंगल जटाजुटैक नागैर्युता” यह कहा गया है। वह महाशक्ति इसी उग्र रूप में परिणत होकर विश्व का संहार करती हैं। यही दूसरी सृष्टि-धारा है। महाकाली रूप विश्वातीत तत्व के अनन्तर सूर्य रूपा इस दूसरी महाशक्ति का विकाश होता है।

3. पञ्चवक्त्र शिव और उसकी महाशक्ति “षोडशी”-तीसरी महाविद्या हैं-षोडशी। सूर्य उत्पन्न हुआ। उसमें पारमेष्ठ्य सोम की आहुति हुई। इससे उग्रता शान्त हो गयी। एवं रुद्र सूर्य शिव बन गया। बस, शिव भावापन्न सूर्य ही संसार का प्रभव है। शिवात्मक सूर्य ही पृथिवी, अंतरिक्ष, द्यौरूप त्रैलोक्य का एवं उसमें रहने वाली अमृत-मर्त्य प्रजा का निर्माण करते हैं। इसी आधार पर-

नूनं जनाः सूर्येण प्रसूताः [ ऋक्० ]

निवेशयन्मृतं मर्त्यञ्च [ यजु० ]

सूर्य आत्मा जगतस्तस्थचश्र [ यजु० ]

इत्यादि कहा जाता है। इस शिवात्मक सूर्यशक्ति का (जो शिव तन्त्र में-“पञ्चवक्त्र शिव” नाम से प्रसिद्ध है) ही नाम-“षोडशी” है। रुद्र शक्ति तारा थी, शिव शक्ति षोडशी है। घोर सूर्य को मध्याह्न का सूर्य समझिए। शिव सूर्य को प्रातः काल का शान्त सूर्य समझिए। उसकी शक्ति को उग्र समझिए। इसकी शक्ति को शिवा समझिए। षोडशी का निदान रहस्य बतलावे, इसके पहले प्रसंगागत पञ्चवक्त्र शिव-सम्बन्धी निदान का संक्षिप्त स्वरूप उपस्थित करते हैं-

मुक्ता पति पयोद मौक्ति कजवा वर्णं मुखैः पञ्चभि

स्त्रयक्षै रञ्चित मीशमीन्दु मुकुटं पूर्णेन्दु कोटि प्रभम्।

शूलं टंककृपाण वज्र दहनान् नागेन्द्र पाशाङ्कु शान्

पाशं भीतिहरं दधानम मिताकल्पो ज्वलाद्ग भजे ॥

[ तन्त्रसार ]

शक्ति एवं कार्य भेद से भगवान् शंकर के अनेक रूप हो जाते हैं। एक ही शिवसूर्य पाँच दिशाओं में व्याप्त होकर “पञ्चमुख” बन जाते हैं। पूर्वोक्त ध्यान उन्हीं पाँचों मूर्तियों का स्वरूप बतलाता है। उस एक ही के वे पाँचों मुख पूर्वा,



पश्चिमा, उत्तरा, दक्षिणा, ऊर्ध्वा, दिग्भेद से क्रमशः 1. तत्पुरुष, 2. सद्योजात, 3. वामदेव, 4. अघोर, 5. ईशान-इन नामों से प्रसिद्ध हैं। पाँचों मुख क्रमशः-चतुष्कल, अष्टकल, 7. त्रयोदशकल, अष्टकल, पञ्चकाल हैं। एवं पाँचों क्रमशः हरित, रक्त, धूम्र, नील, पीत वर्ण के हैं। इस पञ्चवक्त्र शिव के 10 हाथ हैं। दशों में 1. अभय, 2. टङ्क, 3. शूल, 4. वज्र, 5. पाश, 6. खड्ग, 7. अंकुश, 8. घण्टा, 9. नाग और 10 अग्नि-ये दश आयुध हैं।

ये शिव सर्वज्ञ हैं। त्र्यक्षरूप हैं। अनादि बोध स्वरूप हैं। स्वतंत्र हैं। अलुप्त शक्ति हैं। अनन्त शक्तिमान हैं। पाँचों दिशाओं में इनकी व्याप्ति हैं। पाँचों ओर इन का रूख है। रूख ही मुख है। “पञ्चमुख” इसी भाव का निदान है। इस शिव के आग्नेय, वायव्य, सौम्य, तीन स्वरूप धर्म हैं। ये तीनों ही तीन-तीन प्रकार के हैं। आग्नेय प्राण के अग्नि, वायु, इन्द्र ये तीन भेद हैं। वायव्य-प्राण के वायु, शब्द, अग्नि ये तीन भेद हैं। एवं सौम्य-प्राण के वरुण, चन्द्र, दिक् ये तीन भेद हैं। इस प्रकार उस शिव की 9 शक्तियाँ हो जाती हैं। ये नवों घोर हैं। उग्र हैं। एवं इन सब का आधार भूत परोरजा नाम का सर्वप्रतिष्ठा रूप शान्ति मय प्राजापत्य प्राण हैं। दस हाथ, दस आयुध इन्हीं दस शक्तियों के निदान हैं। टङ्क से आग्नेय ताप सूचित किया जाता है। शूल का वायव्य ताप से सम्बन्ध है। “न वातेन बिना शूलम्” यह निश्चित सिद्धान्त है। वज्र से ऐन्द्र-ताप अभिप्रेत है। पाश से वारुण ताप अभिप्रेत है। “वरुण्या वा एषा यदरजुः” के अनुसार पाश के अधिष्ठता वरुण ही हैं। खड्ग का चान्द्रशक्ति से सम्बन्ध है। अङ्कुश से दिव्या हेतिका सम्बन्ध है। नाग से सञ्चर नाड़ी और विषैले वायु की ओर इशारा है। जिस वायु-सूत्र से रूद्र प्रविष्ट होते हैं वही सञ्चार नाड़ी कहलाती है। इस नाड़ी का नाक्षत्रिक सर्प प्राण से सम्बन्ध है। सारे ग्रह सर्पाकार हैं। इनमें वह सौर-तेज व्याप्त रहता है। सब ग्रह रूप सर्पों के साथ रूद्र सूर्य का भोग होता है। अतएव उनके सर्वांग शरीर में सर्प लपेट दिए जाते हैं। इनकी दृष्टि प्रकाश रूपा है। इसी का निदान “अग्नि ज्वाला” है। सोमाहुति का निदान मस्तकस्थ इन्दु है। शान्ति रूप परोरजाः प्राण का निदान अभय मुद्रा है। आगम रहस्यानुसार स्वर वाक् के अधिष्ठता यही हैं। इसी का निदान घंटा है। नीचे लिखी “तालिका का” से सब स्पष्ट हो जाता है-

1. अभयम् प्राजापत्यम् शान्तिः परोरजाः प्राणः।
2. टङ्क आग्नेयतापः अग्निः आग्नेय प्राणः।
3. शूलम् वायव्यतापः वायुः आग्नेय प्राणः।
4. वज्रम् ऐन्द्रतापः इन्द्रः आग्नेय प्राणः।
5. पाशः वारुणहेतिः वरुणः सौम्य प्राणः।
6. खड्गः चान्द्रहेतिः चन्द्रः सौम्य प्राणः।
7. अङ्कुशः दिव्याहेतिः दिक् सौम्य प्राणः।
8. घण्टा ध्वनिः शब्दः शब्दः वायव्य प्राणः।
9. नागः सञ्चर नाड़ी वायुः वायव्य प्राणः।
10. अग्निः प्रकाशः अग्निः वायव्य प्राणः।



इसी पञ्चवक्त्र शिव की शक्ति का नाम षोडशी है। पञ्चकल, अपव्यय, पञ्चकल अक्षर, पञ्चकल आत्मक्षर परात्पर की समीष्ट को पूर्व में हमने षोडशी रूप पुरुष बतलाया है। स्व, पर, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी, इन पाँचों में से एकामात्र सूर्य में ही उस षोडशी का पूर्ण विकाश होता है। स्वयम्भू अव्यक्त है। अतएव वहाँ भी पूर्ण विकाश नहीं। परमेष्ठी में यज्ञवृत्ति के कारण विकाश नहीं। वहाँ आया हुआ षोडशी अन्तर्लीन हो जाता है। परन्तु सूर्य अग्निमय होने से चितिधर्मा है। अतएव इसमें आया हुआ चिदात्मा पूर्ण रूप से उत्खण हो जाता है। स्वयंभू आदि पाँचों में क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्र, अग्नि, सोम इन पाँच अक्षरों की प्रधानता है। पाँचों में इन्द्रात्मक सूर्य में ही षोडशी का विकाश है। अतएव इस सूर्य रूप इन्द्र के लिए “इन्द्रो हवै षोडशी” [शत० 4/2/5/14] यह कहा जाता है। पञ्चकाल अव्ययका सृष्टिसाक्षी भाग मन, प्राण वाग् रूप है। इसमें प्राण दो का विकाश है। उधर पृथ्वी में केवल वाक् का विकाश है। चान्द्र अन्तरिक्ष में वाक् प्राण का विकाश है। परन्तु मध्य पतित चितिधर्मा सूर्य में मन, प्राण, वाक् तीनों का विकाश है। इसी आधार पर—

1. वागिन्द्रः, 2. आदित्यमनः, 3. प्राणः प्रजानामुद यस्वेष सूर्यः—इत्यादि कहा जाता है।

“स या एष आत्मा वाङ्मय प्राणमयो मनोमयः” (बृहदारण्यक) के अनुसार सृष्टि साक्षी आत्मा मनः प्राण वाङ्मय है। सूर्य में तीनों की सत्ता है। अतएव “सूर्य आत्मा जगत स्तस्थुषश्च” इत्यादि रूप से सूर्य को स्थावर जङ्गमात्मक सम्पूर्ण विश्व का आत्मा बतलाया जाता है। चूँकि इसमें षोडकल पुरुष का पूर्ण विकाश है, अतएव इसको हम अवश्य ही षोडशी कहने के लिए तैयार हैं। इसीलिए इसकी शक्ति को भी अवश्य ही षोडशी कहा जा सकता है। भूः, भुवः, स्वः रूप तीनों ब्रह्मपुर इसी महाशक्ति से उत्पन्न हुए हैं। अतएव तंत्र में यह “त्रिपुर सुन्दरी” नाम से भी प्रसिद्ध है। इसी का स्वरूप बतलाते हुए ऋषि कहते हैं—

**बाला कर्मण्डला भासां चतुर्बाहां त्रिलोचनाम् ।**

**पाशाङ्कुश शरांश्चापं धारयन्ती शिवां भजे ॥**

**[ शाक्त प्रमोद—षोडशी तन्त्र ]**

सूर्य में प्रकाश है, ताप (अग्नि) हैं, आहतुसोम (चन्द्रमा) है। “त्रीणि ज्योतिषि सचते स षोडशी” के अनुसार उस शिव शक्ति ने इन्हीं तीन रूपों से विश्व को प्रकाशित कर रखा है। अतएव सूर्य को लोकचक्षु कहा जाता है। इन्हीं तीन ज्योतियों का निदान तीन नेत्र हैं। सौर-शक्ति सम्पूर्ण खगोल में व्याप्त है। खगोल चतुर्भुज है। इसी का निदान चार भुजाएँ हैं। सोमहुति से यह शान्त बन रही है। प्रातःकाल का बाल सूर्य इसकी साक्षात् प्रतिकृति है। बालार्क इसी अवस्था का निदान है। सूर्य से उत्पन्न होने वाली प्रजा सौर आकर्षण सूत्र से वद्ध रहती है। स्वयं पृथिवी भी उससे वद्ध है। अतएव वह कभी क्रान्ति वृत्त को नहीं छोड़ती। उस सौर शक्ति ने अपने आकर्षण रूप पाश से सबको वद्ध कर रखा है। पाश इसी का निदान है। अक्षर रूपा उस निर्यात के डर से सब अपना-अपना काम यथावत् कर रहे हैं। स्वयं सूर्य भी उसका लोहा मानता है।



भयादस्याग्निस्तपति भयात्पति सूर्यः ।

भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः ॥

[ कट० 2/6/3 ]

-के अनुसार वह सब पर अपना अंकुश रखती है। “अंकुश” इसी का निदान है। जो प्राधापराध से शक्ति के उन अटल नियमों का उलंघन करते हैं उनका वह नाश कर डालती है। पृथ्वी, अंतरिक्ष, द्यौ तीनों लोकों में व्याप्त रुद्र के अन्न, वायु, वर्षा तीन प्रकार के इषु (वाण) है [यजु० 16/66] वे इषु असल में इस शक्ति के ही इषु हैं। इन्हीं के द्वारा वह संहार करती हैं। शर इसी का निदान है। सृष्टि कर्त्ता, ब्रह्मा, पालक विष्णु, संहारक रुद्र, खण्ड प्रलय के अधिष्ठाता यम, चारों देवता उसके अधीन हैं। वह चारों पर प्रतिष्ठित हैं। “चतुर्बाहाम” इसी अवस्था का निदान है। पूर्वोक्त ध्यान इसी स्वरूप को प्रकट करता है।

4. त्र्यम्बक शिव और उनकी महाशक्ति “भुवनेश्वरी”—सूर्य उत्पन्न हुआ। पारमेष्ठ्य सोम की आहुति हुई, इससे यज्ञ हुआ। यज्ञ से त्रैलोक्य निर्माण हुआ। तीनों भुवन उत्पन्न हो गए, विश्वोत्पत्ति के उपक्रम में षोडशी की सत्ता थी। भुवनों को उत्पन्न कर उनका सञ्चालन करती हुई वही शक्ति आज “भुवनेश्वरी” बन गयी। यही चौथी सृष्टि धारा है, चौथी सृष्टि विद्या है। इसी का स्वरूप बतलाते हुए ऋषि कहते हैं—

उद्यदिनधु तिमिन्दु किरीटां तुङ्गकुचां नयन त्रय युक्ताम् ।

स्मेरमुखी वरदाङ्गश पाशाभो तिकरां प्रभजे भुवनेशीम ॥

[ शाक्त प्रमोद—भुवनेश्वरी तंत्र ]

यदि सूर्य में सोमाहुति न होती तो यज्ञ असम्भव था। बिना यज्ञ के भुवन-रचना का अभाव था। बिना भुवन के “भुवनेश्वरी” उन्मुग्ध थी। सूर्य के मस्तक (उपर) भाग पर प्रतिष्ठित ब्राह्मणस्पत्य सोम आहुत हो रहा है। इसी से भुवनोत्पत्ति है। इसी से भुवनेश्वरी उद्बुद्ध है। “इन्दु किरीट” इसी अवस्था का निदान है। तीन नेत्रों का निदान पूर्व से गतार्थ है। संसार में जितनी भी प्रजा है सबको उसी त्रिभुवन-व्याप्ता भुवनेश्वरी से अन्न मिल रहा है। चौरासी लाख योनियाँ उसी से अन्न लेकर जीवित हैं। इसी का निदान “वरद” है। जो भुवन प्रलय-समुद्र में विलीन था, आज वही इसी शक्ति के प्रभाव से विकसित हो रहा है। मानो वह शक्ति अपनी उग्रता छोड़कर विश्व पर कृपा दृष्टि कर रही है। “स्मेरमुखी” शब्द इसी भाव का निदान है। शासन शक्ति का निदान अंकुश-पाशादि है, जैसा कि पूर्व में बतलाया जा चुका है।

5. कवन्ध शिव और उसकी महाशक्ति “छिन्नमस्ता”—

“पाङ्क्तो वै यज्ञः” [ श० 1/1/2 ]

के अनुसार सृष्टि का मूल यज्ञ पाक यज्ञ, हविर्यज्ञ, महायज्ञ, अति यज्ञ, शिरोयज्ञ—भेद से पाँच भागों में विभक्त है। स्मार्त-यज्ञ पाक यज्ञ है। इसी को गृह्या-



यज्ञ, एकाग्नि यज्ञ भी कहा जाता है। अग्नि होत्र, दर्शपौर्णमास्य, चातुर्मास्य, पशुबन्ध इत्यादि हविर्यज्ञ है। भूत यज्ञ, मनुष्य यज्ञ, पितृ यज्ञ, देवयज्ञ, ब्रह्मयज्ञ, ये पांच महायज्ञ हैं। अग्नि चयन, राजसूय, आश्वमेध, वाजपेय, ये अतियज्ञ हैं।

“छिन्न शीर्षो वै यज्ञः” इस श्रुति के अनुसार पूर्वोक्त सारे यज्ञ छिन्नशीर्ष हैं। सबका मस्तक कटा हुआ है। सुप्रसिद्ध पौराणिक “हयग्रीवो पाख्यान” का (जिसमें गणपति वाहन मूशक की कृपा से धनुष प्रत्यञ्चा भंग हो जाने से शयान विष्णु के शिरच्चेदन का निरूपण है। इसी छिन्नशीर्ष से सम्बन्ध है। प्रत्येक यज्ञ के अन्त में शिरः सन्धान के लिए जो यज्ञ किया जाता है उसे ही शिरोयज्ञ कहते हैं। बिना इसके किए यज्ञ बिना माथे का रहता है।

यही यज्ञ ब्राह्मण ग्रन्थों में—सम्राड्याग, प्रवर्ग्याग, धर्मयाग, महाबीरोपासना इत्यादि अनेक नामों से व्यवहृत हुआ है। “सूर्यो ह वा अग्निहोत्रम्,” “सूर्यो वा ज्योतिष्मोमः”—इत्यादि के अनुसार अग्नीसोमात्मक सूर्य यज्ञ रूप है। इस यज्ञ मूर्ति अतएव विष्णु नाम से प्रसिद्ध सूर्य पुरुष का यज्ञात्मना निरूपणा करते हुए वेद पुरुष कहते हैं—

चत्वारि शृङ्ग्यो अस्य पादा द्वौ शीर्षे हस्तासो अस्य ।

त्रिधा वद्धो वृषभो शेरवीति महादेवो मर्त्या आविवेश ॥

[ गो० प्रा० 3/9 ]

“ऋग, यजुः, साम, अथर्व-चारो वेद इसके चार सींग हैं। प्रातः स्तवन, माध्यन्दिन स्तवन, सायंसवन, तीन सवन इनके तीन पैर हैं। ब्रह्मौदन, प्रवर्ग्य, दो मस्तक हैं। मन्त्र, कल्प, ब्रह्मण, इन तीनों से वह मर्यादित हैं। गायत्री आदि सात छन्द उनके सात हाथ हैं। ऐसा यह यज्ञ वृषभ विश्व में हुंकार कर रहा है। यही महादेव मरण धर्मा सब प्राणियों का आत्मा बना हुआ है। सब में आत्म रूप से प्रविष्ट हो रहा है।”

पूर्वोक्त यज्ञावयवों में से “ब्रह्मौदन” और “प्रवर्ग्य” की ओर ही आपका ध्यान आकर्षित किया जाता है। जिस वस्तु का आत्मा से नित्य सम्बन्ध रहता है वह उस आत्मा का “ब्रह्मौदन” कहलाता है। वह अन्न उस ब्रह्म का ओदन है। सिवा उसके और कोई उसे नहीं ले सकता। एवं जो वस्तु उस आत्मा से पृथक् होकर दूसरे आत्मा का अन्न बन जाती है वह “प्रवर्ग्य” कहलाती है। इसी को “उच्छिष्ट” भी कहते हैं। सूर्य का जो ताप सूर्य से वद्ध रहता है, वह उसका ब्रह्मौदन है। परन्तु जो ताप अलग होकर औषधि, वनस्पति, मुष्यादि के निर्माण में उपयुक्त हो जाता है, वह प्रवर्ग्य है। धूप में पानी रख दीजिए, गरम हो जाएगा। सूर्य अस्त हो गया, परन्तु पानी अब भी गरम है। सूर्य अपने ताप को इस पानी में छोड़ गया। हवा में छोड़ गया। रात है परन्तु हवा गरम चल रही है। यही उसका प्रवर्ग्य भाग है, धर्म भाग है। धर्म ही निरुक्त क्रमानुसार धर्म रूप में परिणत होता हुआ “गरम” बन गया है। ताप सौर यच्च यावत् पदार्थों का उपलक्षण हैं। सब सौर-पदार्थ सूर्य से अलग होते रहते हैं। यदि सूर्य इस उच्छिष्ट को नहीं छोड़ता तो विश्व निर्माण असम्भव था। इसी आधार पर—“उच्छिष्टात् शकलं जगत्” यह कहा जाता है। यह प्रवर्ग्य पूर्व श्रुति के



अनुसार उस यज्ञ का मस्तक है। यह अलग कट जाता है, इसी आधार पर यज्ञ को छिन्नशीर्ष कहा जाता है। पार्थिव गणपति की प्राण प्रतिष्ठा रूप मूषक का आत्मा बनने वाला घनवायु ही अपने व्यापार से उस प्रबर्ग्य को यज्ञ से अलग करता है। मूषक द्वारा ही यज्ञविष्णु का मस्तक कटता है। कहना यही है कि “ब्रह्मोदन” से आत्म रक्षा होती है, एवं “प्रबर्ग्य” सृष्टि का स्वरूप बनता है। बस, इस प्रबर्ग्य को ही निगम-मूलक आगम शास्त्र “कबन्ध” नाम से व्यवहृत करता है। इस कबन्ध पुरुष की शक्ति का नाम ही-“छिन्न मस्ता है।”

“छिन्नमस्ता” बनकर ही वह शक्ति संसार बनती हैं, एवं उसी रूप से नाश भी करती है। यज्ञ मूर्ति सूर्य से उत्पन्न होने वाले जड़-चेतन रूप सभी पदार्थ यज्ञ मूर्तिरत हैं। सबमें से प्रबर्ग्य भाग निकल रहा है। हम उसके प्रबर्ग्य को लेकर जीवित हैं। साथ ही हमारा प्रबर्ग्य उसमें जा रहा है। सूर्य त्रैलोक्य एवं उसकी प्रजा को प्रबर्ग्यानन देता हैं, साथ ही रश्मियों से लेता भी रहता है। विसर्ग से जैसे उस प्रजापति का शरीर प्रतिक्षण विस्त्रस्त होता रहता है, आदान से प्रति क्षण उसका सन्धान भी होता रहता है। इसी प्रक्रिया का नाम “शिरः सन्धान” है। यही प्रबर्ग्ययाग है। मस्तक कटने से जैसे प्राणी निर्जीव हो जाता है, वैसे ही बिना इसके यज्ञ स्वरूप ही नष्ट हो जाता है। अतएव ब्रह्मोदयन् वत प्रबर्ग्य-भाग को भी हम अवश्य ही यज्ञ का मस्तक कहने के लिए तैयार हैं। वह मुझे देता है। साथ ही मुझे खाता है। एवं साथ ही उस खाने वाले को मैं भी निरन्तर खा रहा हूँ। वस्तु-मात्र में यह आदान-विसर्ग निरन्तर हो रहा है। जब तक आदान विसर्गात्मक यज्ञ है तभी तक विश्व-सत्ता है। इसी यज्ञ रहस्य का निरूपण करती हुई “श्रुति” कहती है-

**अहमस्मि प्रथमजा ऋतस्य पूर्व देवताभ्यो मृतस्य नाम ।**

**यो मा ददाति स इदेवभावत् अहमन्न मन्नभदन्त मदमि ॥**

अर्थात्-“मैं छिन्नशीर्ष अवश्य हूँ। परन्तु अन्नागमन रूप शिरः सन्धान यज्ञ से स्वरूप में प्रतिष्ठित हूँ। परन्तु जब यह शिरः सन्धान रूप अन्नागमन बन्द हो जायेगा उस समय केवल “छिन्नमस्ता” ही रह जायेगी। उस समय वह सर्वात्मा हमारा शोषण कर लेगी। जो महामाया षोडशी बनकर भुवनेश्वरी बनती हुई संसार का पालन करती है, वही अन्तकाल में छिन्नमस्ता बनकर नाश कर डालती है।” उसी का निरूपण करते हुए ऋषि कहते हैं-

**प्रस्थालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिरः कर्तृकां**

**दिग्वस्त्रां स्वकबन्ध शोणित सुधाधारां पिवन्ती मुदा ।**

**नागावद्ध शिरोमणि त्रिनयनां हृद्युत्पलाल डकृता**

**रस्यासक्त मनोभवोपरि दृढां ध्यायैज्जवा सन्निभाम् ॥**

**दक्षे चातिसिता विभुक्तचिकुरा वार्त्रो तथा सर्प्यं**

**हस्ताभ्यं दधती रजोगुणभवा नाम्नापि सा वर्णिनी ।**

**देव्याश्छिन्न कबन्धतः पतदसृग्धारां पिवन्ति मुदा**

**नागावद्ध शिरोमणि र्मनुविदा ध्येय सदा सा सुरैः ॥**



प्रस्थालीढपदा कबन्ध विगलद्रक्तं पिवन्ति मुदा  
सैषा या प्रलये समस्त भुवनं भोक्तुं क्षमा तामसी ।  
शक्तिः सापि परात्परा भगवती नाम्ना परा डाकिनी ॥

[ शाक्त प्रमोद—छिन्नमस्ता तंत्र से उद्धृत ]

6. दक्षिणामूर्ति काल-भैरव और उनकी महाशक्ति “भैरवी”—छिन्नमस्ता का “महाप्रलय” से विशेष सम्बन्ध है, जैसा कि उसके ध्यान से स्पष्ट हो जाता है। दूसरा है “नित्य प्रलय”। प्रतिक्षण पदार्थ नष्ट होते रहते हैं। नष्ट करना रुद्र का काम है। यही विनाशमुख होकर “यम” कहलाने लगते हैं। इसी याम्य अग्नि की सत्ता प्रधान रूप से दक्षिण दिशा में है। अतएव यमराज को दक्षिण दिशा का लोकपाल बतलाया जाता है। दक्षिण में अग्नि की सत्ता है। उत्तर में सोम का साम्राज्य है। “सोम” स्नेह-तत्व है, संकोच-धर्मा है। अग्नि तेज-तत्व है, विशकलन-धर्मा है। विशकलन क्रिया ही वस्तु का नाश करती है। यह धर्म दक्षिणाग्नि का है। अतएव इस रुद्र को “दक्षिणामूर्ति, काल भैरव” आदि नामों से व्यवहृत किया जाता है। इनकी शक्ति का नाम ही भैरवी किंवा त्रिपुर-भैरवी है।

“राजराजेश्वरी” नाम से प्रसिद्ध “भुवनेश्वरी” जिन तीनों भुवनों के पदार्थों की रक्षा करती है—यह त्रिपुर-भैरवी उनका नाश करती रहती है। त्रिभुवन के पदार्थों का क्षणिक विनाश इसी शक्ति पर निर्भर है—छिन्न मस्ता पराडाकिनी थी, यह अवरा डाकिनी है। भक्तों को उसका निम्नलिखित रूप से निरन्तर ध्यान करना चाहिए—

उद्यदभानु सहस्र कान्ति मरूणोक्षोमां शिरोमालिकां  
रक्तलिप्त पयोधरां जपपटीं विद्यामभीर्ति वरम् ।  
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद् वक्त्रार बिन्दुश्रियं  
देवीं कद्धहिमां शुररत्नमुकुटां वन्दे समन्दसस्मिताम् ॥

[ भैरवी तन्त्र ]

7. पुरुषशून्या अतएव “विधवा” नाम से प्रसिद्ध महाशक्ति “धूमावती”—संसार में दुःख के मूल कारण—रुद्र, यम, वरुण, निऋति—ये चार देवता हैं। विविध प्रकार के ज्वर, महामारी, उन्माद आदि आग्नेय (सन्ताप) सम्बन्धी रोग रुद्र की कृपा से होते हैं। मूर्च्छा, मृत्यु, अंग-भंग आदि रोग यम की कृपा का फल है। गठिया, शूल, गृध्रसी, लकवा आदि के अधिष्ठाता वरुण हैं। एवं सब रोगों में भयंकर शोक, कलह, दरिद्रता आदि की संचालिका निऋति हैं। भिखारी, क्षतविक्षता पृथ्वी, उसर भूमि, भग्न प्रासाद, फटे एवं जीर्ण वस्त्र, बुभुक्षा, प्यास, रुदन, वैधव्य, पुत्र सन्ताप, कलह आदि उनकी साक्षात् प्रतिमाएँ हैं। इन सब का मूल प्रधान रूप से दरिद्रता है।

अतएव “घोरा पाप्मा वै निऋतिः” [ शत० 9/2/1/1 ]

इत्यादि रूप से—“श्रुति” ने उसे दरिद्रा नाम से व्यवहृत किया है। इसी को शान्त करने के लिए निऋति इष्ट की जाती है। यह शक्ति यों तो सर्वत्र व्याप्त है।



परन्तु इसका खजाना “ज्येष्ठा नक्षत्र” है। वहीं से यह “आसुरी-कलह प्रिया” निकलती है। अतएव ज्येष्ठां नक्षत्र में उत्पन्न होने वाला प्राणी जीवन भर दरिद्रता दुख भोग करता है—यही हमारी साक्षात् “धूमावती” है। इसमें मनुष्य का पतन है, अतएव इसे “अवरोहिणी” भी कहा जाता है। यह “अलक्ष्मी” नाम से प्रसिद्ध है। डरावनी शकल, दाँतों का चौड़ा होना, रूक्षता आदि इसी की कृपा का फल है। इसी शक्ति का निरूपण करते हुए ऋषि कहते हैं—

विवर्णा चञ्चलता दुष्टा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।

विमुक्त कुन्तला वै सा विधवा विरलद्विजा ॥

काकध्वज रथारूढा विलम्बित पयो धरा ।

शूर्पहस्तातिरुक्षाक्षा धूत हस्ता वरानना ॥

प्रवृद्धघोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।

क्षुत्पिपसाहिता नित्यं भयदा, कलहास्पदा ॥

[ शाक्त प्रमोद, धूमावती तंत्र से उद्धृत ]

ध्यान से ही निदान स्पष्ट है। आप्य प्राण को असुर कहते हैं, आग्नेय एवं ऐन्द्र प्राण देवता नाम से प्रसिद्ध हैं। आषाढ़ शुक्ला एकादशी से वर्षा काल का प्रारम्भ माना जाता है। अतएव कार्तिक शुक्ला एकादशी वर्षा की परम अवधि मानी जाती है। इन चार महीनों में पृथ्वी पिण्ड और सौर प्राण आपोमय रहते हैं। अतएव चातुर्मास्य में दोनों ही प्राण देवता आसुर आप्य प्राण की प्रधानता से निर्बल हो जाते हैं। इनकी शक्ति दब जाती है। अतएव चातुर्मास्य देवताओं का सुषुति काल कहलाता है। इतने दिन तक आसुर प्राण का साम्राज्य रहता है, अतएव दिव्य प्राण की उपासना करने वाला भारतीय सनातन धर्म जगत कोई दिव्य कार्य (विवाह, यज्ञोपवीत, यात्रा आदि) नहीं करता। इसी चातुर्मास्य में उस निःकृति का साम्राज्य रहता है। कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी इनकी अन्तिम अवधि है। अतएव धर्माचार्यों ने इसे “नरक चतुर्दशी” के नाम से व्यवहृत किया है। इसी रात्रि को दरिद्रा रूपा इस अलक्ष्मी का गमन होता है, एवं दूसरे ही दिन रोहिणी रूपा कमला (लक्ष्मी) का आगमन होता है। कार्तिक कृष्ण अमावास्या को कन्या का सूर्य रहता है। कन्याराशि गत सूर्य नीच का कहलाता है। इस दिन सौरप्राण मलिन रहता है। एवं रात्रि में तो यह भी नहीं रहता। उधर अमावस्या के कारण चान्द्रज्योति का भी अभाव है। एवं चार मास की वृष्टि से प्रकृति की प्राणमयी अग्निज्योति भी निर्बल हो रही है। “त्रीणज्योतिर्षी सचते स षोडशी” के अनुसार इस अमावस्या को तीनों ही ज्योतियों का अभाव है। अतएव ज्योतिर्मय आत्मा इस दिन हीनवीर्य रहता है। इसी तम भाव के निराकरण के लिए, एवं साथ ही कमलागमन के उपलक्ष्य में ऋषियों ने इस दिन वैद्या प्रकाश (दीपावली) और अग्नि क्रोड़ा (आतिशबाजी) करने का आदेश दिया है। कहना यही है कि निःकृति रूपा “धूमावति” प्रधान रूप से चातुर्मास्य में रहती है। लक्ष्मीकामुक मनुष्यों को सदा इसकी स्तुति करते रहना चाहिए।



8. एक वक्त्र महारुद्र और उसकी महाशक्ति बगला मुखी (वल्गामुखी) — प्राणियों के शरीर से एक अथवा नाम का प्राण सूत्र निकला करता है। प्राण रूप होने से हम इसे स्थूल दृष्टि से देखने में असमर्थ रहते हैं। यह एक प्रकार की वायरलेस टेलिग्राफी है। 200 कोस दूर रहने वाले आत्मीय के दुःख से यहाँ हमारा चित्त जिस परोक्ष शक्ति से व्याकुल हो जाता है, उसी परोक्ष सूत्र का नाम “अथर्वा” है। इस शक्ति सूत्र के विज्ञान से सहस्रों कोस दूर स्थित व्यक्ति का आकर्षण किया जा सकता है। परमेश्वर की विचित्र लीला है। जैसे प्राधुनिक (पाहुना) के आगमन का ज्ञान हमें नहीं होता, किन्तु काक (कौआ) को हो जाता है, उसी प्रकार जिस अथर्वा सूत्र को हम नहीं पहचानते उसे श्वान (कुत्ता) पहचान लेता है। उसी शक्ति ज्ञान के प्रभाव से कुत्ता जमीन सूँघता हुआ भागे हुए चोर का पता लगा लेता है। जिस मार्ग से चोर जाता है, उस मार्ग में उसका अथर्वा प्राण वासना रूप से मिट्टी में संक्रान्त हो जाता है। वस्त्र, नाखून, केश, लोम आदि में वह प्राण वासना रूप से प्रतिष्ठित रहता है। इन वस्तुओं के आधार पर उस व्यक्ति पर मनमाना प्रयोग किया जा सकता है। भौम-स्वर्ग के अधिष्ठाता, आज दिन साईबीरिया नाम से प्रसिद्ध सौराष्ट्र नाम के राष्ट्रान्तर्गत अमरावती नाम के शहर में रहने वाले, पुराणों में “हरि वाहन” एवं वेद में “हरिवान” नाम से प्रसिद्ध मनुष्य इन्द्र ने “सरमा” नाम की कुत्ती की सहायता से वृहस्पति की गायों को चुरा ले जाने वाले पणि नाम के असुरों का पता लगाया था, [देखो ऋग्वेद] अपि च पुरा युग में भौम मनुष्य देवता इसी “अथर्वा-सूत्र” द्वारा असुरों पर कृत्या प्रयोग [मारण, मोहन, उच्चाटन आदि] किया करते थे। अथर्ववेद के धोराङ्गिरा, अथर्वगिरा नाम के दो भेद हैं। इनमें धोराङ्गिरा में औषधि वनस्पति विज्ञान है। एवं दूसरे में—

**श्रुतिरथर्वाङ्गिरसीः कुर्यादिस्य विचारयन्।**

**वाक् शस्त्रं वै ब्राह्मणस्य तेन हन्यादरीन् द्विजः ॥**

[ मनु० 11/33 ]

—के अनुसार “अभिचार प्रयोग” है। इसका उसी पूर्वोक्त “अथर्वासूत्र” से सम्बन्ध है। बस अथर्वा सूत्र-रूपा इसी महाशक्ति का नाम “वल्गामुखी” है। यह इसका वैदिक नाम है। जैसा की शतपथ श्रुति कहते हैं—

**यदा वै कृत्या मुत्तवन्ति अथ सालसा मोधा भवित।**

**तथो एवैष एतद्यद्यस्मा अत्र कश्चिद् द्विषण भ्रातृष्यः कृत्या—**

**यदगां निस्वनति तानेवै तदुस्करति ॥**

[ शत० 3/4/5/3 ]

निरुक्त क्रमानुसार संस्कृत भाषा में जैसे “हिंस” शब्द वर्ण व्यत्यय के कारण “सिंह” बन जाता है, लौकिक भाषा में जैसे—“मतलब” मतबल बन जाता है, इसी प्रकार निगमोक्त “वल्गा” शब्द आराम में “बगला” रूप में परिणत हो गया है। निगम-शास्त्र की वल्गा ही “बगलामुखी” है। इस कृत्याशक्ति की आराधना



करने वाला मनुष्य अपने शत्रु को मनमाना कष्ट पहुँचा सकता है। जैसा कि उसके ध्यान से स्पष्ट हो जाता है—

जिह्वाग्र मादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।

गदभिधातेन च दक्षिणेन पीताम्बराद्यां द्विभुजां नमामि।

[ शाक्त प्रमोद—बगलामुखी तंत्र ]

9. मतङ्ग शिव और उसकी महाशक्ति “मातङ्गी”—

श्यामां शुभ्रांशुभालां त्रिनयन कमलां रत्नसिंहासनस्यां—

भक्ताभिष्ट प्रदात्रीं सुरनिकरा सेद्व्य कञ्चाङ्गि चुगमाम्।

नीलां भोजां शुकार्न्ति निशिचर निकरारण्य दावग्निरूपां—

पाशं खड्गं चतुर्भिर्वर कमलकरैः खेटकाञ्चाङ्कुशच ॥

मातङ्गी भावहन्ती मभिगत पालदां मोदिनीं चिन्तयामि ॥

इत्यादि ध्यान से मातङ्गी का स्वरूप स्पष्ट है।

10. सदाशिव पुरुष और उनकी महाशक्ति “कमला”—धूमावति और कमला में प्रतिस्पर्धा है। वह ज्येष्ठ थी, वह कनिष्ठा है। वह अवरोहिणी थी, यह रोहिणी है। वह आसुरी थी, यह दिव्या है। वह दरिद्रा थी, यह लक्ष्मी है। रोहिणी नक्षत्र के ठीक षडभान्तर पर [180 अंश पर] ज्येष्ठा है। जिसका रोहिणी नक्षत्र में जन्म होता है, वह समृद्ध होता है। इसी का निरूपण करते हुए ऋषि कहते हैं—

कानत्या काञ्चन सन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्रतु भिर्गजै—

हस्तोत्क्षिप्त हिरण्यमया मृतघटैरासिच्च मानां श्रियम्।

विभ्राणां वरमब्जयुग्म मभयं हस्तैः किरीटेज्ज्वलां—

क्षौमावद्ध नितम्बबिम्ब वलितां वन्देऽपिन्दस्थिताम् ॥

[ शाक्त प्रमोद—कमला तंत्र ]

यह है दस महाविद्याओं का संक्षिप्त निदर्शन। प्रकारान्त से इसी सृष्टि विद्या को ऋषियों ने तीन भागों में विभक्त किया है। वही तीन शक्तियाँ महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती नाम से प्रसिद्ध हैं। तमोगुण प्रधाना महाकाली कृष्णवर्णा है और यही प्रलय काल हैं। रजोगुण प्रधाना महालक्ष्मी रक्तवर्णा हैं और यही सृष्टि काल हैं। सत्वगुण प्रधाना महासरस्वती श्वेतवर्णा हैं जो मुक्ति काल हैं। उस एक ही अज पुरुष की “अजा” नाम से प्रसिद्ध महाशक्ति तीन रूपों में परिणत होकर सृष्टि, प्रलय, मुक्ति की अधिष्ठात्री बन रही हैं। आगमोक्त इस त्रिरूपा शक्ति का मूल मंत्र (निगम मंत्र) निम्नलिखित है—

अजाभेकां लोहित शुक्तवर्णा वह्नीं प्रजाः सृजमानां सरूपः।

अजोद्ये को जुषमाणोऽनुशेते जहात्येनां भुक्तभोगा मजोऽन्यः ॥

[ श्वेता० ४/५ ]

अवान्तर क्षुद्र विद्याओं की अपेक्षा पूर्वोक्त विद्याएं यद्यपि अवश्य ही महाविद्याएँ



हैं, परन्तु इनमें भी परस्पर के तारम्य से भेद हो जाता है। कोई महाविद्या है। कोई सिद्ध विद्या है। कोई श्री विद्या है। कोई विद्या ही है। अहः पुरुष है। रात्रि स्त्री है, शक्ति है। अतएव ये विद्याएँ महारात्रि, कालरात्रि, मोहरात्रि, दारुणरात्रि आदि रात्रि नामों से प्रसिद्ध हैं, जैसा कि निम्नलिखित तालिकाओं से स्पष्ट हो जाता है—

| संख्या | शक्ति       | नामान्तर        | रात्रि       | विद्या       | शिव                |
|--------|-------------|-----------------|--------------|--------------|--------------------|
| 1.     | महाकाली     | +               | महारात्रि    | महाविद्या    | महाकाल             |
| 2.     | तारा        | +               | क्रोध रात्रि | श्री विद्या  | अक्षोम्य           |
| 3.     | षोडशी       | त्रिपुर सुन्दरी | दिव्य रात्रि | सिद्ध विद्या | पञ्चवक्त्रशिव      |
| 4.     | भुवनेश्वरी  | राज राजेश्वरी   | सिद्ध रात्रि | सिद्ध विद्या | त्र्यम्बक          |
| 5.     | छिन्न मस्ता | +               | वीर रात्रि   | विद्या       | कबन्ध              |
| 6.     | भैरवी       | त्रिपुरा भैरवी  | काल रात्रि   | सिद्ध विद्या | काल भैरव           |
| 7.     | धूमावती     | अलक्ष्मी        | दारुण रात्रि | विद्या       | दक्षिण मूर्ति      |
| 8.     | बल्लामुखी   | बगला मुखी       | वीर रात्रि   | सिद्ध विद्या | एक वक्त्र महारुद्र |
| 9.     | मातङ्गी     | +               | मोह रात्रि   | विद्या       | मतङ्ग              |
| 10.    | कमला        | लक्ष्मी         | महारात्रि    | विद्या       | सदाशिव विष्णु      |

इन दस महाविद्याओं की उपासना “काली कुल” और “श्री कुल” इन दो कुलों में विभक्त है।

दस महाविद्याओं की संख्या—

यहीं तक सीमित न रहकर आगे भी बढ़ी है। “मालिनी विजयवार्तिक ग्रन्थ” में इनकी संख्या 12 और तंत्र सार में 18 और कई ग्रन्थों में तो इससे भी अधिक कही गयी है तथापि दस महाविद्या की प्रसिद्धि ही प्रमुख है। महिषमर्दिनी, त्वरिता, दुर्गा, प्रत्यंगिरा, स्वप्नावती और मधुमती देवियों के नाम और कुछ अन्य नामों के संयोजन से यह संख्या 24 तक भी पहुँची है। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि विष्णु के प्रमुख दस अवतार और उनके बाद 24 अवतारों की जिस प्रकार प्रसिद्धि हुई है, उसी प्रकार महाविद्या के अवतारों की भी प्रसिद्धि हुई है।

### दस महाविद्याओं के “कुल”

उपासकों ! इन महाविद्याओं की “साधना” (सिद्धि) “काली कुल” और “श्री कुल”—इन दो कुलों में विभक्त है। काली कुल में—

1. काली, 2. तारा, 3. छिन्नमस्ता, 4. भुवनेश्वरी, 5. महिषमर्दिनी, 6. त्रिपुरा (षोडशी), 7. त्वरिता, 8. दुर्गा तथा 9. प्रत्यंगिरा का समावेश है। जबकि—श्री कुल में—1. सुन्दरी, 2. भैरवी, 3. बाला, 4. बगला, 5. कमला,



6. धूमावती, 7. मातङ्गि, 8. स्वप्नावती और 9. मधुमती को समाविष्ट किया गया है। इन दोनों कुलों में 9-9 अर्थात् कुल मिलाकर 18 देवियों की गणना है।

कुछ आचार्यों ने दश महाविद्याओं को ही तीन रूपों में व्यक्त किया है। जिनमें—1. सौम्य, 2. उग्र, 3. सौम्योग्र, इस प्रकार तीन कोटियां बतलाई हैं।

सौम्य कोटि में—त्रिपुरा सुन्दरी, भुवनेश्वरी, मातङ्गी और कमला [महालक्ष्मी] आती हैं।

उग्र कोटि में—काली, छिन्नमस्ता, धूमावती और बगलामुखी मानी जाती है।

सौम्योग्र कोटि में—तारा और भैरवी महाविद्याएँ हैं।

आद्या शक्ति भगवती परमेश्वरी “विश्वातिरिक्त” और “विश्वव्यापिनी-विश्वरूपिणी” शक्ति के रूप में वर्णित हैं। जो एक, अद्वितीय होते हुए भी बहुविद्या मूर्ति हैं। दस महाविद्याओं में एक अखण्ड विश्व शक्ति ही दशविद्या होकर प्रकाशमान हैं और इन्हीं शक्तियों से पराशक्ति समस्त जगत का नियंत्रण और परिचालन करती हैं।



## ( द्वितीय भाग )



# सिद्धि साधना प्रारम्भ से पूर्व अति आवश्यक ज्ञान खण्ड

### मानव को सिद्धि करने की आवश्यकता क्यों

सिद्धि प्रारम्भ करने वाले साधकों ! मानव अपनी व्यवस्था के अतिरिक्त धन प्राप्त करने की ओर भटक रहा है, परन्तु सम्पूर्ण सुख साधन प्राप्त होने के पश्चात् भी जब उसे शान्ति नहीं मिलती तो वह इसे देवि-देवताओं से प्राप्त करना चाहता है, परन्तु उन्हें प्राप्त करना तो आसान नहीं, उन्हें प्रसन्न करना भी आसान नहीं।

फिर उन्हें प्रसन्न करने हेतु मार्ग ढूँढता है, तब उसे उनकी सिद्धि साधना, पूजा, अर्चना की आवश्यकता पड़ती है और वह सिद्धि रहस्य इस छोटी सी अनुपम पुस्तक में वेदोक्त ज्ञान के अनुसार वर्णित कर रहा हूँ। इसे जानकर, कार्य रूप देकर, हृदय से मनन कर आप संसार के उच्चतम शिखर पर पहुँच सकते हैं।

साधकों ! ईश्वर और जीव के मध्य में जगत के आ जाने से जीवात्मा की बुद्धि से परमात्मा का सम्पर्क न्यून हो गया है। इस परिवर्तन के कारण जीवात्मा की ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति दोनों संकुचित हो गई हैं तथा जीवात्मा ईश्वर से दूर चला गया है।

यह जीवात्मा की अल्पज्ञता है। आवरण रूप जगत की विविध वस्तुएँ जीवात्मा की इन्द्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती हैं, जिसके कारण जीवात्मा की बुद्धि विषय-भोग की अनुगामिनी हो जाती है और जीवात्मा क्लेशों का पात्र बन जाता है।

“सिद्धि” से ज्ञान का विकास होता है। जिस क्रिया से जीवात्मा तथा परमात्मा के मध्य में स्थित जगत तिरोहित हो जाता है तथा ज्ञान शक्ति एवं क्रिया शक्ति विकसित होती है, उसी को सिद्धि साधना कहते हैं।

जीवात्मा को उचित है कि वे सम्पूर्ण जगत के कारण, रक्षक, अन्तर्यामी आदिशक्ति तथा उनके अंशी देवियों के प्रति प्रेम, विश्वास, एवं श्रद्धा की, बुद्धि



रक्षा का सम्पूर्ण भार उन भगवती पर डाल दे, जिसके कारण वह परमात्मा रूपी परमेश्वरी का कृपा पात्र बन जाता है।

## सिद्धि काल में शुद्ध भावनाओं का महत्व

सिद्धि करने वाले साधकों ! अपने इष्टदेव या इष्टदेवी के समक्ष [तस्वीर या प्रतिमा के समक्ष] विधिवत् पूजन सामग्री स्थूल रूप से अर्पित करते हुए आराधना की जाये अथवा मंत्रोच्चार करते हुए साधना महत्व पूजन सामग्री की नहीं बल्कि आपकी—“भावना” की होती है।

देवी-देवताओं को किसी वस्तु की कमी नहीं है जो हम उन्हें दे सकते हैं। सिद्धि साधना में जो वस्तुएँ देवताओं को अर्पित की जाती हैं वे भी हमारी भावनाओं का ही दिग्दर्शक होती हैं, जबकि सिद्धि काल में हम केवल भावों का ही पुष्प चढ़ाते हैं।

भक्तों की दुखहरणी माहेश्वरी महाकाली की सिद्धि की जाय अथवा दस महाविद्याओं के किसी रूप का जप किया जाये या मूर्ति पूजन, अपने आराध्य की सेवा पूजा और अर्चना-सिद्धि का यह क्षेत्र है, जहाँ हमें अपनी भावना के अनुरूप ही फलों की प्राप्ति होती है। भक्तवत्सला के सभी रूप अत्यन्त दयालू हैं, परन्तु हम उन्हें विद्या के द्वारा प्राप्त की गई तर्क शक्ति, बुद्धि, धन और बल से प्राप्त नहीं कर सकते। इनके लिए तो हमें अपने हृदय की सम्पूर्ण गहराई के साथ समर्पित भाव से पुकारना, याद करना और नमन करना होगा।

जो व्यक्ति निष्कपट भाव से भगवती का स्मरण करते हुए उनके श्री चरणों में मन लगाकर संसार के प्रति अनाशक्त रहते हुए कर्म करते हैं, उनके तो सभी कार्य परमेश्वरि के प्रति समर्पित होने के कारण स्वयं ही साधना बन जाती है।

परन्तु भक्ति के प्रथम चरण में ऐसा सम्भव नहीं।

साधकों ! सिद्धि का क्षेत्र तो पूरी तरह से “भावना” पर ही आधारित है, जबकि साधकों को सिद्धि में सफलता भी उसकी भावनाओं के अनुरूप ही मिलती है। एक सीधे-सादे उदाहरण द्वारा यह समझने में हमें आसानी रहेगी—

आप्रेषन करने वाला एक शल्य चिकित्सक (डॉक्टर) भी शरीर पर छूरी चलाता है और एक क्रूर हत्यारा भी। परन्तु डॉक्टर को धन, यश, मान सम्मान और पुण्य मिलता है तो हत्यारों को “प्राणदण्ड”। कार्य तो दोनों ने एक ही किया, दोनों के कार्य का माध्यम भी छूरा था और समान रूप से ही व्यक्ति रक्तरंजित भी हुआ।

फिर यह अन्तर क्यों ? एक को पुरस्कार दूसरे को दण्ड, एक को मान-सम्मान दूसरे को अपमान, एक का गुणगान दूसरे से घृणा क्यों ?

क्योंकि दोनों की “भावना” में अन्तर था। शल्य चिकित्सक की भावना रोग का निदान कर, रोगी को रोग मुक्त कर सुखी और संतुष्ट करना था तो हत्यारे की



भावना व्यक्ति को असमय काल के गाल में पहुँचाना। यही भावना का फर्क था उन्हें मिलने वाले प्रतिफलों का अन्तर।

ठीक यही अवस्था जगदम्बा की सिद्धि साधना में है। यदि हमारे भाव दूषित होंगे तो भक्त वतस्ला भगवती हम पर अनुकम्पा क्या करेंगी, अधिक सम्भावना यही है कि हमारी सिद्धि का हमें कोई फल ही न मिले। यही कारण है कि हृदय की निर्मलता साधना की प्रथम शर्त है और उसका सबसे आसान उपाय है लोभ और मोह जैसी बुराईयों को छोड़ते हुए अधिक से अधिक धार्मिक साहित्य का सतत् अध्ययन मनन।

हम सांसारिक जीव हैं जो अनेक वस्तुओं के आकांक्षी हैं और प्रायः किसी कामना के वशीभूत होकर ही हम करते हैं—भगवती की सिद्धि साधना। जो व्यक्ति लोभ, मोह और सांसारिक वस्तुओं की कामनाओं पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, उनका तो प्रत्येक कर्म ही साधना है। परन्तु हम तो उस मंजिल के राही हैं—जहाँ से सिद्धि उपासना आरम्भ होती है, अतः हम कामना रहित हो गए हों, ऐसा तो होही नहीं सकता, परन्तु इतना तो कर ही सकते हैं कि दयानिधि भगवती से कोई सांसारिक वस्तु न मांगकर उनके चरणों में भक्ति की भावना की वृद्धि का ही वरदान बार-बार मांगते रहें।

कोई भी सांसारिक कामना चाहे वह साहित्य संगीत अथवा कला में विशेष योग्यता की प्राप्ति की हो अथवा मान-सम्मान और पुरस्कारों की प्राप्ति की, धन दौलत की आकांक्षा हो या पदोन्नत की कामना मन में रखकर सिद्धि साधना या उपासना करना वास्तव में भक्ति नहीं—भगवती से की जाने वाली सौदेबाजी है।

मातेश्वरी से मांगिये, अवश्य मांगिये, उनसे निरन्तर सद्भावों ज्ञान और भक्ति भावना का वरदान। उनसे कहिए हे माँ मैं कभी आपको भुलूँ नहीं, आपकी भक्ति मिले और मिले आपका प्रेम। यह मांगना आपका अधिकार ही नहीं कर्तव्य भी है। यही मांगते रहने से ही सांसारिक समस्त सुखों की प्राप्ति, समस्त बाधाओं का नाशस्वतः हो जाता है, क्योंकि परमेश्वर स्वयं जानती है कि आपको कौन-कौन सी वस्तुओं की आवश्यकता है, जो वे स्वतः पूर्ण कर देती हैं।

### सिद्धि काल में अटूट निश्चय और श्रद्धा का महत्त्व तथा साधना में सहायक

भगवती की सिद्धि करने वाले साधकों ! सिद्धि की शक्ति ही साधक को सर्वस्व विजय प्रदान कराती है, किन्तु बहुत कम लोग यह मानते हैं कि साधना की नींव केवल श्रद्धा है और जहाँ पर श्रद्धा है वहीं पर सिद्धि है।

हर प्राणी के लिए आवश्यक है कि जिस साधना से सिद्धि साधना आरम्भ करने जा रहा है उसपर पूर्ण विश्वास रखे उसपर पूरी आस्था होनी चाहिए जो सिद्धि का “मेरूदण्ड” है।



जिस साधना में विश्वास नहीं, श्रद्धा नहीं, उसे मात्र परिक्षार्थ करना अपना समय नष्ट करना है। इसका कारण मात्र यही है कि ऐसे कार्यों से लाभ की आशा करना मात्र मूर्खता है। साधना मार्ग में प्रथम सोपान प्रथम पग की साधना में सम्मिलित नहीं तो फिर कैसी सफलता, कैसी सिद्धि, कैसी विजय ? पराजय असफलता व असिद्धि मात्र की आवश्यकभावी हैं।

वास्तव में ही आप यदि उपासना या सिद्धि साधना में सफल होना चाहते हैं तो उसके लिए बहुत बड़ी लगन से काम लेना होगा। लगन, तपस्या, साधना और उपासना का दूसरा नाम ही सफलता और सिद्धि है।

यदि आप सिद्धि साधना में सफल होना चाहते हैं, यदि आप भगवती के कृपापात्र बनना चाहते हैं तो तप करना होगा, त्याग करना होगा, दृढ़ संकल्प करना होगा, तपस्या करनी होगी। इस कार्य के लिए आपको बार-बार दृढ़ निश्चय को दुहराना होगा, उनको श्रद्धा भाव से हृदय में बिठाना होगा, तभी आप भक्तवत्सला भगवती की कृपा प्राप्त कर सकेंगे।

साधकों ! सिद्धि के प्रारम्भिक चरण ज्ञान और इसमें सहायक गुरु के अतिरिक्त कुछ यम-नियम आदि भी इस मार्ग में सहायक होते हैं।

संक्षिप्त में-शरीर की भीतरी-बाहरी स्वच्छता और सात्विक भोजन, वाणी द्वारा मधुर हितकारी और सत्य वचन बोलना, मन और इन्द्रियों द्वारा सांसारिक सुख भोग में संयम साधक का आत्मिक आनन्द की प्राप्ति में सर्वदा सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त आत्मिक स्तर पर सहयोगी तत्व है- विश्वास, संकल्प, लगन और अभ्यास। अर्थात् सर्व प्रथम सृष्टि की संचालक शक्ति और उसके स्वरूप [अपने इष्ट देव के, जिनकी आप सिद्धि करने जा रहे हैं] पर दृढ़ विश्वास, फिर साधना मार्ग पर चलने हेतु दृढ़ निश्चय जरूरी है।

दृढ़ निश्चय या संकल्प से प्रेरित होती है “लगन” अर्थात् अधिक प्रयास, और सतत अभ्यास से प्राप्त होती है सिद्धि जो मनुष्य और समाज के चरम आनंद से ओत-प्रोत हो जाने की अवस्था है।

वैदिक साहित्य और ईस्लामी, यहूदी, पारसी, ईशाई आदि सम्प्रदायों में प्रतिपादित मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण आदि सभी का लक्ष्य एक है। वही चरम शास्वत, निर्विकल्प आत्मिक आनंद जो सृष्टि के आरम्भ से मनुष्य की आदम खोज है, और जिसका सहज मार्ग है-सिद्धि साधना।

### मन की चंचलता एवं सिद्धि का प्रदर्शन सफलता में बाधक

सिद्धि मार्ग पर अग्रसर होने वाले साधकों ! खेल-तमाशों सांसारिक कर्मों में मानव का मन तुरंत लग जाता है, परन्तु सिद्धि साधना, उपासना, भजन, पूजन, कीर्तन आदि में प्रारम्भ में कुछ दिनों तक मन नहीं जमता, चित्त चंचल बना रहता है। कई बार तो उकताहट और घबराहट जैसी होती है, परन्तु यह स्थिति चन्द दिन



अमित पाकेट बुक्स

ही रहती है। शुरू-शुरू में तो बालक को स्कूल में तथा नववधू को ससुराल में घबराहट होती है, परन्तु कुछ समय बाद ही बालक का स्कूल में और वधू का पतिगृह में न केवल मन लगने लगता है, बल्कि उन्हें वहां पूर्ण आनंद भी आने लगता है।

ठीक यही स्थिति आराधना, उपासना और सिद्धि साधना की है। प्रारम्भ में कुछ दिनों तक ही साधना काल में मन नहीं लगता, परन्तु कुछ समय बाद ही साधना या उपासना में भी सच्चा आनंद आने लगता है।

यदि प्रारम्भ में मन नहीं लगता तो भक्त और भगवान के रक्षक आदिशक्ति परमेश्वरी की आकृति के समक्ष सच्चे हृदय से रोईये, गिड़गिड़ाईये और प्रार्थना कीजिए कि—“हे माँ ! मैं तुम्हारी मूर्ख सन्तान हूँ, निपट अनाड़ी हूँ—परन्तु मैं क्या करूँ ? हे दयालु मैया ! हम पर कृपा करें, अपने चरणों में मेरा मन लगावें, हमें अपनी भक्ति दें।”

दया की सागर माहेश्वरी को साधक की पुकार को सुननी ही पड़ेगी, क्योंकि हमारे ही नहीं वे सम्पूर्ण जीवों की माता हैं। हम उनसे विमुख हो सकते हैं परन्तु वे हमसे विमुख नहीं हो सकतीं।

साधकों ! किसी भी महाशक्ति की सिद्धि प्राप्ति के लिए आप एकान्त स्थान में, शान्त मन से साधना उपसाना करें। सिद्धि साधना, आराधना, उपासना, पूजा, जप—तप अथवा भक्ति का कोई भी मार्ग अपनाया जाये यदि उसका प्रदर्शन हो जाता है तो पुण्य फलों में न केवल न्यूनता आ जाती है बल्कि बड़ी सीमा तक उसका लोप भी हो जाता है।

सिद्धि साधना या उपासना न तो बिक्री की वस्तु है और न ही प्रदर्शन की। उपासना का थोथा प्रदर्शन आप को समाज में सम्मान और आत्म प्रदर्शन का थोथा सुख और स्वयं को विशिष्ट समझने का झूठा गर्व तो दिला सकता है परन्तु मातेश्वरी का सच्चा प्यार और कृपाएँ नहीं। माँ हमारी हैं और हम उनके पुत्र, फिर माता-पुत्र के मध्य में अन्यो का क्या काम ? इसलिए जहाँ तक हो सके एकान्त में ही सिद्धि साधना करें।

“साधना का प्रदर्शन” किस प्रकार भक्तों को कष्ट में डाल देता है, इसके हजारों जीवन्त उदाहरण हमारे धार्मिक ग्रन्थों में मिलते हैं—

“भक्तराज प्रह्लाद” और “भक्त ध्रुव” को बचपन से ही वर्षों तक कठोर तपस्याएँ करनी पड़ी, तब जाकर उन्हें कहीं भगवान के दर्शन हुए, क्योंकि उनकी भक्ति का सम्पूर्ण समाज को ही पता लग गया था। इसके विपरीत महाराज रावण का भाई विभीषण प्रातः काल उठते समय ही चन्द्र क्षणों के लिए ईश्वर का सुमिरन करता था, परन्तु रावण तो क्या उनकी पत्नी तक से छुपी हुई थी—“उसकी भक्ति”। यह विभीषण की छिपी हुई भक्ति का ही कमाल था कि ध्रुव और प्रह्लाद की अपेक्षा सौवें अंश से भी कम समय तक आराधना करने पर ही न केवल उसे भगवान राम का सानिध्य प्राप्त हुआ बल्कि इस लोक में लंका का राज्य और परलोक में विष्णु के लोक में वास भी मिला।



इसलिए भगवती की सिद्धि पाने के लिए, कामनाओं की प्राप्ति के लिए, धन-जन, सुख-सम्पत्ति, प्रसन्नता, शान्ति एवं मोक्ष की प्राप्ति के लिए सिद्धि-साधना का प्रदर्शन मत कीजिए, तो आप सिद्धि में अवश्य सफलता प्राप्त कर लेंगे।

### साधक की योग्यता

सिद्धि करने वाले साधकों के लिए लक्षण निर्देश करते हुए शास्त्रों में कहा है कि उपासक को शीलवान, विनम्र, निश्छल, श्रद्धालु, धैर्यवान, शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ, कार्य सक्षम, सच्चरित्र, इन्द्रिय सयंमी और कुल प्रतिष्ठा का पोषक होना चाहिए।

यह तो स्वयं सिद्ध है कि यदि कोई साधक गुणों से रहित है तो वह श्रद्धा विधान पूर्वक, स्थिर चित्त होकर न तो साधना कर सकता है और न ही उसे कोई लाभ ही मिल सकता। साधना सिद्धि में सफलता का पात्र वही होता है, जो विधि-विधान और पूर्ण मनोयोग के साथ साधना पूरी कर सके।

### सिद्धि करने हेतु स्थान का चुनाव

साधकों! सिद्धि-साधना प्रारम्भ करने से पूर्व “साधना का स्थान” कैसा हो, उसे भली-भांति समझा लेना चाहिए। जहाँ भी पायें, बैठकर साधना करने लगे, ऐसा ठीक नहीं, क्योंकि साधना करते समय बाह्य रूप से कोई कर्म नहीं कर रहा होता, वह निश्चल बैठा रहता है, इसलिए कि साधना पूर्ण रूपेण “मानसिक क्रिया” है। कोई भी मानसिक क्रिया-ऐसा कार्य जिससे आप हृदय की सम्पूर्ण गहराई से जुड़कर अपने तन-मन-सुध तक भूल जाएं-भीड़-भाड़ में हो ही नहीं सकती चाहे वह गम्भीर विषयों का अध्ययन हो या आध्यात्मिक चिन्तन मनन। अतः साधना विशिष्ट स्थान पर ही किया जाये, तभी लाभप्रद होता है।

प्राचीन शास्त्रों में साधना ग्रन्थ का निर्देश है कि काशी, प्रयाग जैसे तीर्थों, गंगातट पर, या कोई वाटिका, पार्क एवं खेत तथा खलिहानों में बताया गया है। अंततः इसके लिए अपने निवास का शुद्ध साफ कमरा ही माना गया है, जहाँ मानव एकान्त में बैठकर साधना कर सकता है।

### सिद्धि की साधना में आसनों का प्रयोग

साधकों ! साधना काल में निम्न प्रकार के आसनों का प्रयोग होता है-

1. कुशा आसन, 2. मृगचर्म, 3. व्याघ्र चर्म, 4. ऊनी वस्त्र, 5. रेशमी वस्त्र और 6. लकड़ी का आसन।



## कुशा आसन पर साधना करने पर लाभ

साधकों ! साधारण कोई भी सिद्धि साधना हो, यदि कुशा आसन पर बैठकर साधना एवं पूजा-पाठ किया जाये तो सफलता अवश्य मिलती है और इनसे निम्नलिखित लाभ होता है-

- (क) साधक का अन्तःकरण पवित्र होता है।
- (ख) साधक को सिद्धि प्राप्ति में सुविधा हो जाती है।
- (ग) साधक की दृढ़ इच्छा शक्ति और स्वास्थ्य में वृद्धि होती रहती है।
- (घ) दूषित प्रभावों अर्थात् भूत बाधाओं का शमन होता है।
- (ङ) साधक की साधनात्मक प्रवृत्ति एवं उपलब्धि प्रबल होती है।

## मृग चर्म आसन पर साधना का लाभ

मोक्ष प्राप्ति अथवा धन के उद्देश्य से की जाने वाली उपासना या सिद्धि साधना में “कृष्ण मृग चर्म” विशेष रूप से अनुकूल प्रभाव देता है।

## व्याघ्र चर्म आसन पर साधना का लाभ

यह रजोगुणी आसन है। राजसिक वृत्ति वाले साधकों द्वारा राजसी उद्देश्य की पूर्ति की जाने वाली साधना में इसका प्रयोग विशेष प्रभावशाली होता है। सिंह के स्वभाव वाले लगभग सभी गुण इनमें आंशिक रूप से विद्यमान रहते हैं।

परिक्षणों से सिद्ध हुआ है कि व्याघ्र चर्म के पास कोई विषैले जीव-जन्तु नहीं जाते। इसपर बैठे हुए साधक को सांप-बिछु का भय नहीं रहता, क्योंकि ये जन्तु व्याघ्र चर्म पर चढ़कर उनपर आसीन साधक को छूने का साहस नहीं कर पाते। निर्विघ्न साधना के लिए व्याघ्र चर्म विशेष उपयोगी है।

वैसे इसका भी वैज्ञानिक महत्व है और पवित्रता में भी यह किसी से कम नहीं। आर्य संस्कृति के सबसे बड़े देवता और सृष्टि के सबसे महान योगी तथा मन्त्र साधक भगवान शिव को यह इतना प्रिय है कि वे उसे ओढ़ने-बिछाने और पहनने तक के काम में लाते हैं।

## कम्बल के आसन की उपयोगितां

“कर्म सिद्धि” की लालशा से की जाने वाली उपासना में कम्बल का आसन लाभदाय होता है।



## रेशमी आसन की उपयोगिता

रेशमी आसन भी साधना काल में प्रयुक्त होते हैं। इस पर बैठकर जप व सिद्धि साधना करने वाले साधक की शारीरिक विद्युत शक्ति पृथ्वी में प्रवेश न करके सुरक्षित रहती हैं। वस्तुतः ये आसन कुचालक (असंक्रामक नान कण्डक्टर) पदार्थों की कोटि में आते हैं।

आध्यात्मिक दृष्टि से ऊनी आसन को विशेष महत्वपूर्ण माना गया है। कामना की पूर्ति हेतु लाल कम्बल का प्रयोग विशेष प्रभावी होता है। अनेक रंगों वाला कम्बल और भी श्रेष्ठ माना जाता है।

## सिद्धि काल में वर्जित आसन

(क) बांस के बनाए आसन पर बैठकर जप करने से दरिद्रता आती है।

(ख) पथर का आसन साधक को व्याधिग्रस्त करता है।

(ग) धरती पर बैठकर [बिना आसन बिछाए] अर्थात् खुली भूमि पर उपासना करने वाला साधक दुःख से आक्रान्त होता है तथा उनकी साधना का फल आधी धरती प्राप्त कर लेती है।

(घ) छेद वाली लकड़ी [घुन वाले काष्ठ आसन] का प्रयोग दुर्भाग्यकारी होता है।

(ङ) तिनकों के बने आसन का प्रभाव साधक को धन हानि और यश क्षीण का संताप देता है।

(च) पल्लवों [पत्तों] से निर्मित आसन मानसिक विभ्रम उत्पन्न करता है। और सामान्य वस्त्र कपड़ा तथा कुर्सी का प्रयोग भी साधना में निन्दित कहा गया है।

## सिद्धि काल में माला की उपयोगिता और फेरने का नियम

साधकों ! आचार्यों ने सिद्धि काल में मंत्र जप करने के लिए माला विशेष का नियम बनाया है। व्यवहारिक रूप में हम रुद्राक्ष, तुलसी, कमलगट्टा, बैजयन्ती, शंख, चन्दन, राजमणि, पुत्रजीवा, हल्दी और स्फटिक आदि की मालाएँ जप कार्य में उपयोग करते हैं।

मंत्र जप के लिए माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है। प्रायः माला 108 दानों की होती है। अतः दस माला फेरने का अर्थ हुआ कि साधक ने अपने मंत्र का 1080 बार जप किया। जपते समय माला का एक फेरा पूर्ण हो जाने पर “सुमेरू” तक पहुँच कर वहाँ से फिर विपरीत दिशा में जप प्रारम्भ कर देना चाहिए।



“सुमेरू” को लांघकर आगे बढ़ना वर्जित है।

जप करते समय निर्धारित मणियों द्वारा बनी माला ही होनी चाहिए। काम चलाऊ या सजावट के रूप में रेडियम, प्लास्टिक या कांच की माला का प्रयोग निसिद्ध है। जप में माला का उपयोग बांये हाथ से न करें। माला के मणियों को नाखून का स्पर्श वर्जित है। माला जपते समय उँगलियों और मणियों के बीच कोई व्यवधान अन्तर नहीं आना चाहिए।

जप करते समय मंत्र को गुप्त रखना चाहिए, अर्थात् मन ही मन में मंत्र जप करना चाहिए। लाल कपड़े की “गोमुखी” में हाथ रखकर जप करें। खुली माला से जप करने पर यक्ष, राक्षस, बैताल, पिशाच, सिद्ध और विद्याधर आदि सफलता का प्रभाव ग्रहण कर लेते हैं और खुली माला से जप करने पर आपका ध्यान सुमेरू या माला समाप्ति की ओर भी जा सकता है, जिससे विघ्न उत्पन्न होता है।

प्रातः काल जप के समय में माला नाभि के सामने मध्याह्न में हृदय के सामने और सायंकाल मस्तक के सामने रखकर जप करना चाहिए। जप करते समय उच्चारण साफ एवं स्पष्ट हों।

माला को मध्यमा उँगली मध्य पर्व पर अथवा अनामिका के मध्य पर्व पर रखें व अंगुष्ठ (अंगूठे) के प्रथम पर्व से एक-एक मनके को एक-एक मंत्र बोलने के बाद आगे बढ़ाईये। तर्जनी माला से स्पर्श नहीं होनी चाहिए। जप के समय परस्पर बातें नहीं करनी चाहिए। सुमेरू तक पहुंचने पर हृदय की ओर से माला को घुमाकर पुनः जप आरम्भ करें। सुमेरू का उलंघन करना वर्जित है।

“सुमेरू” एक माला के पूर्ण होने का “संकेतक” है। सुमेरू पर जप नहीं होता है। माला घुमाते समय बांटे से दाहिनी ओर घुमावें। माला जप के समय हाथ से गिरने पर दोष होता है, अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

जप के समय मन प्रसन्न रखें, पूर्ण निष्ठा भाव रखें। स्वयं को जप के योग्य व समर्थ समझें। इष्ट के प्रति श्रद्धा रखें। एकाग्रचित हो, मन में उत्साह हो, दृढ़ विश्वास हो तथा अहंकार, घमंड और गर्व भाव मन में न लायें, तभी आप जप के द्वारा अपने इष्ट की कृपा व दया प्राप्त कर सकेंगे। मंत्र के निर्धारित संख्या का पूर्ण जप करने से ही सिद्धि में सफलता मिलती है।

माला की बनावट—सामान्यतः माला में 108 मनके अर्थात् दाने होते हैं तथा एक सुमेरू होता है। प्रत्येक मनके के बीच में गांठ लगी होनी चाहिए, ताकि प्रत्येक मनका अलग-अलग रहे।

माला को गूँथने के लिए सोने, चांदी अथवा रेशमी धागे का प्रयोग करना चाहिए। यह मनका साफ, स्वस्थ हों, टूटा-फूटा न हो। मंत्र जप के लिए माला का पूर्ण और शुद्ध होना आवश्यक है।



## विभिन्न जप कार्यों में विभिन्न मालाओं का प्रयोग

|                          |                                      |
|--------------------------|--------------------------------------|
| देवी साधना हेतु          | लाल चन्दन एवं रुद्राक्ष की माला।     |
| वैष्णवी मत साधना हेतु    | तुलसी की माला।                       |
| शत्रु नाश के लिए         | कमलगट्टे व हल्दी की माला।            |
| सन्तान प्राप्ति हेतु     | पुत्रजीवा की माला।                   |
| श्री गणेश साधना हेतु     | हाथी दाँत की माला।                   |
| अभिष्ट सिद्धि हेतु       | चांदी की माला।                       |
| धन प्राप्ति हेतु         | मूंगी की माला।                       |
| पाप नाश हेतु             | कुशा जड़ की माला                     |
| भैरवी विद्या सिद्धि हेतु | मूंगा, शंख, मणि अथवा स्फटिक की माला। |

## सिद्धि काल में पूजन हेतु पुष्प तोड़ने की विधि और मंत्र

साधकों ! सिद्धि काल में अपने इष्ट देव अथवा इष्ट देवी की पूजा करने हेतु पुष्प, बिल्व पत्र, तुलसी पत्र आदि चढ़ाने का विधान है। इन पुष्पों को वृक्ष से तोड़ने की विधि शास्त्रों में निर्मित है। “लिंग पुराण में” वर्णित है कि साधक स्नान के पश्चात् ही तुलसी पत्र, बिल्वपत्र व पुष्प तोड़ें। पुष्प तोड़ने से पहले पूर्व की ओर मुख कर हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

मा नु शोकं कुरुष्वं त्वं स्थान त्यागं च मा कुरु ।

देव पूजनार्थाय प्राथयामि वनस्पते ॥

पहला फूल तोड़ते समय—“ॐ वरुणाय नमः” दूसरा फूल तोड़ते समय “ॐ व्योमाय नमः” और तीसरा फूल तोड़ते समय “ॐ पृथिव्ये नमः” बोलें, फिर आवश्यकतानुसार बिना मंत्र का ही आवश्यकतानुसार फूल तोड़ लें।

## बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र और विधि तथा बिल्वपत्र तोड़ने का निषिद्ध काल

साधकों ! स्नान से पवित्र होकर निम्नलिखित मंत्रों उच्चारण करते हुए क्रमशः पाँच बिल्वपत्र पाँच बार मंत्र पढ़कर तोड़े। इसके पश्चात् इच्छानुसार बिल्वपत्र तोड़ लें। बिल्वपत्र तोड़ने का मंत्र—

अमृतोद्भव श्री वृक्ष महादेव प्रिय सदा ।

गृह्णामि तव पत्राणि देवी पूजनार्थं मादरात् ॥



ध्यान रहे—

चतुर्थी, अष्टम, नवमी, चतुर्दशी, अमावास्या, संक्रान्त के दिन और सोमवार को बिल्वपत्र न तोड़ें। निषिद्ध समय से पहले दिन का तोड़ा बिल्वपत्र चढ़ाना चाहिए। शास्त्रों ने तो यहाँ तक कहा है कि यदि नूतन बिल्वपत्र न मिल सके तो चढ़ाए हुए बिल्वपत्र को ही धो-धो कर बार-बार चढ़ाते रहे। [लिंग पुराण से]

### बासी जल और पुष्प पूजन में वर्जित

जो फूल, पत्ते और जल बासी हो गए हों उन्हें देवताओं पर न चढ़ाएँ। किन्तु तुसली पत्र और गंगाजल बासी नहीं होते। तीर्थों का जल भी बासी नहीं होता। वस्त्र, यज्ञोपवीत और आभूषण में भी निर्माल्य का दोष नहीं आता। माली के घर में रखे हुए फूलों में बासी दोष नहीं आता। मणि, रत्न, वस्त्र, सुवर्ण आदि से बनाये गए फूल बासी नहीं होते। इन्हें प्रोक्षण कर (पोंछकर) चढ़ाना चाहिए।

[ तत्त्व सागर संहिता से ]

### सामान्यतया निषिद्ध पुष्प

सिद्धि करने वाले भक्तों ! यहाँ उन निषेधों को दिया जा रहा है जो सामान्यतया सब पूजा में सब फूलों पर लागू होते हैं—

भगवान या भगवती पर चढ़ाया हुआ फूल “निर्माल्य” कहलाता है। सूंघा हुआ या अंग में लगाया हुआ फूल इसी कोटि में आता है—इन्हें न चढ़ायें। भौरे के सूंघने से फूल दूषित नहीं होता। जो फूल अपवित्र बर्तन में रख दिया गया हो, अपवित्र स्थान में उत्पन्न हो, आग से झुलस गया हो, कीड़ों से विद्ध हो, सुन्दर न हो, जिसकी पंखुडियाँ बिखर गयी हों, जो पृथ्वी पर गिर पड़ा हो, जो पूर्णतः खिला न हो, जिस में खट्टी गंध या सड़ांध आती हो, निर्गन्ध हो या उग्र गंध वाला हो—ऐसे पुष्पों को नहीं चढ़ाना चाहिए।

जो फूल बाँए हाथ, पहनने वाले अधोवस्त्र, आक और रेंड के पत्ते में रखकर लाए गये हों, वे फूल त्याज्य हैं। कलियों को चढ़ाना मना है, किन्तु यह निषेध कमल पर लागू नहीं है।

फूल को जल में डूबोकर धोना मना है। केवल जल से इसका प्रोक्षण कर देना चाहिए।

कदम्ब, सारहीन फूल या कठूमर, केवड़ा, शिरीष, तिलिन्नी, बकुल, कोष्ठ, कैथ, गाजर, बहेड़ा, कपास, गंभारी, पत्रकंटक, सेमल, अनार, धव, बसंत ऋतु में खिलने वाले कंद विशेष, कुंद, जूही, मदन्ती, सर्ज और दोप में खिले फूल भगवान को नहीं चढ़ाना चाहिए। [वीर मित्रोदय पूजा प्रकाश से]



## पूजन के लिए विहित पत्र पुष्प एवं विभिन्न प्रकार के फूलों को चढ़ाने से मिलने वाले फल का तारतम्य

पूजा उपासना में या सिद्धि साधना में अपने इष्टदेव पर फूल चढ़ाने का बहुत अधिक महत्व है। बताया गया है कि तपशील सर्वगुण सम्पन्न वेद में निष्णांत किसी ब्राह्मण को सौ सुवर्ण मुद्रा दान करने पर जो फल प्राप्त होता है, वह भगवान पर सौ फूल चढ़ा देने से प्राप्त हो जाता है।

शास्त्रों ने कुछ फूलों के चढ़ाने से मिलने वाले फल का “तारतम्य” बतलाया है—  
दस सुवर्ण के माप के बराबर सुवर्ण दान का फल एक आक के फूल को चढ़ाने से मिल जाता है। हजार आक के फूलों की अपेक्षा एक कनेर का फूल, हजार कनेर के फूलों को चढ़ाने की अपेक्षा एक बिल्वपत्र से फल मिल जाता है और हजार बिल्वपत्रों की अपेक्षा एक गूमा फूल (द्रोण पुष्प) होता है। इस तरह हजार गूमा से बढ़कर एक चिचिड़ा, [चिरचिरा, अपामार्ग] हजार चिचिड़ों से बढ़कर एक कुशा का फूल, हजार कुशा पुष्पों से बढ़कर एक शमी का पत्ता, हजार शमी के पत्ते से बढ़कर एक धतूरा, हजार धतूरे से बढ़कर एक शमी का फूल होता है। अन्त में बतलाया गया है कि समस्त फूलों की जातियों में से बढ़कर “नील कमल” होता है।

महर्षि व्यास जी ने “कनेर” की कोटि में—चमेली, मौलसिरी, पाटला, मदार, श्वेत कमल, शमी के फूल और भटकैया को रखा है। इसी तरह धतूरे की कोटि में नाग चंपा और पुनांग को माना है।

भविष्य पुराण में—भगवान व भगवती पर चढ़ाने योग्य और भी फूलों के नाम गिनाये हैं—करवीर, (कनेर) मौलसिरी, आक, धतूरा, पाढ़र, बड़ी कटेरी, कुरैया, काश, मन्दार, अपराजिता, शमी का फूल, कुब्जक, शंख पुष्पी, चिचिड़ा, कमल, चमेली, नाग चम्पा, चम्पा, खस, तगर, नाग केशर, किकिरात [पीले फूल वाली कट सरीया] गुमा, शीशम, जयन्ती, बेला, पलाश, बेल पत्ता, कुशुम पुष्प, केशर, लाल कमल और नील कमल, गेंदा गुलाब। ये सभी पुष्प भगवान पर चढ़ाये जाते हैं। [वीर मित्रोदय पूजा प्रकाश]

## पुष्पादि चढ़ाने और उतारने की विधि

शास्त्रों में प्रमाण है कि—फूल, फल और पत्ते जैसे उगते हैं, वैसे ही इन्हें चढ़ाना चाहिए। उत्पन्न होते समय इनका मुख ऊपर की ओर होता है, अतः चढ़ाते समय इनका मुख ऊपर की ओर ही रखना चाहिए।

दुर्वा एवं तुलसी दल को अपनी ओर नीचे मुख कर चढ़ाना चाहिए। इनसे भिन्न पत्ते को ऊपर मुख कर या नीचे मुख कर दोनों ही प्रकार से चढ़ाया जा सकता है।



दाहिने हाथ के करतल को उतान कर मध्यमा, अनामिका और अंगूठे की सहायता से फूल चढ़ाना चाहिए।

चढ़े हुए फूल को अंगूठे और तर्जनी की सहायता से उतारें।

[सार दीपिका, आचार्येन्दु, चिन्तामणि और कालिका पुराण से आधारित प्रमाण।]

### निवास स्थान में एक ही देवता या देवी की कई प्रतिभा रखना निषेध

साधना करने वाले साधकों ! घर में कभी-कभी एक ही देवता की अनेक मूर्तियों का संग्रह हो जाता है, अतएव साधक को उनकी संख्या का औचित्य ध्यान में रखना आवश्यक है—

घर में दो शिवलिंगों, दो शंखों, दो सूर्य प्रतिमाओं, दो शालिग्रामों, दो गोमती चक्रों, तीन गणपति प्रतिमाओं की स्थापना नहीं करनी चाहिए।

देखें प्रमाण—

गृहे लिंग द्वयं नाचर्यं गणेश त्रियं तथा ।

शंख द्वयं तथा सूर्यो नाच्यां शक्ति त्रय तथा ॥

द्वे चक्रे द्वारका याश्य शालिग्राम शिला द्वयम् ।

तथा तु पूजने नैव हुद्रेगं पाप्नुचाद् गृही ॥

[ प्रतिष्ठा मयूरव ]

### सिद्धि साधना आरम्भ से पूर्व साधकों के लिए अति आवश्यक निर्देश

भगवती की साधना करने वाले साधकों ! सिद्धि साधना अथवा मंत्रानुष्ठान हेतु नियमों का पालन करना तो अपरिहार्य है ही, साथ ही कुछ अन्य नियम भी हैं, जिनका पालन करना आवश्यक होता है। अनेक विद्वानों मर्मशों ने परीक्षण करके इनकी व्यवहारिक उपयोगिता और प्रभाव को स्वीकार किया है। सिद्धि साधना विधान के अन्तर्गत साधकों को इस प्रकार के निर्देश दिए गये हैं—

1. स्नान करके शुद्ध स्वच्छ वस्त्र पहन कर उपासना स्थल में जाना चाहिए।
2. वस्त्र दो हों और सिले हुए न हों।
3. साधना या उपासना स्थल पूर्णतया शान्त सुरक्षित और एकान्त हो।
4. दिन भर के पहने हुए वस्त्र साधना के समय नहीं पहनने चाहिए।
5. आसन पर एक बार बैठ जाने पर बार-बार उठना उचित नहीं होता।
6. बैठने में सदैव शरीर सीधा रहे, मेरुदण्ड को झुकाना नहीं चाहिए।



7. सिद्धि अनुष्ठान में पूजन, जप और आहुतियों की पूर्ति आवश्यक होनी चाहिए।

8. सिद्धि साधना आरम्भ करते समय शुभ दिन, तिथि, मुहूर्त आदि का विचार अवश्य कर लेना चाहिए। लघु साधना के लिए दोनों नवरात्रि [चैत्र और आश्विन मास में होने वाली] उत्तम होता है।

9. जप काल में नित्य देवता या देवी का आवाहन विसर्जन करते रहना आवश्यक होता है। किन्तु मन्दिरों में स्थापित विशाल देव प्रतिमाओं के समक्ष साधना करने पर आवाहन विसर्जन की आवश्यकता नहीं होती।

10. धूप, दीप, अक्षत, चन्दन, गंगाजल, बिल्वपत्र, पुष्प और नैवेद्य नियमानुसार प्रयोग नित्य ही अवश्य ही किया जाये।

11. सिद्धि अनुष्ठान की समाप्ति कर हवन, तर्पण, मार्जन, क्रिया एवं कुमारी कन्याओं का पूजन-भोजन, दान तथा ब्राह्मणों को भोजन कराकर दक्षिणा दान देकर संतुष्ट करना चाहिए।

12. पूरी साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना चाहिए।

13. श्रृंगार, सज्जा, स्वादेच्छा, पर स्पर्श न करके अपना कार्य स्वयं करें। कार्य व विचार दोनों ही पवित्र एवं स्वच्छ हों।

14. सिद्धि अनुष्ठान आरम्भ के समय जैसा संकल्प किया जाये, उसका अन्त तक पालन करना चाहिए।

15. सिद्धि काल से बचे समय में भी धार्मिक विषयों का चिन्तन, धर्म-चर्चा, आध्यात्मिक विचार वाले लोगों का सामीप्य और इष्ट देवता का स्मरण कल्याण कारी होता है।

16. मंत्र का उच्चारण पूर्णतः शुद्ध हो।

17. सिद्धि अनुष्ठान में मंत्र जप पूर्ण होने के बाद निर्धारित मंत्र का “दशांश भाग” मंत्र जप करते हुए हवन में आहुतियां देनी चाहिए।

### सिद्धि काल में आवश्यक निषेध

1. साधना के दिनों में प्रतिकूल भोजन सर्वथा त्याज्य है। गरिष्ठ, तामसिक भोजन से साधक की मनोशान्ति और शुचिता नष्ट होती है।

2. कुत्संग, अश्लील दृश्य, अनैतिक विषयों की चर्चा, काम-चिन्तन, श्रृंगार उत्तेजक वस्तु, दृश्य अथवा वार्तालाप सर्वथा वर्जित है।

3. मादक द्रव्यों का निषेध। बहुतेरे साधु, फकीर गांजे-भंग-चरस का दम लगाकर कहते हैं इससे ध्यान लगता है-यह सर्वथा असंगत है। साधक के लिए किसी भी प्रकार के मादक पदार्थ की स्वीकृति नहीं दी गई है। साधना काल में समस्त प्रकार का विलासित और मादक पदार्थों का निषेध कहा गया है।

4. साधक के लिए अनुष्ठान काल में गांजा, भांग, चरस, अफीम, शराब,



ताड़ी, सिगरेट, बीड़ी, तम्बाकू, मांस, मछली, अंडे, मुर्गे, लहसुन, प्याज आदि को सर्वथा त्याग कर संयमित जीवन व्यतीत करना चाहिए।

5. शिखा खोलकर साधना नहीं करनी चाहिए।

6. बिना स्नान किए, अपवित्र अवस्था में साधना करना वर्जित है।

7. नग्न होकर साधना करना निषेध है।

8. बिना आसन बिछाए, गंगी भूमि पर जप व साधना करना निषेध है।

9. जप के समय में वार्तालाप नहीं किया जाता।

10. भीड़भाड़ वाले, जनसंख्या वाले स्थान में जप या साधना करना वर्जित है।

11. माला जपते समय हाथ और सिर खुला नहीं रहना चाहिए।

12. राह चलते या राह में कहीं बैठकर जप नहीं किया जाता।

13. भोजन करते समय अथवा शयन काल में जप नहीं किया जाता।

14. आसन विरुद्ध किसी भी स्थिति में बैठकर, लेट कर, या पैर पसार कर जप नहीं किया जाता।

15. छींक, खखार, खाँसी, थूकना जैसी व्याधि के समय जप न करें।

16. प्रत्येक यंत्र-मंत्र व तंत्र साधना की सिद्धि साधक के आचरण पर निर्भर करता है। मन-वचन तथा कर्म से पवित्र, विश्वासी, श्रद्धालु, परोपकारी, स्वार्थ सहित एवं विवेकी साधक ही भगवती की सिद्धि साधना में सफलता प्राप्त कर पाते हैं।

17. काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, हिंसा, एवं दूसरों को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से की गई साधना निष्फल हो जाती है।

18. तांत्रिक साधना अथवा यंत्र-मंत्र साधना में या देवि-देवताओं की सिद्धि में सफलता प्राप्ति के लिए किसी अनुभवी गुरु का मार्ग दर्शन प्राप्त करना आवश्यक होता है। सामान्य प्रयोग तो अध्ययन एवं अभ्यास से ही सिद्ध हो जाते हैं, परन्तु विशिष्ट प्रयोगों की सिद्धि के लिए किसी सुयोग्य गुरु का शिष्यत्व ग्रहण करके ही साधना आरम्भ करनी चाहिए।

19. धर्म, नीति, सत्य, न्याय, सदाचार, नैतिकता एवं कानून के विरुद्ध तांत्रिक सिद्धि का प्रयोग भूल कर भी नहीं करना चाहिए।

20. प्रस्तुत संकलन प्राचीन सिद्धि साधना विधियों से साधकों को सुपरिचित कराने के उद्देश्य से लेखन एवं प्रकाशित किया गया है। इन साधनों का प्रयोग किसी को हानि पहुँचाने के उद्देश्य से कभी नहीं करना चाहिए। प्रमादवश होने वाली हानि का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व स्वयं साधक पर ही होगा। ठंडा शीतल जल प्राप्त करने हेतु कुँआ बनाया जाता है। यदि कोई मन्द बुद्धि स्त्री या पुरुष घर से कलह या किसी भी कारण कुँए में गिरकर आत्महत्या कर ले तो कुआँ बनाने वाले का क्या दोष ? पर प्रभु के आगे किसी का वश नहीं चलता। इस पुस्तक के पूर्व भी हमारी लिखी हुई कई सिद्धि साधना व तांत्रिक पुस्तकें अमित पाकेट बुक्स जालंधर सिटी से प्रकाशित हैं, जिसके प्रयोग से अनेक नेक लोग लाभान्वित हो रहे हैं और कुछ लोग प्राण से भी हाथ धो बैठे हैं। इसका कारण है-साधना का गलत प्रयोग।



## सिद्धि साधना की अवधि और ब्रह्मचर्य

पाठकों ! सिद्धि-साधना का प्रयोग लम्बे समय तक चलने वाले थोड़े दिनों तक चलने वाले भी होते हैं। तीन, सात, ग्यारह, पन्द्रह, इक्कीस और इक्तालीस दिन के प्रयोगों में ब्रह्मचर्य अर्थात् स्त्री संसर्ग से दूर रहना माना जाता है, किन्तु लम्बे समय तक किए जाने वाले प्रयोग “राजसी” कहलाते हैं। राजसी प्रयोग में मन के उद्दिग्ध होने पर पत्नी के साथ सम्पर्क करने की आज्ञा शास्त्र विहित है, किन्तु वह भी प्रतिदिन नहीं। संभोग को भोजन की तरह दैनिक आवश्यकता बनाने की आज्ञा कोई भी शास्त्र नहीं देता :

## सिद्धि में सफलता के आवश्यक सूत्र

[ विश्व विख्यात तांत्रिक पंडित वाई. एन. झा “तूफान”

का स्वयं अपनी साधना सफलता का अनुभव ]

1. श्रद्धा “सिद्धि” का प्राण है। श्रद्धा सहित रहकर साधना करना जीवन है। यदि आप सिद्धि साधना करने जा रहे हैं तो इष्ट देव या अपनी इष्ट देवी पर परम विश्वास करके साधना में एकाग्रचित्त हो जाइये, तभी आपको इसकी वास्तविकता का पता लगेगा।

2. सिद्धि काल में अपने इष्टदेव के प्रति सन्देह करने पर सिद्धि की सफलता शक्तिहीन हो जाती है, अर्थात् मृत हो जाती है और मृत वस्तु कोई भी कार्य नहीं कर सकती। अतः साधना काल में इष्टदेव, मंत्र व गुरु के प्रति सन्देह न करें।

3. जिस प्रकार स्त्री अपने पति को परमेश्वर मान कर मोक्ष प्राप्ति करती हैं, उसी प्रकार साधना काल में अपने इष्ट देव को परमेश्वर या पमेश्वरी मानें, तभी सिद्धि प्राप्त होगी।

4. यंत्र-मंत्र-तंत्र व सिद्धियाँ-ये सब भगवान के ही स्वरूप हैं। सिर्फ आवश्यकता है उनसे एकाकार होने की। दिव्य प्रकाश का दर्शन उसी को होता है, जो अपने लक्ष्य के प्रति दीवाना हो जाता है। साधना के प्रति समर्पण का भाव पैदा कर जो अपने लक्ष्य पे दीवाना हो जाता है, सारी सिद्धियाँ व शक्तियाँ उसी की होकर रह जाती हैं। क्योंकि आप उन शक्तियों के अंश हैं। अतः उन शक्तियों से हृदय का एकाकार स्थापित करने के पश्चात् ही सिद्धि में सफलता मिलेगी।

5. साधना काल में अपने आप को, अपने मन को, अपने कर्म को इष्ट देव को समर्पित कर दें। वह आपके अन्तः करण में विद्यमान हैं। यदि आप में उनके प्रति निष्ठा है, प्रेम है, लग्न है, सच्चाई है तो वे आपके सारे कार्यों को अवश्य सम्पन्न करेंगे। साधना काल में अपने इष्ट देवी का इष्ट देव से उज्ज्वल हृदय से कहें-“हे मातेश्वरी ! मैं तो एक कठपुतली मात्र हूँ और यह महान ईश्वरीय कार्य कर रहा हूँ।



हे भगवती ! अब इस पापी को यश, मान, सम्मान देना आपके हाथ में है।" इस प्रकार के मन में भाव पैदा करें। करके तो देखें-सफलता आपकी सहचरी होकर रह जाएगी।

6. भगवती प्रेम-भाव से मिलती है, तर्क या बुद्धि से कदापि वे नहीं मिलती, इसलिए तर्क से दूर रहकर सिद्धि साधना करनी चाहिए।

7. साधना करने से पूर्व किसी सिद्धि गुरु की शरण में जाकर ही सिद्धि करना आपके लिए हितकर रहेगा। अभ्यास के बाद आप स्वतंत्र साधना कर सकते हैं।

8. साधना करने का स्थान एकान्त हो, साफ तथा पवित्र हो। वहां कोई दूसरा न आए-जाए और न ही वहां कोई शब्दार्थ हो।

9. सिद्धि साधना में क्रियाहीनता का अर्थ ही मृत्यु है। इसलिए स्नानादि से पवित्र होकर ही अपने इष्टदेव की अर्चना करनी चाहिए।

10. शुभ मुहूर्त में की गई साधना का परिणाम अच्छा होता है। इसलिए साधक को पंचाङ्ग का ज्ञान होना भी आवश्यक है।

11. जब तक साधना पूर्ण न हो जाय तब तक ब्रह्मचर्य व्रत पालन, भूमि शयन तथा एक बार भोजन करना चाहिए।

12. अपने यहां आने-जाने वाले रिश्तेदारों और मित्रों को सूचित कर दें कि वे आपकी साधना में रूकावट अथवा साधना के दौरान खलल न डालें।

13. साधना के समय हुई अनुभूति या स्वप्न अपने गुरु के सिवा किसी को कहना ठीक नहीं। इनको प्रकाशित करने से सिद्धि मिलने के आसार क्षीण हो जाते हैं तथा इस तरह के दृष्टान्त, स्वप्न और अनुभव होना बन्द हो जाता है।

14. साधना में उपयोग होने वाली सामग्री पहले से ही एकत्रित कर लेनी चाहिए, तभी साधना आरम्भ करें।

15. साधना के बीच में अपने आसन से उठना नहीं चाहिए।

16. साधना काल में नित्य प्रति सर्वप्रथम गायत्री मंत्र की एक माला एवं श्री गणेश मंत्र की एक माला जप करना आवश्यक है।

17. साधना सिद्धि प्राप्त होने के पश्चात् उसकी शक्ति को मानव-कल्याण के लिए जितना ही लोगों में बाँटेंगे, उतना ही आपमें अपूर्व शक्ति भरती चली जाएगी।

18. यदि साधना काल में कोई रोग-पीड़ा या पारीवारिक क्लेश उत्पन्न हो रहा हो तो आपको निराश होकर मंत्र जप छोड़ना नहीं चाहिए, क्योंकि साधना में गहराई आने पर दुःख क्लेश दूर हो जाते हैं।

19. बुरे कार्यों में साधना शक्ति का प्रयोग न करें, अन्यथा वही शक्ति कुछ दिनों के पश्चात् आपका प्राण हर लेंगी। साथ ही आप शक्तिहीन हो जायेंगे।

20. साधना प्रारम्भ से पूर्व माता-पिता एवं गुरु जनों का आशीर्वाद परम आवश्यक है। जो व्यक्ति इन तीनों का आदर करते हैं, उसे समस्त सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं।



21. सिद्धि साधना में कुछ ऐसी भी साधना हैं जिनकी साधना हेतु श्मशान में जाना पड़ता है। यदि आपको वहाँ जाना अच्छा न लगता हो तो श्मशान की मिट्टी लाकर आसन के नीचे रखने पर श्मशान के बराबर सिद्धि प्राप्त होती है।

22. सिद्धि के पश्चात् गुरु को दक्षिणा देकर ही आगे का कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

23. साधना के दिनों में बराबर गुरु से परामर्श करते रहना चाहिए।

24. घर में जप करने या सिद्धि करने पर यदि एक गुणा फल मिलता है, तो सौ गुणा जंगल में, हजार गुणा सरोवर में, लाख गुणा नदी, करोड़ गुणा पर्वत शिखर, अरबों गुणा देव मंदिर और सिद्धपीठ में सिद्धि करने पर साधक को अनंतगुणा फलों की प्राप्ति होती है।

25. साधना काल में माला हाथ से छूटकर गिरनी नहीं चाहिए। माला का टूटना (साधना काल में) मौत का आना ही है। ऐसा समझकर निरतन्तर साधना करते रहना चाहिए।

26. जप करते समय यदि शौच अथवा लघुशंका आ जाए तो उसका विरोध नहीं करना चाहिए। बल्कि शीघ्र ही वह कार्य पूरा कर पुनः स्नान से पवित्र हो जप प्रारम्भ करना चाहिए।

27. जप की गिनती माला के आधार पर पूर्ण रूप से सही रखनी चाहिए।

28. सिद्धि साधना आरम्भ कर देने पर यदि साधक के घर में मरण शौच या जन्मशौच पड़ जाये तो भी सिद्धि अनुष्ठान नहीं छोड़ना चाहिए।

29. शान्ति कर्म की सभी साधनाएँ पूर्व की दिशा में मुँह करके करनी चाहिए। उच्चाटन, स्तम्भन आदि की क्रियाएँ पश्चिम की दिशा में मुख करके करनी चाहिए।

## सिद्धि साधना के दिनों में आहार

साधकों ! साधना के दिनों में साधक को शुद्ध व पवित्र शाकाहारी भोजन करना चाहिए। ध्यान रहे—दुषित आहार लेने से साधना असफल हो जायगी।

दुषित आहार तीन प्रकार के होते हैं—

1. वर्ण या जाति दुषित आहार—जिस घर में मांस, मछली, अंडे, लहसुन, प्याज आदि तामसिक पदार्थों का सेवन होता है, जिस घर के व्यक्ति सात्विक प्रवृत्ति तथा सदाचारी न हों, नास्तिक परिवार हो या अशांत वातावरण का परिवार हो, उसके घर भोजन करने से साधक की साधना में खलल पहुँचता है।

2. आश्रय दोष दुषित आहार—अपवित्र स्थान पर बनाया हुआ या रखा हुआ भोजन या व्यभिचारी अथवा दुराचारी द्वारा स्पर्श किया हुआ भोजन सात्विक एवं शुद्ध ही क्यों न हो, त्याग कर देना चाहिए।

3. निमित्त विधि दुषित आहार—साधक को शुद्ध व पवित्र भोजन ही करना चाहिए। भोजन ग्रहण करने से पूर्व यदि किसी का मन उस भोजन पर ललच गया हो तो उसे भी त्याग कर देना चाहिए।



## साधना के दिनों में साधक हेतु भोजन पात्र

साधक यदि केले के पत्ते पर भोजन करे तो अत्यन्त ही शुभ, अभाव में तांबे या पीतल के बर्तन में भोजन करना चाहिए। साधक को चाहिए कि साधना काल में तेल, उड़द, नमक, गाजर, मांस, मछली, अंडे, मुर्गे, लहुसन और प्याज का स्पर्श भी नहीं करना चाहिए।

## सूर्यग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय सिद्धि करने का फल

उपासकों ! सूर्यग्रहण अथवा चन्द्रग्रहण लगने पर साधकों के लिए सिद्धि करने का विधान सम्पूर्ण सिद्धि विधान से आसान है। जब ग्रहण लगे तो गंगा नदी में सीने तक पानी में खड़े होकर, ग्रहण के प्रारम्भ से अन्तिम समय तक अपने इष्ट देव [जिसकी आप सिद्धि करना चाहते हैं] के मूल मंत्र का जप करते रहें। तत्पश्चात् गंगा के किनारे ब्राह्मण (वैदिक पंडित) के द्वारा विधि पूर्वक 99 माला हवन करें, अर्थात् इष्ट देव के मूल मंत्र पढ़कर हवन में आहुति डालें। इसके बाद माता गंगा की आरती करें और यह वन्दना करें कि—“हे माँ ! मेरी मनोकामना पूर्ण करें।”

बस समझिए कि आपको सिद्धि मिल गई। आजमा कर देखें।

## सिद्धि साधना में सावधानी

साधकों ! क्या आप “सिद्धि” करना चाहते हैं ?

सावधान ! यदि आप साधना प्रारम्भ कर मध्य में ही छोड़ देंगे या गुरु के परामर्श के बिना अथवा “गुरु कवच यंत्र” धारण किए बिना आप सिद्धि आरम्भ कर रहे हैं तो आपकी मृत्यु भी हो सकती है, आप पागल हो सकते हैं, आपका सर्वनाश हो सकता है। “गुरु कवच यंत्र” धारण कर पहले अपने हृदय को दृढ़ बना लें कि यह कार्य हमें करना ही है, चाहे मर ही क्यों न जाऊँ। जिदूदी बन इष्टदेव पर विश्वास कर विधिपूर्वक जप करने से अवश्य सफलता मिलती है—यह स्वयं आजमाएँ हैं।

वैसे तो कोई भी शक्तियाँ किसी के वश में नहीं होना चाहती फिर भी साधकों की अटूट साधना पर साधक को आर्शीवाद देने उन्हें आना ही पड़ता है।

साधना काल में अत्यन्त विकराल, डरावना दृश्य, भूत, प्रेत, राक्षस, बैताल, नाचते हुए नर कंकाल, आगों की वर्षा, पत्थरों की वर्षा, भयंकर नाद और भयंकर विकराल जीव आदि भी दिखाई पड़ते हैं, परन्तु भय से साधक को साधना नहीं



छोड़नी चाहिए। यदि आप साधना जारी रखेंगे तो आपको कुछ नहीं होगा, बल्कि यह डरावना दृश्य आपकी सफलता का प्रथम राज है। यदि आप उस समय भयभीत होकर जप छोड़ देंगे तो आपकी मृत्यु भी हो सकती है। इसलिए पूर्ण रूपेण दृढ़ होकर, सोच-समझकर ही सिद्धि साधना आरम्भ करें।

## साधना आरम्भ से पूर्व पवित्री धारण का विधान

जब साधक साधना करने बैठे तो साधना प्रारम्भ के पूर्व स्वर्ण, रजत, तांबा या कुशा की पवित्री (अंगूठी) दाहिने हाथ में अंगूठे से चौथी ऊँगली में अवश्य धारण करले, अन्यथा सिद्धि साधना में बाधा आती है।

## सिद्धि काल में मंत्र जप हेतु स्वच्छ व शुद्ध माला का चुनाव

साधकों ! सिद्धि साधना काल में इष्टदेव का मंत्र जप हेतु जो माला उपयोग में लावें, उसके चुनाव में निम्नलिखित बातों पर अवश्य ध्यान दें, वरना जप कार्य में विघ्न उत्पन्न हो सकता है।

1. माला के दाने छोटे-बड़े न हो।
2. "सुमेरू" के अतिरिक्त एक सौ आठ (१०८) दाने होने चाहिए।
3. शुद्ध सूत्र (धागे) में दाने पिरोए हुए हों।
4. ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य और शूद्र के लिए क्रमशः श्वेत, पीला, लाल और कुम्भ वर्ण के सूत्र में माला पिरोने का विधान है।
5. विधान के तार में पिरोई माला सब वर्णों के लोग सब प्रकार के सिद्धि अनुष्ठान में प्रयोग कर सकते हैं।
6. दाने के बीच में गांठ (माला के धागे में) अवश्य लगावें।
7. सुमेरू के लिए "ब्रह्मग्रन्थि" लगानी चाहिए।
8. रुद्राक्ष के दानों में "मुख" और "पुच्छ" का भी भेद होता है। मुख कुछ ऊँचा होता है और पुच्छ नीचा। माला पिरोते समय इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि दानों का मुख या पुच्छ परस्पर में मिलता रहे।
9. माला में अपने इष्ट देवता की प्राण प्रतिष्ठा कर लेनी चाहिए।

## साधकों के लिए माला पूजन मंत्र

जप आरम्भ करने से पूर्व माला का पूजन करना जरूरी है। निम्नलिखित मंत्र से माला का पूजन करें—

“ॐ ऐं श्री अक्षमालायै नमः”



ऊपरलिखित मंत्र से गंगाजल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र आदि पूजन सामग्री से माला का पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् माला पर इष्ट देव का पूजन भी करें। इसके बाद ही सिद्धि हेतु जप आरम्भ करें।

## करमाला द्वारा जप विधि

साधकों ! “करमाला” द्वारा जप या तो उँगलियों पर किया जाता है या उँगलियों के पर्वों पर।

इसकी विधि यह है कि अनामिका के मध्य भाग से नीचे की ओर चलें। फिर कनिष्ठा के मूल अग्र भाग तक, फिर अनामिका और मध्यमा के अग्रभाग पर होकर तर्जनी के मूल तक। गिनती संख्या दस हो जाएगी। मध्यमा के दो पर्व सुमेरु रूप में छोड़ देने चाहिए।

## करमाला जप में सावधानी

1. हथेली जप के समय थोड़ी सी मुड़ी होनी चाहिए।
2. हथेली की उँगलियाँ जप के समय पृथक-पृथक नहीं होनी चाहिए।
3. सुमेरु का उल्लंघन और पर्वों की सन्धि (गाँठ) का निषिद्ध है।
4. अपने करकमल को हृदय के सामने लाकर, लाल वस्त्रों से ढककर केवल दाहिने हाथ से ही जप करना चाहिए।

## जप करते समय उँगलियों का विधान

विविध सिद्धि कार्यों में विविध प्रकार से माला फेरने का विधान है—

1. मारण प्रयोग में कनिष्ठा और अंगूठे से माला फेरें।
2. विद्वेशन एवं उच्चाटन में अंगूठे और तर्जनी से माला फेरें।
3. आकर्षण में अंगूठे और अनामिका से माला फेरें।
4. शान्ति कर्म वशीकरण तथा स्तम्भन में अंगूठे और बीच की उँगली से माला फेरें।

## सिद्धि साधना के क्षेत्र में गुरु की महानता

साधकों ! समस्त सिद्धियाँ एवं तांत्रिक वाङ्मय में उपासना का मंगल प्रस्थान श्री गुरु की उपासना से ही होता है। गुरु शब्द का अर्थ शास्त्रों ने इस प्रकार वर्णित किया है—  
गु शब्दश्चांधकारः स्याद्र शब्द स्तन्नि रोधकृताः ।  
अंधकार विरोधित्वाद गुरु रित्य भिधीयते ॥



भावार्थ—“गु” का तात्पर्य अंधकार है और “रू” का तात्पर्य अंधकार का निरोध करना है। अर्थात् जो अज्ञान रूपी अंधकार का निरोध कर दे या नाश कर दे—वही “गुरु” है।

“गुरु” शब्द की उपमा एक और इस प्रकार है—

**गुकारः सिद्धिदः प्रोक्तो रकारः पाप हारकः।**

**उकारस्तु भवेद्विष्णु स्त्रित्रयात्मा गुरुः स्वयम्॥**

भावार्थ—“गु” अर्थात् सिद्धिदाता, “रू” अर्थात् पापहर्ता, “उं” अर्थात् विष्णु स्वरूप। आशय यह है कि गुरु सिद्धिदाता, पापहर्ता और विष्णु रूप होता है।

इसीलिए—“गुरु बिनु ज्ञान नहीं” वाली उक्ति वस्तुतः सत्य है। प्रत्येक प्रकार का ज्ञान गुरु द्वारा ही प्राप्त होता है। यह बात सिद्धि साधना व तांत्रिक उपासना के क्षेत्र में और भी अधिक महत्व रखती है, क्योंकि इस क्षेत्र में अनेक रहस्यों को गुप्त रखने के लिए पद-पद पर शास्त्रकारों ने आदेश दिए हैं। इनके साथ ही मंत्र-तंत्र, सिद्धि-साधना में ज्ञान के साथ-साथ कर्म का भी उतना ही महत्व दिया गया है। जिस प्रकार कोई पक्षी आकाश में एक पंख से नहीं उड़ सकता, उसी प्रकार केवल ज्ञान अथवा केवल कर्म से इस मार्ग में सिद्धि नहीं मिलती है। ज्ञान तो हमें ग्रन्थों से भी कुछ अंशों में मिल जाता है, किन्तु कर्म-क्रिया की पद्धति तो गुरु से ही प्राप्त होती है।

एक और महत्व की बात यह है कि गुरु द्वारा मिले हुए मार्ग दर्शन से एक निश्चित संरक्षण मिल जाता है। उसमें शंकाओं को कोई अवकाश नहीं रहता।

रुद्रयामल उत्तर तन्त्र में “गुरु महिमा” बतलाते हुए कहा गया है कि—

**गुरुपाद विहीना ये, ते नश्यन्ति ममाज्ञया।**

**गुरुर्मूलं हि मन्त्राणां, गुरुर्मूलं परम तपः॥२/१८८॥**

**गुरोः प्रसाद मात्रेण, सिद्धिरेव न संशयः।**

**अहं गुरु रहं देवो, मन्त्रार्थोऽस्मि न संशयः॥२८७॥**

अर्थात्—भगवती भैरवी ने यहाँ स्वयं कहा है कि “गुरु सेवा से विहीन मेरी आज्ञा से नष्ट हो जाते हैं। समस्त मंत्रों का मूल गुरु ही है। गुरु ही परम तप है। गुरु की केवल प्रसन्नता से ही अवश्य सिद्धि मिलती है, इसमें संशय नहीं है। मैं भैरवी ही गुरु हूँ और मैं ही मन्त्रार्थ हूँ।”

इस कथन से यह स्पष्ट है कि उपास्यदेव और गुरु दोनों में सामान श्रद्धा रहने पर ही उपासना फलवती होती है। गुरु की कृपा से शक्ति प्रसन्न होती है और शक्ति की प्रसन्नता से मोक्ष प्राप्ति होता है। गुरु की आज्ञा का उल्लंघन नहीं करना चाहिए तथा अहिर्नस दास की तरह उनकी आज्ञा माननी चाहिए। इतना ही नहीं, गुरु की पादुका, बस्त्र, शैय्या, भूषण आदि देखकर भी उन्हें प्रणाम करना चाहिए।

गुरु प्रणाम के लिए कतिपय नियमों का निर्देश भी यहां किया गया है। जिसमें बतलाया गया है कि सदा पादुका मंत्र का स्मरण करता रहे। जब गुरु और शिष्य



एक स्थान अथवा एक ग्राम में रहते हों तो प्रतिदिन उनके पास जाकर प्रणाम करना चाहिए। सातयोजन तक के विस्तार में यदि गुरु रहते हों तो मास में एक बार दर्शन करना चाहिए। श्री गुरु जिस दिशा में रहते हों, उस दिशा में भक्तिपूर्वक प्रणाम करें। उनके साथ एक आसन पर नहीं बैठें।

### सिद्धि साधना में गुरु द्वारा प्राप्त सिद्धि यंत्र सिंहासन पर स्थापित करना, व मंत्र जप की आवश्यकता क्यों ?

साधकों ! सद् गुरुदेव की लीला एवं स्वरूप को जानना सहज नहीं कहा जा सकता। गुरु तत्व, गुरु शिष्य सम्बन्ध, गुरु यंत्र कृपा, गुरु योग इत्यादि क्रियाओं की विशद् विवेचना से भारतीय संस्कृति की आर्य परम्परा में उपनिषदों में गुरु की परम महत्ता स्वीकार की गई है। माया से आवद्ध इस संसार के दुःखों से त्रस्त जीवों के उद्धार हेतु गुरु ही एकमात्र गति हैं। शास्त्रों में गुरु को भगवान शिव स्वरूप माना गया है, क्योंकि वे ही वास्तव में “शं” अर्थात् कल्याण, “कर” अर्थात् करने वाले हैं। वस्तुतः श्री भगवान की अनुग्रह शक्ति ही शुभ योग, शुभ आग्रह और शुभ सन्धि द्वारा केन्द्रीभूत होकर गुरु शक्ति के रूप में मूर्त हो अभिव्यक्ती होती है।

गुरु देव की उपस्थिति बिना, उनकी छत्रछाया के बिना कोई भी सिद्धि में सफलता मिल ही नहीं सकती। सभी साधकों के सिद्धि काल में गुरु का उपस्थित होना भी मुश्किल है। अतः इस समस्या का समाधान होना भी मुश्किल है। अतः इस समस्या के समाधान हेतु गुरु द्वारा-“सिद्ध यंत्र” सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है। गुरु द्वारा प्रदत्त-“सिद्ध यंत्र राज” में गुरु की परम दिव्य शक्ति छिपी रहती है, जो सिंहासन पर स्थापित होकर-“रिमोट कंट्रोल” बनकर साधक के तन-मन ज्ञान और मस्तिष्क को संचालित करते हैं और साधना काल में आनेवाली समस्त बाधाओं का नाश करते रहते हैं। परिणाम स्वरूप साधक “प्रथम बार में ही” साधना में सफलता प्राप्त कर लेता है। इसलिए गुरु द्वारा सिद्ध यंत्र साधना काल में पूजन स्थल के सिंहासन पर स्थापित करने का प्रावधान है। सिद्ध गुरु यंत्र की शक्ति सिंहासन पर स्थापित होकर साधक को साधना में लीन कर देता है।

गुरुदेव जानते हैं कि साधक के भीतर उर्जा है और जब उसका संचारण बाहर की दिशा में होता है, तो वह उर्जा बाहर निकलकर छिन्न-भिन्न हो जाती है, उसका प्रभाव तीव्रतम नहीं हो सकता। सिद्ध गुरु यंत्र उस उर्जा को भीतर से उर्ध्वगति प्रदान करता है, उसे संयोजित करके साधना सफलता की दिशा में मोड़ देता है। गुरु यंत्र इस उर्जा के वर्तुल को निरस्त नहीं होने देता। यंत्र की शक्ति साधक को हृदय में अवस्थित “आज्ञा चक्र” को स्पर्श करता है, तब आज्ञा चक्र शरीर में स्थित नीचे पुर, अनाहत, विशुद्ध चक्रों में उर्जा का प्रवाह, शक्ति का प्रवाह जहां भी अवरुद्ध हो गया है उसे हटाकर आज्ञा चक्र की ओर उर्ध्वगति देता



है और यह आज्ञा चक्र से सहस्रार में स्थापित हो जाता है, तो साधना काल के रोग, शोक, अनिष्ट, व्याधि आदि समाप्त हो जाते हैं और साधक अपनी साधना में प्रथम बार में ही सफल हो जाता है।

साधकों ! मंत्र जप की आवश्यकता सिद्धि काल में क्यों पड़ती है ? इसे ऐसे समझें—

मनुष्य के मुख से जो भी शब्द निकलता है, वह पूरे ब्रह्माण्ड में फैल जाता है। वह शब्द या ध्वनि कभी मिटता नहीं है। यह एक वैज्ञानिक सत्य है। महाभारत काल में भी ध्वनि संवाद हुए थे, वे आज भी वायुमण्डल में व्याप्त हैं, आवश्यकता है—उस “FREQUENCY” को पकड़ने की, जिसके माध्यम से हम उस ध्वनि को सुन सकें।

वैज्ञानिकों के अनुसार ध्वनि कंपनों के माध्यम से जो कार्य सामान्यतः असम्भव लगते हैं, उन्हें भी सम्पन्न किया जा सकता है, परन्तु ध्वनि कम्पनों में विशिष्ट गुण हों।

“डॉ० फ्रिस्टलोव” ने ध्वनि कंपनों के माध्यम से शरीर के परमाणुओं में कंपन उत्पन्न कर दिखाया। इसी कंपन से शारीरिक रोगों को ध्वनि तरंगों द्वारा दूर करने में सफलता मिली है। जेट विमान के तीव्र ध्वनि तरंगों से ही खिड़कियों के शीशे चटक जाते हैं या टूट जाते हैं। इस प्रकार ध्वनि तरंगों का प्रभाव पड़ता है और निर्विवाद रूप से होता है।

मंत्र का उच्चारण करने से भी एक विशिष्ट ध्वनि कम्पन उत्पन्न होता है। जब साधक मंत्र जप करता है तो मंत्र से उत्पन्न कम्पन “ईधर” के माध्यम से कुछ ही क्षणों में यंत्र—मंत्र देव तक पहुंचकर लौट आते हैं। लौटते समय उन कम्पनों में यंत्र—मंत्र देव की सूक्ष्म शक्ति, तेजस्विता एवं प्राणवत्ता व्याप्त हो जाती है, जो पुनः साधक के शरीर से टकराकर उसमें उन गुणों को बढ़ा देती है, जिससे साधक साधना में सफल हो जाता है।

**यंत्र-मंत्र साधना में कितने साधकों को  
सफलता पहली बार ही क्यों नहीं मिलती**

उपासकों ! यहाँ तक ध्यान देने योग्य और भी बात है कि “साधक” उपहास का पात्र तब ही बनता है, जब तक उसे कोई सिद्धि प्राप्त नहीं हो जाती, और यही बात प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के जीवन में भी लागू हुई है। जब तक उन्होंने कोई आविष्कार नहीं किया, लोगों ने उपहास ही किया कि—“क्या पागलों की तरह हर समय अपनी प्रयोगशाला में बन्द रहता है।” और जब एक दिन व्यक्ति प्रसिद्धि पा लेता है तो वही उपहास करने वाले लोग उनका यशोगान करते हैं—कि अमुक को मैंने अथक परिश्रम करते देखा है, अमुक अपनी प्रयोगशाला में घंटों जुटे रहते थे—भूख—प्यास की सुध—बूध छोड़कर।

आज भी हजारों लोग हैं, अनेकों मेरे शिष्य ही हैं, जिन्होंने यंत्र—मंत्र साधना में



सफलता प्राप्त की है और कर रहे हैं इन्ही साधनात्मक विधि-विधान को अपनाकर।

किसी-किसी साधक को तो सफलता पहली बार इसलिए नहीं मिलती, क्योंकि साधक पूर्ण रूप से अनुभवी नहीं होता है, “गुरु यंत्र” का उपयोग नहीं करता है। रेडियो में जब गाने सुनने होते हैं, तो उसकी सुई को एस निश्चित आवृत्ति [FREQUENCY IN MHZOKHZ] पर ट्यून किया जाता है। यदि 500 KHZ का स्टेशन है तो किसी अन्य FREQUENCY पर आवाज नहीं आएगी या साफ नहीं आएगी और कई बार यह सेटिंग ठीक से नहीं हो पाती, 499 KHZ या 501 KHZ ही रह जाती है। यही हाल साधनाओं में भी होता है। हमारे मन की भी सेटिंग ठीक ढंग से नहीं हो पाती। कभी घर में अशान्त वातावरण होता है तो कभी मंत्र का उच्चारण अस्पष्ट अशुद्ध होता है आदि।

इन सब कारणों से कई बार साधक साधना लक्ष्य के बिल्कुल निकट भी पहुँचकर सफल नहीं हो पाता। वह 499 या 501 पर पहुँचकर निराश हो जाता। परन्तु बार-बार प्रयास करने पर जिस तरह वह 499 पर पहुँचा था 500 पर भी पहुँच सकता है, और वह पहुँचाने की शक्ति गुरु यंत्र रूपी “रिमोट कंट्रोल” के पास होती है। जो “गुरु यंत्र” सिद्ध गुरु से प्राप्त कर साधना आरम्भ करता है तो उस साधक के समक्ष “सिद्धि” हाथ बांधे खड़ी हो जाती है।

### सिद्धि-साधना के मंत्रों में सांकेतिक शब्दों का तात्पर्य

साधकों ! सिद्धि मंत्रों में “नमः, स्वाहा, वषट, वौषट, हुम और फट्” शब्दों का उपयोग होता है। यहां इन्हीं सांकेतिक शब्दों का तात्पर्य बतला रहा हूँ।

अन्तःकरण को शान्त अवस्था में “नमः” शब्द का प्रयोग होता है। सारी दुर्धर्ष, घातक एवं अपकारी शक्तियाँ विनय के सामने नत हो जाती हैं। जो मनुष्य यथाशक्ति परोपकार में रत रहकर दूसरों के हित के लिए अपनी सारी शक्ति लगा देता है, अथवा यों कहिये कि अपने आप को “स्वाहा” कर देता है वह अपने शत्रुओं की सारी विरोध भावनाओं को हटाकर उनपर पूरा अधिकार कर लेता है। “वषट” अन्तःकरण की उस वृत्ति का लक्ष्य कराता है जिसमें अपने शत्रुओं के सम्बन्धियों का अनिष्ट साधन करने अथवा उनका प्राण हरण करने की भावना रहती है। “वौषट्” अपने शत्रुओं के हृदयों में एक दूसरे के प्रति द्वेष उत्पन्न करने का सूचक है। “हुम” बल तथा अपने शत्रुओं को स्थानच्युत करने के निमित्त क्रोध का ज्ञापक है। “फट्” अपने शत्रु के प्रति शस्त्र प्रयोग को व्यक्त करता है।

उपयुक्त शब्दों का उड़ीस तन्त्र (श्लोक १६३) में वर्णन मिलता है। महानिर्वाण तंत्र (५-१२६-१२८) में इन्हीं शब्दों का प्रयोग अंगन्यास तथा करन्यास के लिए किया गया है। इस प्रकार के सांकेतिक शब्दों का प्रयोग केवल तंत्र शास्त्र में ही नहीं, अपितु वेदों में भी उसी रूप में मिलता है। वेदों में इनके अतिरिक्त और भी कई शब्द मिलते हैं। अथर्ववेद (११-९-९-१०) में उल्कापात के शुभ फल के लिए, आभिचारिक



प्रयोगों की निष्फलता के लिए तथा पुल इत्यादि को उड़ा देने के निमित्त प्रयुक्त हुए डाय जैसे-विध्वंशक पदार्थों की व्यर्थता तथा सूर्य, चन्द्र आदि ग्रहों की शक्ति के लिए प्रार्थना की गई है। यहाँ “शम्” इस सांकेतिक शब्द का प्रयोग किया गया है। उक्त वेद के एकादश काण्ड के द्वितीय सूक्त में रूद्र की शक्ति एवं ऐश्वर्य का खासा वर्णन किया गया है और “नमः” शब्द के द्वारा उनका कई बार अभिवादन किया गया है। जिस प्रकार अग्निहोत्र एवं वषट् कार से यश का लाभ होता है, उसी प्रकार वरुण वृक्ष की मणि से यश एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। “अग्निहोत्र” का अर्थ है अग्नि अथवा परम गुरु को अपना मन “WILL” सौंप देना और “वषट्कार” का अर्थ है मन के समर्पण के मार्ग में आनेवाली विघ्न बाधाओं का नाश करना अथवा उन्हें असक्त बना देना।

“अथर्ववेद” (७/९७) में “वषट्” का प्रयोग एक दूसरे अर्थ में भी आता है। वहाँ एक “स्वाहा” शब्द और है, जिसका प्रयोग इस मंत्र के अतिरिक्त अन्य स्थलों में भी मिलता है। “स्वाहा” का अर्थ बहुधा यह होता है कि—“मैं अमुक बात को सच्चे मन से कहता हूँ।” एक जगह “वषट्हुतेभ्यः वषट् हुतेभ्यः”—इन शब्दों का प्रयोग मिलता है, जिसका अर्थ है—“वर्तमान एवं अनागत विघ्नों का निराकरण।”

“नमः” का भाव हम ऊपर में बतला चुके हैं। उदाहरणार्थ अथर्ववेद (७/८७) का पहला मंत्र देखिये। उसमें रूद्र का अग्नि रूप से वर्णन किया गया है। “वे अग्नि में, जल में, वनस्पति में, लताओं में सर्वत्र व्याप्त हैं और समस्त लोकों के रचयिता हैं। उनकी वन्दना करो।” वेदों में ऐसे अनेक स्थल हैं जहाँ किसी शक्तिशाली पुरुष के सामने विनय का भाव प्रदर्शित किया गया है। विनय शक्तिशाली पुरुष की शक्ति का हास कर देता है। वेद में इस भाव की ध्वनि मिलती है कि विनय से बढ़कर शक्ति पर विजय प्राप्त करने का कोई और प्रबल उपाय नहीं है।

अब हम “फट” के सम्बन्ध में कुछ निवेदन करेंगे। अथर्ववेद (४/१८/३) में इस शब्द का उल्लेख मिलता है। जो लोग पुल, जेल इत्यादि को उड़ा देने के लिए शक्तिशाली “डायनामाइट” जैसे-ध्वंसक पदार्थ बनाते हैं उन्हें इस बात का पता है कि इस प्रकार उड़ाये जाने पर पत्थर, कंकड़ आदि “फट” इस प्रकार शब्द करते हैं। “फट” यह फूटने के शब्द का अनुकरण है।

“अथर्ववेद” (१/२/१) में से हम एक उदाहरण और उद्धृत करेंगे। उपर्युक्त मंत्र सुगमता से प्रसव कराने के सम्बन्ध में है। प्रसव की सुगमता के लिए गर्भाशय के बन्धनों को शिथिल करना आवश्यक है। यह कार्य एक कुशल दाई के हाथ से होता है। वेद में यह कार्य “पूषण” का बताया गया है। “वषट्” शब्द से इस बात की ध्वनि निकलती है। इसीलिए “वषट्” का अर्थ है बन्धनों का स्लथीकरण। इसी प्रकार “अथर्ववेद” [५/२६/१२] में इसी शब्द का प्रयोग शत्रु विनाश के अर्थ में हुआ है। अथर्ववेद (९/७/५) में प्राणायाम के द्वारा मन को स्थिर करते उसका निरोध करने के अर्थ में “वषट्” का प्रयोग किया गया है। “वषट्” का यह अर्थ अथर्ववेद (१५/१४/१७) में जिस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया गया है उससे ठीक मेल खाता है।



## सिद्धि साधना में भगवती को नर बलि एवं पशु बलि चढ़ाना भयानक अपराध

भगवती की साधना करने वाले साधकों ! यद्यपि “तंत्र शास्त्र” समस्त श्रेष्ठ साधन शास्त्रों में एक बहुत उत्तम शास्त्र है, उसमें अधिकांश बातें सर्वथा अभिनन्दनीय और साधकों को परम सिद्धि मोक्ष प्रदान कराने वाली है। तथापि सुन्दर बगीचे में भी जिस प्रकार असावधानी से कुछ जहरीले पौधे उत्पन्न हो जाया करते हैं और फलने-फूलने भी लगते हैं, इसी प्रकार तंत्र में भी बहुत सी अवांछनीय गन्दगी आ गई है। यह विषयी कामान्ध मनुष्यों और मांसाहारी, मद्यलोलुप, अनाचारियों की ही “काली करतूत” मालूम होती है, नहीं तो श्रीसीय ऋषिप्रणीत मोक्ष प्रदायक “पवित्र तंत्र शास्त्र” में ऐसी बातें कहाँ से और क्यों आती ?

जिस शास्त्र में अमुक-अमुक जाति की स्त्रियों का नाम ले लेकर व्यभिचार की आज्ञा दी गई हो और उसे धर्म तथा साधना बताया गया हो, जिस शास्त्र में पूजा की पद्धति में बहुत ही गन्दी वस्तुएँ पूजा सामग्री के रूप में आवश्यक बतायी गयी हो, जिस शास्त्र के मानने वाले साधक हजार स्त्रियों के साथ व्यभिचार को, और अष्टोत्तरशत नर बालकों की बलि को अनुष्ठान की सिद्धि में कारण मानते हैं, वह शास्त्र तो सर्वथा “अशास्त्र” और शास्त्र के नाम को कलंकित करने वाला ही है।

व्यभिचार की आज्ञा देने वाले तन्त्रों के अवतरण हमने पढ़े हैं, और तंत्र के नाम पर व्यभिचार और “नरबलि” करने वाले मनुष्यों की घृणित गाथाएँ विश्वस्त सूत्रों से सुनी है। ऐसे महान तामसिक कार्यों को शास्त्र सम्मत मानकर भलाई की इच्छा से इन्हें करना सर्वथा भ्रम है, भारी भूल हैं और ऐसी भूल में कोई पड़े हुए हों तो उन्हें तुरन्त ही इससे निकल जाना चाहिए। और जान-बुझकर धर्म के नाम पर व्यभिचार, हिंसा आदि करते हों, उनको तो माँ काली का भीषण दंड प्राप्त होगा, तभी उनको होश ठिकाने लगेंगे। दयामयी माँ अपनी भूली हुई सन्तान को क्षमा करें और उन्हें रास्ते पर लावें, यही प्रार्थना है।

इसके अतिरिक्त “पंचामकार” के नाम पर भी बड़ा अन्याय अनाचार हुआ तथा अब भी बहुत जगह हो रहा है, उससे भी सतर्कता से बचना चाहिए। बलिदान और मद्य प्रदान भी सर्वथा त्याज्य हैं। माता की जो सन्तान अपनी भलाई के लिए उसी माता की प्यारी भोली-भाली सन्तान की हत्या करके उसके खून से माँ को पूजती है, जो माँ के बच्चे को खून से माँ के मन्दिर को अपवित्र और कलंकित करता है, उस पर माँ कैसे प्रसन्न हो सकती है।

माँ दुर्गा, काली “जगज्जननी विश्वमाता” है। स्वार्थी मनुष्य अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए धन, पुत्र, स्वार्थ, वैभव सिद्धि या मोक्ष के लिए भ्रम वश निरीह बकरे, भैंसे और अन्यान्य पशु-पक्षियों के गले पर छूरी फेरकर माता से सफलता का वरदान चाहता है, यह कैसी असंगत और असम्भव बात है। निरपराध प्राणियों



की नृशंसता पूर्वक हत्या करने कराने वाला कभी सुखी हो सकता है ? उसे कभी शान्ति मिल सकती है ? कदापि नहीं।

दयाहीन मांस लोलुप मनुष्यों ने ही इस प्रकार की प्रथा चलायी है, जिसका शीघ्र ही अन्त हो जाना चाहिए। जो दूसरे निर्दोष प्राणियों की गर्दन काटकर भला मनावेगा, उसका यथार्थ भला कभी नहीं हो सकता। यह बात स्मरण रखनी चाहिए। ख्याल करो-तुम्हें खूँटे से बांधकर यदि कोई मारे या तुम्हारे गले पर छूरी फेरे तो तुम्हें कितना कष्ट होगा ? नहीं सी सूई या कांटा चुभ जाने पर ही तिल-मिला उठते हो। फिर इस पापी पेट के लिए राक्षसों की भांति मांस से जीभ को तृप्त करने के लिए गरीब पशु-पक्षियों को धर्म के नाम पर-अरे, माता के भोग के नाम पर मारते तुम्हें शर्म नहीं आती ? मानो उन्हें कोई कष्ट ही नहीं होता। याद रखो, वे सब तुमसे बदला लेंगे। और तब तुम्हें अपनी करनी पर निरुपाय होकर “हाय तौबा” करना होगा। अतएव सावधान ! माता के नाम पर गरीब निरीह पशु-पक्षियों का बलि देना तुरन्त बन्द कर दो। माता के पवित्र मंदिरों को उसी की प्यारी सन्तान के खून से रंगकर माँ के अकृपा भाजन मत बनो।

“बलिदान” जरूर करो, परन्तु करो अपने स्वार्थ का और अपने दोषों का। माँ के नाम पर माँ की दुखी सन्तान के लिए अपना न्यायोपार्जित धन दान कर धन का बलिदान करो। माँ की दुखी सन्तान का दुख दूर करने के लिए अपने सारे सुखों की, अपने प्यारे शरीर की भी बलि चढ़ा दो निष्काम भाव से माँ के चरणों पर अपना सारा धन, जन, बुद्धि, बल, ऐश्वर्य, सत्ता और साधन, उसकी दीन-हीन, दुखी, दलित सन्तान को सुखी करने के लिए। तब तुमपर माँ की कृपा होगी। माँ के पुलकित हृदय से जो आशीर्वाद मिलेगा, माँ की गद्गद् वाणी तुम्हें अपने दुखी भाईयों की सेवा करते देखकर जो स्वाभाविक वरदान देगी उससे तुम निहाल हो जाओगे। तुम्हारे लोक-परलोक दोनों उत्तम हो जायेंगे। तुम प्रेय और श्रेय दोनों को अनायाश पा जाओगे, माँ तुम्हें गोद में लेकर तुम्हारा मुख चुमेगी और फिर तुम कभी उसी शीतल-सुखद नित्यानन्द मयपरम धाममय गोद से नीचे नहीं उतरोगे।

“बलिदान” करना है तो-

बलि चढ़ाओ काम की, क्रोध की, लोभ की, हिंसा की, असत्य की और इन्द्रिय विषया शक्ति की। माँ तुम्हारी इन चीजों को नष्ट कर दे-ऐसी माँ से प्रार्थना करो। माँ के चरण रज रूपी तीक्ष्ण धार तवार से इन दुर्गुण रूपी असुरों को बलि चढ़ा दो। अथवा प्रेम की कटारी से ममत्व और अभिमान रूपी राक्षसों की बलि दे दो।

तुम कहोगे फिर माँ के हाथ में “नरमुण्ड” क्यों है ? माँ भैसे को क्यों मार रही हैं ? क्या वे माँ के बच्चे नहीं हैं ? उन अपने बच्चों की बलि माँ क्यों स्वीकार करती हैं ? तुम इसका रहस्य नहीं समझते। उनकी बलि दूसरा कोई चढ़ाता नहीं, वे स्वयं आकर बलि चढ़ जाते हैं। अवश्य ही वे भी माँ के बच्चे हैं, परन्तु वे ऐसे दुष्ट हैं कि माँ के दूसरे असंख्य निरपराध बच्चों को दुःख देकर-उनके गले काटकर स्वयं राजा बने रहना चाहते हैं, स्वयं माँ लक्ष्मी को भोग्या बनाकर मातृगामी होना चाहते हैं, माँ उमा से विवाह करना चाहते हैं, ऐसे दुष्टों को भी माँ मारना नहीं



अमित पाकेट बुक्स

चाहती, शिव को दूत बनाकर उनको समझाने के लिए भेजती। पर जब वे किसी प्रकार नहीं मानते, तब दयापरवश हो उनका उद्धार करने के लिए उनको बलि के लिए आवाहन करती हैं और वे आकर जलती हुई अग्नि में पतंगों की भांति माँ के चरणों पर चढ़ जाते हैं।

माँ दूसरे बालकों को आश्वासन देने और ऐसे दुष्टों को शासन में रखने के लिए ही “मुण्डमाला” धारण करती हैं। मारकर भी उनका उद्धार करती हैं। इन असुरों की इस बलि के साथ तुम्हारी आज की यह स्वार्थ पूर्ण बकरे और पक्षियों की निर्दयता और कायरता पूर्ण बलि से कोई तुलना नहीं हो सकती। हाँ, यह तुम्हारा आसुरी पन, राक्षसी पन, अवश्य है, और इसका फल तुम्हें भोगना पड़ेगा। अतएव राक्षस न बनो, माँ की प्यारी-दुलारी सन्तान बनकर उसकी सुखद गोद में चढ़ने का प्रयत्न करो।

राग द्वेष पूर्वक किसी का बुरा करने के लिए माँ की आराधना कभी न करो। याद रखो, माँ तुम्हारे कहने से अपनी सन्तान का बुरा नहीं कर सकती। जो दूसरे का बुरा चाहेगा, उसकी अपनी बुराई होगी। स्त्री वशीकरण, मारण, मोहन, उच्चाटन आदि के लिए भी उनको मत पूजो, उन्हें पूजो दैवी गुणों की उत्पत्ति के लिए, सबकी भलाई के लिए अथवा मोक्ष के लिए।

पाठकों ! साधना हो या उपासना, इनमें षोडशोपचार पूजन इष्टदेव का करना अत्यन्त जरूरी है और इस पूजा में “बलिदान” एक प्रधान उपचार है, इसके बिना पूजा पूरी ही नहीं होती। इसका कारण यह है कि साधक ने यदि साधना के अन्त में, पूजक ने पूजा के अन्त में इष्टदेव में अपना सब कुछ बलिदान देकर उपाध्यदेव से अपना भेद-भाव मिटा न दिया तो पूजा की पूर्णता ही क्या हुई ? इसी कारण “बलिदान” पूजा का प्रधान अंग है। बलिदान के बिना न जगन्माता ही प्रसन्न होती और न भारत माता ही प्रसन्न हो सकती है। जिस देश में जितने बलिदान करने वाले देश सेवक, देश नेता उत्पन्न होते हैं, उस देश की उतनी ही सच्ची उन्नति होती है।

यह बलिदान चार प्रकार का होता है—

सबसे उत्तम कोटि का बलिदान “आत्म बलिदान” कहलाता है। इसमें साधक जीवात्मापन को काटकर परमात्मा पर आहुति चढ़ा देता है। इस बलिदान के द्वारा परमात्मा से अज्ञानवश जीवात्मा की जो पृथकता दिखती थी वह एक बारगी ही नष्ट हो जाती है और साधक स्वरूप स्थित होकर अद्वितीय ब्रह्म का साक्षात्कार करता है। जब तक यह न हो सके तब तक द्वितीय कोटि का बलिदान करना चाहिए। इसमें कामरूपी बकरे, क्रोध रूपी भेड़, मोह रूपी महिष आदि का बलिदान किया जाता है। अर्थात् षडरिपु का बलिदान ही द्वितीय कोटि का बलिदान है। तृतीय कोटि में, इतना न हो सकने पर किसी इन्द्रिय प्रिय वस्तु का बलिदान होता है। प्रत्येक विशेष पूजा के अन्त में जिसको जिस वस्तु पर लोभ है उसका बलिदान अर्थात् संकल्प पूर्वक त्याग कर देना चाहिए। यही तृतीय कोटि का बलिदान है। इस प्रकार से मिठाई, प्याज-लहुसन, मादक वस्तु आदि के प्रति आसक्ति छूट सकती है। यदि ऐसा भी नहीं हो सके तो क्रमशः छुड़ाने के लिए चतुर्थ कोटि का बलिदान है।



महाकाल संहिता में “बलि” शब्द का रहस्य इस प्रकार उपदेशित किया गया है—  
सात्विको जीव हस्यां वै कदाचिदपि नाचरेत् ।

इक्षुदण्डश्च कुवमाण्डं तथा वन्य फलादिकम् ॥

क्षीरपिण्डेः शीलचूर्णे पशुं कृत्वा चरेद्विलिम् ।

हिन्दी अनुवाद—“सात्विक अधिकार के उपासक कदापि पशु बलि देकर जीव हत्या नहीं करते, वे ईख, कोहड़ा तथा वन्य फलों की बलि देते हैं। अथवा खोआ, आटा या चावल के पिण्ड का पशु बनाकर बलि देते हैं। यह सब भी रिपुओं (दुष्टों) के बलिदान का निमित्त मात्र ही है।”

महानिर्वाण तन्त्रानुसार—

काम क्रोधो पशु इमावेव मनसा बलिमर्पयेत् ।

काम क्रोधो विघ्नकृतौ बलिं दत्वा जपं चरेत् ॥

हिन्दी अनुवाद—“काम और क्रोध रूपी दोनों विघ्नकारी पशुओं का बलिदान करके उपासना करनी चाहिए। यही शास्त्रोक्त बलिदान रहस्य है।”

### देवि-देवताओं की साधना में षोडशोपचार पूजन की प्रधानता और षोडशोपचार पूजन का अर्थ

सिद्धि-साधना करने वाले साधकों ! किसी भी देवी-देवताओं की सिद्धि साधना आरम्भ में उपास्य देव की षोडशोपचार पूजन करना अति आवश्यक होता है। इस पूजन के बिना साधना सम्पन्न नहीं हो सकती। षोडशोपचार पूजन का अर्थ होता है—“सोलह उपचारों द्वारा पूजन” ये सोलह उपचार निम्न प्रकार है—

1. आवाहन, 2. आसन, 3. पाद्य, 4. अर्घ्य, 5. आचमन, 6. स्नान,
7. वस्त्र, 8. यज्ञोपवीत, 9. चन्दन, 10. अक्षत, 11. पुष्प, 12. सिन्दूर,
13. पान-सुपारी, 14. धूप-दीप, 15. नैवेद्य और 16. दक्षिणा एवं प्रदक्षिणा।

उपासको ! इन षोडशोपचार पूजन में एवं सिद्धि साधना में निम्नलिखित पूजन सामग्रियों की आवश्यकता होती है—

### पूजन सामग्री

महाकाली साधना में :- गुरु द्वारा प्राप्त सिद्ध गुरु कवच यंत्र, आम की लकड़ी से बना काले रंग से बना सिंहासन (यदि प्रतिमा स्थाई रूप से मंदिर में प्रतिष्ठित हो तो सिंहासन की आवश्यकता नहीं) सिंहासन पर बिछाने हेतु काला नवीन वस्त्र, माता हेतु काली साड़ी व अन्य वस्त्र, श्रृंगार की वस्तुएँ, पूजन सम्पन्न कराने वाले पुरोहित के लिए एवं साधक के लिए नवीन वस्त्र (पुरोहित के लिए धोती एक जोड़ा, बनियान, चादर, तौलिया और साधक के लिए काली धोती व काला चादर, जनेऊ-10, लाल अबीर, (गुलाल) गेहूँ का आटा, पान पत्ता,



सुपारी, काले तिल, सिन्दूर, लाल चन्दन, गाय का घी, धूप, सुगन्धित अगरबत्ती, रूई, कपूर, पंचरत्न, सर्वोसधि, कलश हेतु मिट्टी का घड़ा, पानी वाला नारियल-1, सुखा नारियल-1, केले, फल 5 तरह का, लड्डू, फूल माला, पुष्प, बिल्वपत्र, आम का पल्लव, केले का पत्ता, गंगाजल, अरघी, पंचपात्र, कांशे का कटोरी-2, थाली-2, ग्लास-2, आसन कम्बल का-2, चौमुखी दीपक, रुद्राक्ष की 108 दाने वाली पवित्र माला, आम की लकड़ी, माचिस, दुर्वादल, गाय का गोबर, शहद, गाय का दही, गाय का कच्चा दूध, शक्कर (गुड़) काली माता की तस्वीर, आरती स्टैण्ड, साधना की पुस्तक, जौ, अभिषेक पात्र, विग्रह को पोछने हेतु काला वस्त्र, शंख, केसर, पंचमेवा, मोली, सात रंगों में रंगाया चावल, भेंट में देने हेतु द्रव्य आदि।

## पूजा के कुछ आवश्यक नियम

आसन समर्पण में—आसन के ऊपर पाँच पुष्प भी रख लेने चाहिए।

पाद्य में—चार पल जल और उसमें श्यामाघास, (दूर्व) कमल और अपराजिता देनी चाहिए।

अर्घ्य में—चार पल जल और गन्ध-पुष्प, अक्षत (चावल) दूर्वादल, काले तिल, कुशा का अग्र भाग तथा श्वेत सरसों देना चाहिए।

आचमनीय में—छः पल जल, जायफल, लौंग और कंकोल का चूर्ण देना चाहिए।

मधुपर्क में—कांश्य पात्र स्थित घृत, मधु (शहद) और दधि (दही) देना चाहिए।

स्नान कराने हेतु (विग्रह को)—पचास पल जल का विधान है।

वस्त्र—जोड़ा देना चाहिए।

आभरण—स्वर्ण निर्मित हों और उसमें मोती आदि जड़े हों।

गन्ध द्रव्य में—चन्दन, अगर, कपूर आदि एक में मिला दिये गये हों। एक पल के लगभग उनका परिमाण कहा गया है।

पुष्प—पचास से अधिक हों और अनेक रंग के हों।

धूप—गुग्गल का हो और कांश्य पात्र में निवेदन किया जाए।

नैवेद्य—एक पुरुष के भोजन योग्य वस्तु होनी चाहिए।

दीप—कपास की बत्ती से कपूर आदि मिलाकर बनाया जाये। बत्ती की लम्बाई चार अंगुल के लगभग हो और दृढ़ हो। दीप के साथ “शिलापिष्टका” भी उपयोग करना चाहिए।

दूर्वा और अक्षत की संख्या—सौ से अधिक समझनी चाहिए।

एक-एक सामग्री अलग-अलग पात्र में रखी जाए। वे पात्र सोने, चांदी, तांबे पीतल या मिट्टी के हों। व्यवस्था अपनी शक्ति अनुसार ही करनी चाहिए। जो वस्तु अपने पास नहीं हो, उसके लिए चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं और अपनी शक्ति सामर्थ्य के अनुसार जो सामग्री मिल सकती है, उनके प्रयोग में आलस्य, प्रमाद और संकीर्णता नहीं करनी चाहिए।

(नित्य पूजा प्रकाश से उद्धृत)



## ( तृतीय भाग )



# माता महाकाली षोडशोपचार पूजन एवं दश महाविद्या साधना खण्ड

### महाकाली साधना

साधकों ! सावधान !! माता महाकाली की साधना समस्त साधनाओं में से सर्वोत्तम साधना है और अति जटिल व कठिन साधना है, अतः छोटी-छोटी साधनाएँ सम्पन्न करने के पश्चात् ही यह महान साधना करने की हिम्मत करें।

यह महान साधना करने के पश्चात् साधक समस्त कामनाओं की पूर्ति करने में सक्षम हो जाता है। साथ ही शत्रुओं पर विजय, मुकद्दमें में जीत धन की प्राप्ति, प्रगति, व प्रसन्नता के साथ अन्त काल में मोक्ष की प्राप्ति होती है।

महाकाली की साधना के लिए सर्वोत्तम स्थान श्मशान भूमि है। श्मशान भूमि एक ऐसा स्थान है, जहाँ जाते ही संसार की नश्वरता का आभास होता है और वैराग्य की भावना जागृत होती है।

शास्त्रों का मत है—

भोजनांते मैथुनांते श्मशानांते च या मते ।

सामते सर्वदा चेतसात् नरो नारायणा भवेत् ॥

हिन्दी अनुवाद—“भोजन के पश्चात् पेट भर जाने पर जिस प्रकार भोजन से जीव उपरांत हो जाता है, जिस प्रकार स्त्री सम्भोग के पश्चात् कुछ समय सम्भोग से मन हट जाता है, उसी प्रकार श्मशान में किसी दाह कर्म में जाने के पश्चात् कुछ समय संसार से वैराग्य हो जाता है। मस्तिष्क का यह विचार थोड़ी देर के लिए होता है। यदि ऐसा विचार सदैव रह जाये तो नर साक्षात् नारायण हो जाये।”

वास्तविकता यह है कि श्मशान भूमि में साधना करने से जातक का मन माया मोह से बाहर होकर साधना में पूर्ण नियंत्रित हो जाता है।

यह साधना दिवाली की रात्रि में, अमावस्या की रात्रि में या किसी भी



शनिवार की रात्रि में बारह बजे आरम्भ करनी चाहिए। साधना आरम्भ करने के लिए तिथि, मुहूर्त आदि का शुभ लग्न पंडित से निकलवा लेना चाहिए और यह महान साधना का प्रारम्भिक पूजन किसी योग्य वैदिक पंडित द्वारा ही सम्पन्न करावे। ये साधना 40 दिन की है। प्रथम रात्रि पूजन का शुभारम्भ पंडित से सम्पन्न करावे, फिर दूसरे दिन से स्वयं मंत्र जप करें। फिर अन्तिम दिन पंडित को बुलवा कर हवन कर्म, बिसर्जन आदि सम्पन्न करावे। बिसर्जन के बाद ब्राह्मण भोजन व कुमारी कन्याओं को भोजन करावे। ब्राह्मण की संख्या 5 और कुमारी कन्याओं की संख्या 11 होनी चाहिए।

यदि श्मशान भूमि में साधना करना मुश्किल लगे तो शिव मंदिर, काली मंदिर अथवा अपने घर के पवित्र कमरे में ही यह साधना सम्पन्न कर सकते हैं।

उपरोक्त दिन रात्रि के बारह बजे स्नानादि से पवित्र हो जावे। पूजा स्थल पर गंगाजल छिड़कर आम लकड़ी से बना, काले रंग से रंगा हुआ सिंहासन स्थापित करें। समस्त पूजन सामग्री अपने पास कर लें। सिंहासन उत्तर दिशा में स्थापित करें। स्वयं उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठे। सिंहासन उत्तर दिशा से दक्षिण तरफ रूख होगा अर्थात् आपके सामने होना चाहिए। वैदिक पंडित पश्चिम के तरफ मुख करके बैठे। बैठने हेतु साधक व पंडित दोनों ही कम्बल के आसन का प्रयोग करें। इसके बाद सिंहासन पर काला वस्त्र बिछाकर माता काली की प्रतिमा या तस्वीर स्थापित करें। इसके पश्चात् स्वयं नवीन काला वस्त्र धारण कर, पवित्र तन मन से धूप, गाय का घी और रूई की बाती का चौमुखी दीपक प्रज्वलित करें। दीपक प्रज्वलित कर माता जी के सिंहासन के सामने पास में दाहिनी ओर अक्षत पूंज पर (चावल छिड़क कर) रख दें। पूजन आरम्भ से पहले सिर पे काला रुमाल या काला तौलिया अवश्य रख लें।

याद रखें। कोई भी साधना गुरु के बिना सम्पन्न नहीं हो सकती। गुरु भी वही होना चाहिए जिसने महाकाली की साधना पूर्व सम्पन्न किए हुए हों। साधना काल में गुरु का होना भी जरूरी है। यदि गुरु स्वयं उपस्थित नहीं हो सकें तो उनके द्वारा सिद्ध किया हुआ—“सिद्ध गुरु कवच यंत्र” पूर्व ही प्राप्त कर लें। पूजन (साधना) आरम्भ से पूर्व गुरु द्वारा प्राप्त यंत्र को पवित्र जल या गंगाजल से धोकर, माता काली सिंहासन पर तांबे के प्लेट में स्थापित करें।

इसके बाद साधना का प्रथम चरण षोडशोपचार पूजन आरम्भ करें।

### षोडशोपचार पूजन आरम्भ

नोट—पूजन आरम्भ से पूर्व दाहिने हाथ में अंगूठे से चौथी उँगली में सोने, चांदी, तांबे या कुशा की बनी पवित्री धारण करें और पवित्री धारण करते समय निम्नलिखित मंत्र का उच्चारण करें—



### पवित्री धारण मंत्र

ॐ पवित्रे स्थौ वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुणाम्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रशिमभिः । तस्यन्ते पवित्रपते पूतरस्य यत्कामः पुणे तच्छकेयम् ॥

नोट—पवित्री धारण करने के बाद दाहिने हाथ की अंजुली में गंगाजल लेकर निम्न मंत्र पढ़े और मंत्र समाप्ति के पश्चात् अंजुली का जल अपने शरीर पर छिड़क लें।

### शरीर पवित्र करने का मंत्र

ॐ अपिपत्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरते पुण्डरी काक्षं स बाह्यभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षं पुनातु ।

हिन्दी अनुवाद—कोई पवित्र हो, अपवित्र हो अथवा किसी भी अवस्था में क्यों न हो, जो “पुण्डरी काक्ष” का स्मरण करता है, वह बाहर और भीतर से भी परम पवित्र हो जाता है। अतः हे ॐ रूप पुण्डरी काक्ष हमें पवित्र करें।

नोट—अब दीपक की पूजा करें।

### प्रज्वलित दीप पूजन मंत्र

“ॐ ज्योतिषे नमः”

उपरोक्त मंत्र मुख से बोलकर—दीपक के पास जल, अक्षत, पुष्प, चन्दन, बिल्वपत्र, नैवेद्य चढ़ावें। फिर उस दीप में माता काली रूप की भावना करते हुए हाथ जोड़कर यह श्लोक बोलें—

“भो दीप देवी रूपस्त्वं कर्म साक्षी ह्यविघ्न कृत ।

यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥”

हिन्दी अनुवाद—“हे दीप ! आप माता काली के रूप हैं, कर्म के साक्षी तथा विघ्न के निवारक हैं। जब तक पूजन कर्म पूर्ण न हो जाये, तब तक आप सुस्थिर भाव से सन्निकट रहें।” नोट—अब निम्न मंत्र पढ़कर शिखा (टीक) बांधें—

### शिखा बन्धन मंत्र

ॐ मानस्तोके तनये मानङ्ग आयुषि मानौ गोषु मानोऽश्वेषु रीरिषः ।

मानो वीरान रूद्र भामिनो वधीर्है विष्मन्तः सदमित्वा हवामहे ॥

नोट—अब “आचमन” करें। आचमन क्रिया में दाहिने हाथ की अंजुली में जल लेवें और मंत्र पढ़कर वह जल अपने होंठ से लगाकर एक बूंद मुख में लें। आचमन का जल कंठ से नीचे नहीं उतरना चाहिए। यह क्रिया नीचे लिखित मंत्र द्वारा क्रमशः तीन बार करें।

### आचमन मंत्र

ॐ केशावय नमः ।

ॐ नाराणाय नमः ।

ॐ माधवाय नमः ।

तत्पश्चात्—



“ॐ हषिकेषवाय नमः”—मंत्र पढ़कर हाथ धो लें। इसके पश्चात् मस्तक पे त्रिपुण्ड चन्दन अथवा तिलक के समान लाल चन्दन निम्न मंत्र पढ़कर धारण करें।

### मस्तक चन्दन लेपन मंत्र

ॐ चन्दनस्य—महत्वपुण्यं पवित्र पाप नाशनम्।

आपदं हरते नित्यं लक्ष्मी स्तिस्थि सर्वदा ॥

नोट—अब वैदिक पुरोहित यजमान के हाथ में निम्न मंत्र पढ़कर मौली (रक्षा सूत्र) बांधें।

### रक्षा सूत्र बन्धन मंत्र

ॐ मंगलम् भगवान विष्णु मंगलम् गरुडऽध्वजः।

मंगलम् पुण्डरी काक्षं मंगलाय च तनो हरिः ॥

नोट—अब दोनों हाथ जोड़कर नीचे लिखित “विनियोग मंत्र” का जप करें अर्थात् पढ़ें—

### विनियोग मंत्र

अस्य श्री महाकाली मन्त्रस्य भैरव ऋषिः, उष्णिग—

छन्दः, महाकाली देवता, ह्रीं बीजं हुं शक्ति, क्रीं कीलकं

मम अभिष्ट सिद्धि यर्थे जपे विनियोगः ॥

नोट—अब “न्यास” करें। न्यास कई प्रकार के होते हैं, किन्तु महाकाली के किसी भी रूप की साधना हो या दस महाविद्याओं की साधना, इनमें ऋष्यादि न्यास, हृदयादि न्यास अंगन्यास, करन्यास मुख्य हैं। न्यास विधि में दाहिने हाथ की पांचों उँगलियों द्वारा अंगों का क्रमशः स्पर्श करने का विधान है।

सर्वप्रथम ऋष्यादि न्यास सम्पन्न करें—

### ऋष्यादि न्यास

“ॐ भैरव ऋषये नमः शिरसि”—दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों से सिर का स्पर्श करें।

“ॐ उष्णिग छन्दसे नमः मुखे”—मुख स्पर्श करें।

“ॐ महाकालिका देवतायै नमः हृदि”—हृदय का स्पर्श करें।

“ॐ ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये”—मल निकाश मार्ग का स्पर्श करें।

“ॐ शक्तये नमः पादयोः”—दोनों घुटनों एवं पैर के दोनों पंजों को स्पर्श करें।

“ॐ क्रीं कीलकाय नमः नाभौः”—नाभिस्थल का स्पर्श करें।

“ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे”—इस क्रिया में दोनों हाथों की पाँचों उँगलियों से दोनों भुजाओं एवं समस्त बाकी अंगों का स्पर्श करें।

नोट—अब “करन्यास” क्रिया सम्पन्न करें। पद्मासन की मुद्रा में दोनों हाथ दोनों घुटनों पर रखकर यह न्यास सम्पन्न किया जाता है। यह क्रिया दोनों हाथों की हथेलियों एवं उँगलियों से की जाती है।



## करन्यास मंत्र और विधि

“ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः”—मंत्र बोलकर तर्जनी को मोड़कर अंगूठे की जड़ से जहां मंगल का क्षेत्र है, वहां लगावें।

“ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः”—मंत्र उच्चारण करते हुए अंगूठे की नोक से तर्जनी के छोर का स्पर्श करें।

“ॐ कुं मध्यमाभ्यां नमः”—मंत्र उच्चारण करते हुए अंगूठे से मध्यमा के अन्तिम भाग का स्पर्श करें।

“ॐ क्लै अनामिकाभ्यां नमः”—मंत्रोच्चारण करते हुए अनामिका का स्पर्श करें।

“ॐ क्रौं कनिष्ठकाभ्यां नमः”—मंत्रोच्चारण करते हुए कनिष्ठका उँगली के अन्तिम भाग के साथ अंगूठे की नोक का स्पर्श करें।

“ॐ क्रः करतल पृष्ठाभ्यां नमः”—यह मंत्र पढ़कर दोनों हाथों की हथेलियों को एक दूसरे के ऊपर नीचे दो बार घुमाईये।

नोट—अब “हृदययादि न्यास” क्रिया सम्पन्न करें। पद्मासन की मुद्रा में बांया हाथ घुटनों पर रखे हुए दाहिने हाथ की पाँचों उँगलियों से निम्नलिखित अंगों का स्पर्श करें—

## हृदयादि न्यास मंत्र और विधि

“ॐ क्रां हृदयाय नमः”—दाएँ हाथ की पाँचों उँगलियों से हृदय का स्पर्श करें।

“ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा”—मस्तक का स्पर्श करें।

“ॐ कुं शिखायै वषट्”—शिखा स्थान का स्पर्श करें।

“ॐ क्लै कवचाय हुम्”—दोनों हाथों से दोनों भुजाओं का स्पर्श करें।

“ॐ क्रौं नेत्रयाय वौषट्”—सीधे हाथ से तीनों नेत्रों का स्पर्श करें। तीसरा नेत्र मस्तक के मध्य में माना जाता है।

“ॐ क्रः फट् स्वाहा”—बाएँ हाथ पर दाहिने हाथ का सीधा पंजा मारकर “फट्” की ध्वनि करें, अर्थात् एक ताली बजाएँ।

नोट—इसके पश्चात् पूजन कराने वाले आचार्य का वरण करें। इस क्रम में अपने दोनों हाथों पर वैदिक पंडित के लिए लाए गये वस्त्र, वस्त्र के ऊपर पान का पत्ता, सूपारी (5-5) यज्ञोपवीत तथा द्रव्य रखकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें। मंत्र समाप्ति के पश्चात् हाथ की वस्तुएँ आचार्य के हाथों में प्रदान करें।

## आचार्य वरण मंत्र

ॐ अद्य अमुक गोत्रोत्पन्न अमुक प्रवरान्वितः अमुक नाम शर्माऽहं अमुक गोत्रोत्पन्नं अमुक प्रवरान्वितं शुक्ल यजुर्वेदान्तर्गत वाजसनेय माध्यन्दिनी यशाखाध्यायितं अमुक शर्माणं ब्राह्मणं अस्मिन् महाकाली सिद्धि कर्मणि एमिः वरण वस्त्र द्रव्यैः आचार्य त्वेन त्वां अहं वृणे।

नोट—वरण सामग्री लेते समय आचार्य को “वृतोस्मि” शब्द का उच्चारण करना चाहिए। अब साधक हाथ जोड़कर आचार्य की वन्दना करें।



## आचार्य प्रार्थना मंत्र

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः ।

तथा त्वं मम यज्ञेस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत ॥

नोट—अब आचार्य साधक द्वारा प्रदत्त नवीन वस्त्र धारण करें, तत्पश्चात् साधक गोल सूपारी में मोली लपेट कर, महाकाली सिंहासन के सामने केले के पत्ते पर रखें और उनपर भगवान गणेश के रूप का ध्यान कर पूजन करें। किसी भी उपासना या तांत्रिक सिद्धि साधना आरम्भ में सर्वप्रथम भगवान श्री गणेश की पूजा की जाती है, तभी साधक को उपासना या सिद्धि साधना में सफलता मिलती है।

## श्री गणेश पंचोपचार पूजन

[ आवाहन मंत्र ]

गदा बीज पूरे धनुः शूल चक्रे सरोजोत्पले पाशधान्या ग्रदंतान् ।

कुरैः संदधानं स्वशुंडा ग्राजन मणीकुंभ मंकाधि रूढं स्वपत्न्या ॥

सरोजन्मा भूषणानाम्भ रेणोज्ज्वलं द्रुस्तन्वया समालिंगिताम् ।

करीद्राननं चंद्रचूडं त्रिनेत्र जगन्मोहनं रक्तकांतिं भजेत्तमम् ॥

भावर्थ—“अपने दाएँ हाथों में गदा, शूल, बीजपूर, चक्र, पद्म व बाएँ हाथों में धनुष, कमल और पाश, धान्य मंजरी एवं दन्तधारी, मणि कलश से सुशोभित, सूंड के अग्र भाग वाले, अंक में अपनी पत्नी को बैठाए हुए तीन नेत्रों वाले, गजमुखी, चंद्रकला धारी, त्रैलोक्य को मोह लेने वाले, रक्तवर्णी कांति से शोभायमान भगवान गणपति मेरे पूजन स्थल में सिद्धि साधना में सफलता देने हेतु दयाकर पधारने की कृपा करें। मैं आपका ध्यान करता हूँ।”

नोट—अब मोली लिपटे सूपारी के ऊपर क्रमशः जल, अक्षत, मोली, चन्दन, बिल्वपत्र पुष्प और नैवेद्य से क्रमशः भगवान गणेश का पूजन करें।

ॐ गंगाजले स्नानियम् समर्पयामि श्री गणेशाय नमः ।

ॐ अक्षतम् समर्पयामि भगवते श्री गणपति नमः ।

ॐ वस्त्रम् समर्पयामि भगवान श्री गणपति नमः ।

ॐ चन्दनम् समर्पयामि भगवन गणपति यहा गच्छ इहतिष्ठ ।

ॐ बिल्वपत्रम् समर्पयामि भगवते श्री गणपति नमः ।

ॐ पुष्पम् समर्पयामि भगवन श्री गणेशाय नमः ।

ॐ नैवेद्यं समर्पयामि भगवान गणपति यहा गच्छ इहतिष्ठ ।

नोट—अब दोनों हाथ जोड़कर भगवान श्री गणेश की अराधना करें।

## श्री गणेश अराधना मंत्र

विश्वेश माधवं दुन्दि दण्डपाणि ।

बंदे काशी गुह्या गंगा भवानी मणिक कीर्णकाम् ॥



वक्रतुण्डं महाकाव्य कोटि सूर्य सम प्रभ।  
 निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥  
 सुमश्वशयैव दन्तस्य कपिलो गर्जकर्ण कः।  
 लम्बोदरस्य विकटो विघ्ननासो विनायकः ॥  
 धूम्रकेतु र्गणाध्यक्ष तो भालचन्द्रो गजाननः।  
 द्वादशैतानि नमामि च पठेच्छणु यादपि ॥  
 विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।  
 संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।  
 शुक्लां वर धरं देवं शशि वर्णं चतुर्भुजम्।  
 प्रसन्न वदनं ध्यायेत सर्वविघ्नोप शान्तये ॥  
 अभित्सितार्थ सिद्ध्यर्थ पूजितो य सुरासुरैः।  
 सर्व विघ्नच्छेद तस्मै गणाधिपते नमः ॥

हिन्दी अनुवाद—“हे विश्वनाथ, माधव दुण्डिराज गणेश, दण्डपाणि, भैरव, काशी, गुह्या, गंगा तथा भवानी कर्णिका का मैं वन्दना करता हूँ। टेढ़ी सूँड वाले गणपति देव। आप सर्वदा सदैव समस्त कार्यों में मेरे विघ्नों का निवारण करें।

सुमुख, एकदन्त, कपिल, गजकर्ण, लम्बोदर, विकट, विघ्ननाशक, विनायक, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष, भालचन्द्र और गजानन—ये विवाह, गृह प्रवेश, यात्रा, संग्राम तथा संकट के अवसर पर इन बारह नामों का पाठ और श्रवण करता है, उसके कार्य में विघ्न उत्पन्न नहीं होता है।

शक्ल धारण करने वाले चन्द्रमा के समान और गोरे, चार भुजाधारी और प्रसन्न मुख वाले गणपति देव, मैं आपका ध्यान करता हूँ। हमारे सम्पूर्ण विघ्नों को शान्त करें।

देवताओं और असुरों ने भी अभिष्ट मनोरथ सिद्धि के लिए जिनकी पूजा की है, जो विघ्न बाधाओं को हरने वाले हैं, उन गणपति जी को नमस्कार है।”

नोट—साधकों ! साधना में सफलता के लिए श्री गणेश पूजन के पश्चात् “सिद्ध गुरु” का पूजन करें। साधना काल के आरम्भ में यदि गुरुदेव स्वयं उपस्थित हों तो उन्हें पीले रंग का वस्त्र (धोती 1 जोड़ा, चादर-1, बनियान-कुर्ता-1 1, जनेऊ और द्रव्यादि) प्रदान कर, उन्हें कारण कराकर, उनके चरणों की पूजा करें। यदि गुरुदेव उपस्थित न हों तो उनके द्वारा प्रदत्त “सिद्ध गुरु कवच यंत्र” तांबे के प्लेट में सिंहासन पर स्थापित कर, उन्हें गुरु स्वरूप समझकर पूजन करें। गुरु पूजन के बिना और श्री गणेश आराधना के बिना कोई भी साधक सिद्धि साधना में सफल हो ही नहीं सकता, अतः अवश्य ही गुरु पूजन करें।

इस पूजन के क्रम में सर्वप्रथम गुरु का “आवाहन” करें। गुरु यदि पूजन स्थल पर मौजूद हों तो गुरु में दिव्य शक्ति का आवाहन करें। यूँ तो गुरु साधारण मानव दिखलाई पड़ते हैं, परन्तु जब गुरुदेव अपने आसन पर विराजमान होते हैं तो



अमित पाकेट बुक्स

उनमें शक्ति का आवाहन होता है, तब वे साधारण इन्सान ही नहीं होते बल्कि उनमें ब्रह्मा, विष्णु और महेश से भी बढ़कर शक्ति आ जाती है। यदि गुरु उपस्थित न हों तो “गुरु कवच यंत्र” में गुरु स्वरूप का आवाहन करें।

### श्री गुरुदेव आवाहन मंत्र

सहस्रदल पद्मस्थ मंतरात्मा नमुज्ज्वलम् ।  
तस्योपरि नादविंदो मध्ये सिंहासनोज्ज्वले ॥  
चिंतयेन्निज गुरुं नित्यं रजता चल सन्निभम् ।  
वीरासन समासीनं मुद्रा भरण भूषितम् ॥  
शुभ्रमाल्यां वरधरं वरदा भय पाणिनम् ।  
वामोरुशक्ति सहितं कारुण्येना वलंकितम् ॥  
प्रियया सब्यहस्तेन धृत चारु कलेवरम् ।  
वामेनोत्पल समायुक्तं स्मरेतन्नाम पूर्वकम् ॥

भावार्थ—हजार दल (पंखुड़ियों) युक्त कमल के बीच में ज्योतिस्वरूपा अंतरात्मा का निवास है। उसके ऊपरी भाग पर नाद व बिंदु के मध्य में उज्ज्वल सिंहासन पर श्री गुरु विराजमान हैं। चांदी के पर्वत समशुभ्र निजगुरु का सदैव स्मरण करता हूँ। हे गुरु देव ! आप सदैव वीरासन मुद्रा में स्थित रहते हैं। आप मुद्रा भरणादि से विभूषित हैं। आप श्वेत माला धारण करते हैं और वस्त्र भी श्वेत हैं। आपके हाथ वर और अभय मुद्रा में उठे हैं। वाम उरु (बाईं जांघ) पर शक्ति है तथा आप करुणापूरित नेत्रों से देख रहे हैं। लाल वस्त्रों से सुशोभित व हाथ में कमल लिये प्रिया (लक्ष्मी) अपने दाएं हाथ से कलेश्वर धारण किए हैं व लाल वस्त्रों से सुशोभित व ज्ञान शक्ति से आप सुशोभित हैं। ऐसे गुरुदेव का मैं आवाहन करता हूँ।

नोट—इसके पश्चात्—सिद्ध गुरु कवच यंत्र पर जल, अक्षत, चन्दन, पुष्प, बिल्वपत्र, नैवेद्य आदि से पूजन करें। यह “पंचोपचार पूजन” उसी प्रकार करें, जिस प्रकार “गणेश पूजन” में पंचोपचार पूजन सम्पन्न किए हैं। पूजन में श्री गणेशायः नमः के बदले “श्री गुरुवे नमः” बोले। इसके पश्चात् गुरु देव का ध्यान करें।

### श्री गुरुदेव ध्यान मंत्र

गुरुः ब्रह्मा गुरुः विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः ।  
गुरुः साक्षात् पर ब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥  
ध्यानमूलं गुरोः मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम् ।  
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरो कृपा ।  
न गुरोरधिकं तत्त्वं न गुरोरधिकं तपः ।  
गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्सम्पूज्यते गुरुः ॥  
नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रतक्षं शिवं रूपणिम् ।



शिरसा यज्ञपीठस्थं तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥  
 त्वं पिता त्वं च मे माता त्वं बन्धु त्वं च देवता ।  
 त्वं मोक्ष प्राप्ति हेतुश्च तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

इसके पश्चात् रुद्राक्ष की माला से नीचे लिखित मंत्र का 11 माला 40 दिन नित्य ही जप करें-

“ॐ क्रीं हूं ह्रीं फट् स्वाहा ।”

नोट-40 वें दिन की रात्रि में जप समाप्त होने के पश्चात् हवन करें।

साधकों ! उपरोक्त सम्पूर्ण नियमानुसार पूजन, जप सम्पन्न करने के पश्चात् आपके द्वारा की गई महाकाली साधना सम्पन्न हुई। इसी साधना काल के मध्य माता महाकाली की स्वप्न में अथवा साक्षात् दर्शन भी आपको प्राप्त होंगे और आप निहाल हो जायेंगे। तत्पश्चात् आप अपने कार्य हेतु या अन्य परमार्थ दुखी लोगों के कार्य हेतु शनिवार के दिन भोजपत्र पर मंत्र लिखकर, सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर, पंचोपचार पूजन कर, 1 माला मंत्र जप कर किसी को प्रदान करेंगे तो उनका कार्य चमत्कारिक रूप से सफल हो जायेगा।

### हवन मंत्र

ॐ प्रजापत्ये स्वाहा, इदं प्रजापतये ।

ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदम् इन्द्राय इत्यायाधारो ।

ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये ।

ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम इत्याज्य भागौ ।

ॐ भूः स्वाहा, इदं वायवे ।

ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय ।

ॐ मंगलाय नमः, इदम् मंगलाय स्वाहा ।

ॐ बुधाय नमः स्वाहा, इदं बुधाय ।

ॐ बृहस्पतये नमः स्वाहा, इदं बृहस्पतये ।

ॐ शुक्राय नमः स्वाहा, इदं शुक्राय ।

ॐ शनये नमः स्वाहा, इदं शनये ।

ॐ राहवे नमः स्वाहा, इदं राहवे ।

ॐ केतवे नमः स्वाहा, इदं केतवे ।

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टि वर्धनम् ।

उर्वारूक मिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् । स्वाहा ॥

ॐ तत्सवितर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् स्वाहा ।

ॐ सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वाथे साधिके । शरण्ये त्र्यम्बके गौरी

नारायण नमोऽस्तुते स्वाहा ।



ॐ मंगलम् भगवान् विष्णु मंगलम् गरुडध्वज् मंगलम् पुण्डरी काक्ष  
मंगलाय तनो हरिः स्वाहा ।

ॐ "क्रीं" नमः स्वाहा ।

ॐ "ह्रीं" नमः स्वाहा ।

ॐ हौं कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा ।

"ॐ क्रीं नमः स्वाहा"—मंत्र का कमसे कम ( 1100 ) ग्यारह सौ  
आहुतियां डालें ।

नोट—उपासको ! हवन के बाद "मूर्द्धान" करें।

### मूर्द्धान मंत्र

नोट—इस क्रम में पान, सूपारी, सूखे खड़कते नारियल और बची हुई हवन  
सामग्री, गुड़ब्रव्य सहित दोनों हथेलियों पर रखकर खड़े होकर निम्न मंत्र उच्चारण  
कर हवन कुंड में डालें।

### मंत्र

ॐ मूर्द्धान दिवो अरति पृथिव्या वैश्वानर मृत मजात् मग्नि कविग्वं  
सम्भ्राजम तिथि जनानाम सन्ना पात्रं जयन्तु देवाः स्वाहा ॥

### अग्नि प्रार्थना मंत्र

हाथ जोड़कर—

ॐ श्रद्धां मेघां यशः प्रज्ञां विद्यां पुष्टि श्रियं बलम् । तेजः आयुष्य  
मारोग्यं देहि मेहव्य वाहन ॥ ततः उपविश्य श्रवेण भस्म मानीय दक्षिणा  
नामिकया गृहीत भस्मना ।

हवन भस्म शरीर के विभिन्न अंगों में लगाने का मंत्र

ॐ ऋयायुषं जमदग्ने, इति ललाटे, ( मस्तक में लगावें )

ॐ कश्यपश्य त्र्यायुषं ग्रीवायाम् । ( कंठ में लगावें )

ॐ यदेवेषुत्रया युषं हृदिः ( हृदय में लगावें )

ॐ तते अस्तु त्र्यायुषं, दक्षिणा वाहमले ( दोनों बाहु में लगावें )

नोट—अब खड़े होकर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए माता काली हवन  
कुंड सहित स्थानों के चारों तरफ पांच बार "परिक्रमा" करें।

### प्रदक्षिणा मंत्र

यानि कानि च पापानि जन्मांतर कृताणि च ।

तानि-तानि प्रणशयन्ति प्रदक्षिणा पदे-पदे ॥

नोट—उपासको ! प्रदक्षिणा समाप्ति के बाद कांशे की थाली पर पान का पत्ता  
रखकर कर्पूर जलाकर माँ को "आरती" दिखावें और इस पुस्तक के अन्तिम पृष्ठ



पर लिखी हुयी “आरती वन्दना” गावें। आरती वन्दना समाप्त होने के पश्चात् “पूजन विसर्जन” करें।

### पूजन विसर्जन मंत्र

**नोट**—दोनों हाथ से गंगाजल की गड़वी पकड़कर खड़े होकर माता काली को अन्तिम पूजन अर्घ्य प्रदान करें, साथ-साथ निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

**यान्तु देवगणाः सर्वे पूजमादाय मामकीम।**

**यजमान हितार्थाय पनराग भनाय च॥**

**नोट**—इसके पश्चात् माता महाकाली को प्रणाम करें, फिर प्रसाद वितरण करें, ब्राह्मण एवं कुमारी 11 कन्याओं को भोजन करावें। कन्याओं को एवं खासकर वैदिक पंडित को पूर्ण सन्तुष्ट कर विदा करें। तत्पश्चात् स्वयं भोजन ग्रहण करें।

माता काली की पूजा में “बकरे की बलि या भैसे की बलि” भूल से भी न चढ़ावें। बलि चढ़ाने से माता क्रोधित हो जाती हैं, इसलिए यह भूल न करें।

(वृहद षोडशोपचार पूजन सम्पन्न)

### भगवती तारा महाविद्या सिद्धि

भगवती तारा महाविद्या सिद्धि से लाभ—साधकों! वाक् शक्ति, शत्रुनाश एवं भोग—मोक्ष की सिद्धि के लिए भगवती तारा की सिद्धि—उपासना की जाती है। यह महाविद्या क्रम की दृष्टि से द्वितीया होते हुए भी अद्वितीया है और एक जटा, उग्रतारा, नील सरस्वती, तारिणी, क्रोध रात्रि रूपा आदि अनेक नामों से आगम शास्त्रों में इनके मन्त्र प्रयोग प्राप्त होते हैं। भारत में सर्वप्रथम महर्षि वशिष्ठ ने वैदिक और चीनाचार क्रम से तारा की उपासना की थी।

यह सिद्धि प्राप्त करने के बाद साधक को अर्थ की दृष्टि से कोई कष्ट नहीं रह जाता। उसके अन्दर ज्ञान, बुद्धि और शक्ति का प्रस्फुटन प्रारम्भ हो जाता है और साधक को आकस्मिक धन प्राप्त होता है। विपत्तियों में उलझा हुआ साधारण मानव अपने कर्तव्य का पालन नहीं कर सकता। ऐसे असहाय व्यक्ति को अन्य देवी-देवता रक्षक नहीं होते। उस समय माँ जगदम्बा आदि शक्ति तारा मनुष्यों की रक्षा करती हैं। भगवती तारा को विपदा हारिणी कहते हैं। ये दयालु अम्बिका अपने भक्तों के दुख निवारण के लिए सदैव तत्पर रहती हैं।

माहेश्वरी तारा की सिद्धि तीन प्रकार से होती है—सात्विक, राजस और तामस। इनमें कामना रहित सात्विक साधना ही सर्वश्रेष्ठ साधना है। वृद्ध विधान से हिंसा रहित साधना राजस कहलाती है तथा सामिष बलि सहित साधना जो कामना पूर्ति की इच्छा से की जाती है अथवा सुख—भोग सिद्धियों के लिए की जाती हैं, वह तामसिक साधना कहलाती है। सात्विक साधना से देवी की विशेष कृपा मिलती है तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है और राजस साधना से सुख—भोग स्वर्ग की प्राप्ति होती



है। तामसिक साधना से यदि साधक पथ भ्रष्ट न हुआ हो तो उसकी मनोकामना की पूर्ति अवश्य होती है, परन्तु यह अन्य विद्वानों का मानना है। तामसिक साधना, बलि प्रदान कर अर्थात् किसी निरपराध पशुओं की बलि—चढ़ाकर जो साधना की जाती है, उससे भगवती कदापि प्रसन्न नहीं हो सकती, क्योंकि वे पशु भी माँ की ही सन्तान हैं, अतः तामसिक साधना नहीं करना चाहिए।

मूल महानिर्वाण तंत्र में वर्णित है कि महाकाली महाप्रलय की अधिष्ठात्री शक्ति है और मातेश्वरी तारा “सूर्य प्रलय” की देवी हैं, वस्तुतः प्रलय करना दोनों का ही कार्य है।

श्री तारा भगवती अपनी भुजाओं में सर्प लिपटाये रहती है और शव ही इनका सिंहासन है। प्रलय काल में जहरीली गैसों से विश्व का विनाश करती है। सौर अग्नि अन्नाहुति बंद होने से प्रलय वेग से सांय—सांय करने लगती है, जो भगवती का अट्टहास है। ऐसी अवस्था में चन्द्रमा, मानव, तथा सम्पूर्ण जीव का रस बिल्कुल सूख जाता है, क्योंकि सब का रस उग्रतारा पी जाती है।

भगवती तारा के अन्य नाम—सूर्य प्रलय की अधिष्ठात्री भगवती तारा को “विपदा हारिणी” कहते हैं, क्योंकि ये जगज्जनी अपने भक्तों को कष्टों से बचाने के लिए सदैव तत्पर रहती है। भक्त की कामना के अनुसार ही इनके अनेक नाम हैं, जिनमें मुख्यतः तारा, तारिणी, तरला, त्रिपुरा, तरणी, महामाया, काल स्वरूपा, तमोरुपा, परानंदा और रजोरूपा नाम प्रमुख रूप से प्रसिद्ध हैं।

भगवती तारा के रूप—मातेश्वरी तारा चतुर्भुजा है। दोनों—दाहिने हाथों में खड़ग और कर्तरी (कैंची) धारण करती है तथा दोनों बाँए हाथों से कपाल तथा खप्पड़ धारण किए हैं। त्रिनेत्रा भगवती की जंघाएं पीले रंग की हैं। तरुण रवि (सूर्य) के समान उनका तेजस्वी है तथा जलती हुई चिता में शव पे विराजित हैं। एक पैर आगे किए वीरासन मुद्रा में बैठी हैं और व्याघ्र चर्म का कोपीन धारण किए हैं। भयंकर डरावना स्वरूप जिह्वा लपलपाती हुई चलाय समान है। समस्त भुजाओं में भयानक विषधर नाग लिपटाये रखती हैं। घोर हुंकार करती हैं, परन्तु अपने भक्तों के लिए सौम्य हैं, वरदायिनी हैं, तारिणी हैं और पालन हारिणी हैं।

साधना विधि—रौद्र रूपा शक्ति भगवती तारा की साधना साहसी, दृढ़ प्रतिज्ञ, आत्म विश्वासी, निर्भय साधक ही सम्पन्न कर सकते हैं। परन्तु सावधान! यह साधना आरम्भ करने से पूर्व तारा साधना सम्पन्न किए हुए सिद्ध गुरु की आज्ञा, उनके दर्शाए विधान का पालन अवश्य करें। जब तक सिद्ध गुरु का हाथ आपके सिर पे न हो अर्थात् जब तक गुरु का आशीर्वाद प्राप्त न करें तब तक यह साधना भूल से भी आरम्भ न करें, वरना जीवन से हाथ भी धोना पड़ सकता है।

यह साधना शुभ मुहूर्त में, सर्वार्थ सिद्धि योग के शनिवार की रात्रि में दीपावली, होली, वर्ष के दोनों नवरात्रों की अष्टमी की रात्रि, शिव चतुर्दशी की रात्रि अथवा सूर्य ग्रहण या चन्द्र ग्रहण के समय आरम्भ करें। रात्रि के तृतीय प्रहर में साधना प्रारम्भ करें।



साधना देवी मंदिर, काली मंदिर, शिवालय श्मशान भूमि या घर के पवित्र कमरे में भी सम्पन्न की जा सकती है। सर्व प्रथम स्नान से पवित्र होकर बिना सिलाई किया हुआ लाल नवीन वस्त्र धारण करें। लाल वस्त्र ही शरीर पे शाल के रूप में लिपटा लें। लाल अंगोछा गले में धारण करें। पूजन स्थल पर आग की लकड़ी से बना, लाल रंग से रंगा हुआ सिंहासन स्थापित कर उस पर लाल रंग का आसन बिछाकर मातेश्वरी तारा की तस्वीर स्थापित करें। “महाकाली षोडशोपचार पूजन” में जो सामग्री लिखा है वही समस्त पूजन सामग्री अपने समीप एकत्र कर लें। मृग चम्र या व्याघ्र चर्म का आसन बिछाकर स्वयं बैठें और वैदिक विद्वान पंडित को भी इन्हीं आसनों पर बिठावें। यह साधना में अथवा दस महाविद्याओं की कोई भी साधना में विद्वान वैदिक पंडित का होना अनिवार्य है, क्योंकि सिद्धि हेतु मंत्र जप आरम्भ से पूर्व इष्ट देवी की षोड-शोपचार पूजन, तर्पण, मार्जन, विनियोग, आदि अनेकों उपचार सम्पन्न करने का विधान है और इस विधान की वृहद् जानकारी योग्य पंडित को ही ज्ञात है, अतः उनका होना बहुत जरूरी है। पंडित भी लाल वस्त्र धारण कर ही “षोडशोपचार पूजन” आरम्भ करावें।

“महाकाली साधना” में जो विधि एवं षोडशोपचार पूजन वर्णित है, उसी विधि व पूजन के अनुसार ही पुरोहित तारा की षोडशोपचार पूजन, व हवन आदि सम्पन्न करावें। परन्तु विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृद्यादि न्यास, ध्यान मंत्र एवं सिद्धि मंत्र, कवच पाठ आदि निम्न मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें।

साधना आरम्भ से पूर्व सिद्ध गुरु द्वारा प्राप्त “तारा महाविद्या कवच” यंत्र सिंहासन पर अवश्य तांबे के प्लेट में (लाल वस्त्र यंत्र में लपेट कर) स्थापित करें, तभी साधना आरम्भ करें। इस साधना में माला, पुष्प, आदि लाल रंग का ही प्रयोग करें। यहां तक कि दूध-दही को भी खीर या शर्बत के रूप में लाल रंग देकर ही चढ़ाया जाता है।

तारा महाविद्या साधना में तीन लाख मंत्र जप का विधान है। प्रथम दिन षोडशोपचार पूजन कर, जप करें। दूसरे दिन से पुनः स्वयं ही पूजन (षोडशोपचार) सम्पन्न कर जप करें। नित्य ही 80 माला जप करें। अन्तिम दिन 3 लाख का दशवां हिस्सा मंत्र द्वारा हवन में आहुति डालें, 30 ब्राह्मण एवं 11 कुमारी कन्याओं को भोजन करावें। नित्य ही माता की आरती भी उतारें।

### विनियोग मंत्र

ॐ अस्य श्री महोग्रतारा मंत्रस्य अक्षोभ्य ऋषिः बृहती छन्दः, श्री महोग्रतारा देवता, हुं बीजं, फट् शक्तिः, ह्रीं कीलकं, श्री तारा देवी प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः।

### ऋष्यादि न्यास

ॐ अक्षोभ्य ऋषये नमः शिरसि (सिर का स्पर्श करें)

बृहती छन्दसे नमः मुखे, (मुख का स्पर्श करें)



हुं बीजाय नमः गुदये (गुदा मार्ग स्पर्श करें)  
 ह्रीं कीलकाय नमः नाभौ (नाभि का स्पर्श करें)  
 फट् शक्त्ये नमः पादयोः (दोनों पावों का स्पर्श करें)  
 विनियोगाय नमः सर्वांगे (समस्त अंगों का स्पर्श करें)

**फरन्यास मंत्र**

हां अंगुष्ठाय नमः । ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः । हुं मध्यमाभ्यां नमः । हैं  
 अनामिकाभ्यां नमः । ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः । हुं करतल पृष्ठाभ्यां नमः ।

**हृदयादि न्यास मंत्र**

ॐ हां हृदयाय नमः । ह्रीं शिरसे स्वाहा । हुं शिखायै वषट् । हैं कवचाय  
 हुम् । ह्रौं नेत्रयाये वौषट् । हुं अस्त्राय फट् ।

**भगवती तारा का ध्यान मंत्र**

प्रत्यालीढ पदार्पितां घिसवहद् घोराट्टहासा परा ।  
 खड्गेन्दी वर कर्त्रिखर्पर भुजां हुंकार भीजोद्भवा ॥  
 खर्वानील विशाल पिङ्गल जटाजूटक नागैर्युता ।  
 जाड्यं न्यस्य कपाल कर्तुं जगतां हन्युग्रतारा स्वयम् ॥

**भगवती तारा महाविद्या कवच**

प्रणवो में शिरः पातु ब्रह्म रूपा महेश्वरी ।  
 ह्रींकारः पातु ललाटे बीज रूपा महेश्वरी ॥  
 स्त्रींकारः पातु बदने लज्जा रूपा महेश्वरी ।  
 हुंकारः पातु हृदये भवानी शक्ति रूप धृक् ॥  
 फट्कारः पातु सर्वांगे सर्वसिद्धि फलप्रदा ।  
 नीलाभां पातु देवेशी गण्ड युग्मे भयवहा ॥  
 लम्बोदरी सदा स्कन्ध युग्मे पातु महेश्वरी ।  
 व्याघ्रा चर्मावृत कटिः पातु देवी शिव प्रिया ॥  
 पीनोन्नत स्तनी पातु पार्श्व युग्मे महेश्वरी ।  
 करालास्या सदा पातु लिंगे देवी हरि प्रिया ॥  
 पिङ्गोग्रैक जटा पातु जंघायां विघ्न नाशिनी ।  
 खड्ग हस्ता महादेवी जानु चक्रे माहेश्वरी ॥  
 नीलवर्णा सदा पातु जानुनी सर्वदा मम् ।  
 नाग कुण्डल धत्री च पातु पाद युगे ततः ॥



नागहार धरा देवी सर्वो पातु सर्वदा ।  
 नाग कंकण धरा देवी जातु प्रान्तर देशतः ॥  
 जल स्थले चान्तरिक्षे तथा च शत्रु मध्यतः ।  
 सर्वतः पातु मां देवी खड्गहस्ता जय प्रदा ॥

सिद्धि हेतु मंत्र

॥ स्त्रीं हूं ह्रीं हूं फट् ॥

नोट—षोडशोपचार पूजन समाप्ति के पश्चात् “कवच पाठ” करें। इसके बाद 80 माला उपरोक्त मंत्र का जप सम्पन्न करें। जप के बाद नित्य ही आरती करें।

उपरोक्त विधि द्वारा साधना सम्पन्न करने के बाद किसी भी शनिवार के दिन भोजपत्र पर अनार की कलम व रोली चन्दन की स्याही से उपरोक्त मंत्र लिखकर, विधि पूर्वक षोडशोपचार पूजन सम्पन्न कर, 5 माला मंत्र जप पूर्ण कर, जिसे भी ताबीज में भरकर प्रदान करेंगे, उन्हें अपार प्रगति व सफलता की प्राप्ति होगी।

साधकों! अब मैं भगवती तारा के यंत्र निर्माण व साधना विधि का वर्णन करने जा रहा हूँ।

## श्री तारा महाविद्या यंत्र साधना विधि

श्री तारा महाविद्या यंत्र साधना से लाभ—

1. यह महायंत्र सिद्ध कर लेने से अथवा गुरु द्वारा सिद्ध यंत्र प्राप्त कर धारण करने से साधक सर्वत्र कार्य में अजेय हो जाता है और फिर उसके सामने सभी सफलताएँ चरण चूमती हैं।

2. साधक का व्यक्तित्व अत्यधिक आकर्षक एवं भव्य हो जाता है।

3. यह दिव्य यंत्र साधना सिद्ध होते ही या यंत्र धारण करते ही व्यक्ति की दरिद्रता, रोग, शत्रुभय, ऋण आदि की स्थिति स्वतः ही नष्ट हो जाती है और घर में निरन्तर धन का आगमन होता रहता है।

यंत्र साधना विधि—श्री तारा महाविद्या यंत्र की साधना किसी भी शनिवार की रात्रि में कर सकते हैं। शनिवार की रात्रि ठीक बारह बजे स्नान से पवित्र होकर, घर के पवित्र कमरे में आम लकड़ी से बना, लाल रंग से रंगा हुआ सिंहासन उत्तर दिशा से दक्षिण मुख स्थापित करें। आसन पर लाल वस्त्र बिछाकर मातेश्वरी तारा की तस्वीर रखें। स्वयं लाल वस्त्र धारण कर लाल कम्बल के आसन पर बैठ जावें। सुगन्धित अगरबत्ती व देसी घी का चौमुखी दीपक जगावें। इसके पश्चात् गुरु से प्राप्त किया हुआ सिद्ध “गुरु कवच यंत्र” तांबे के प्लेट में मातेश्वरी तारा की तस्वीर के समक्ष रख दें। गुरु कवच यंत्र एवं भगवती तारा की तस्वीर पर क्रमशः गंगाजल, अक्षत, (चावल) चन्दन, पुष्प, पुष्पमाला, बिल्वपत्र, एवं लड्डू को लाल गुलाल से



रंगकर नैवेद्य चढ़ावें अथवा लाल रंग का फल नैवेद्य के रूप में समर्पित करें।  
तत्पश्चात् भगवती को प्रणाम कर नीचे लिखित “तारा स्तोत्र” का पाठ करें—

### भगवती तारा स्तोत्र पाठ

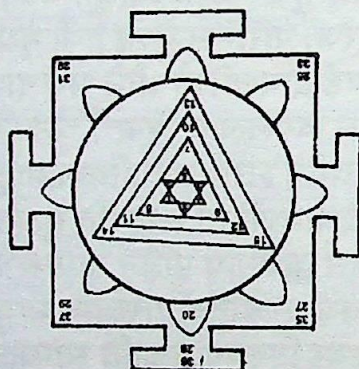
मातर्नील सरस्वती प्रणमतां सौभाग्य सम्पत्प्रदे ।  
प्रत्यालीढ पदस्थिते शवहृदि स्मेराननाम्भो रूहे ॥  
फुल्लेन्दी वरलोचने त्रिनयने कर्त्री कपालोत्पले ।  
खड्गज्वादधति त्वमेव शरणं त्वामीश्वरी माश्रये ॥१॥  
वाचांभीश्वरि भक्त कल्पलतिके सर्वार्थ सिद्धि श्वरि ।  
गद्य प्राकृत पद्य जात रचना सर्वार्थ सिद्धि-प्रदे ॥  
नीलेन्दी वरलोचन त्रययुते कारुण्य वारांनिधे ।  
सौभाग्या मृतवर्द्धनेन कृपया सिञ्च त्वमास्मादृशम् ॥२॥  
सर्वे गर्व समूह पूरित तनौ सर्पा दिवेशो ज्ज्वले ।  
व्याघ्रत्व क्परिवीत सुन्दर कटि व्याधूत घंटाङ्किते ॥  
सद्यः कृत्त गलदरजः परिमिलन्मुण्ड द्वयी मूर्धज ।  
ग्रन्थि श्रेणी नृमुण्डं दामललिते भीमे भयं नाशय ॥३॥  
मायानङ्ग विकार रूपललना बिन्दुर्ध चन्द्राम्बिके ।  
हूं फटकारमयि त्वमेव शरणं मन्त्रात्मिके मादृशः ॥  
मूर्तिरत्ते जननि त्रिधामघटिता स्थूलाति सूक्ष्मा परा ।  
वेदानां नहि गोचरा कथमपि प्राज्ञैर्नु तामाश्रये ॥४॥  
त्वत्पादाम्बुज सेवया सुकृतिनो गच्छन्ति सायुज्यतां ।  
तस्याः श्री परमेश्वर त्रिनयन ब्रह्मादि साम्यात्मनः ॥  
संसाराम्बु धिमज्जने ऽ पटत नु द्रेवेन्द्र मुख्यान सुरान् ।  
मातस्त्व त्यदसेवने हि विमुखान् किं मन्दघीः सेवते ॥५॥  
मातस्त्वत्पद पंकज द्वयरजो मुद्राङ्क कोटिरिण ।  
स्ते देवा जयशंकरे विजयिनो निःशंक मंके गताः ॥  
देवोऽहं भुवने न मे सम इति स्पर्धा वहन्तः परा ।  
स्तत्तुल्या न्ययतं यथाशु चिरवी नाशं व्रजन्ति स्वयम् ॥६॥  
त्वन्ना मस्मरणात् पयालन परा द्रष्टुञ्च शक्ता न ते ।  
भूतप्रेत पिशाच राक्षस गणा यक्षाश्च नागाधिपाः ॥  
दैत्या दानव पुङ्गव वाश्च खचरा व्याघ्रदिका जन्तवोः ।  
डाकिन्यः कुपितान्त कश्च मनुजो मातः क्षणं भूतले ॥६॥  
लक्ष्मीः सिद्धगणाश्च पादुक मुखाः सिद्धास्तथा वैरिणां ।  
स्तम्भश्चापि वरांगनने गजघटास्तम्भ स्तथा मोहनम् ॥



मातस्त्वत्य दसेवया खलु नृणां सिध्यन्ति ते ते गुणाः ।  
 क्लान्तः क्लान्त मनो भवस्य भवति क्षुद्रोऽपि वाचस्पतिः ॥७॥  
 ताराष्ट कमिदं पुण्यं भक्तिमान् चः पठेन्नरः ।  
 प्रातर्मध्याह्न काले च सायाह्ने नियत शुचिः ॥  
 लभते कवितां विद्यां सर्वशास्त्रार्थं विद् भवेत् ।  
 लक्ष्मी मनश्चरां प्राण्य भुक्त्वा भोगान् यथोणिसतान् ॥  
 कीर्ति कान्तिञ्च नैरुज्यं प्राणयान्ते मोक्ष माण्नुयात् ।  
 श्रीतारायाः प्रसादेन सर्वत्र शुभ मस्नृते ॥८॥

नोट—उपरोक्त स्तोत्र पाठ समाप्त होने के बाद भगवती को प्रणाम करें, इसके पश्चात् रक्त चन्दन की स्याही व अनार की कलम से नीचे दर्शाए चित्रानुसार भोजपा पर — भगवती तारा का यंत्र निर्माण करें—

[ श्री तारा यंत्र स्वरूप ]



स्वयं निर्मित यंत्र को सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर उसमें सूती लाल डोरे डालकर “गुरु कवच यंत्र” वाले प्लेट में रख दें। इनके बाद नीचे लिखित मंत्र का जप रुद्राक्ष की 108 दाने वाली माला से 41 रात्रि में एक लाख मंत्र जप सम्पन्न करें। नित्य ही जप सम्पन्न होने के बाद आरती उतारें। अन्तिम दिन (रात्रि में) मंत्र जप सम्पन्न होने के बाद सौ माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें।

**यंत्र सिद्धि जप हेतु भगवती तारा मंत्र**

॥ॐ ह्रीं स्त्रीं हुं फट् ॥

हवन कर्म समाप्त होने के पश्चात् भगवती की आरती व विसर्जन करें।

इसके पश्चात् 5 ब्राह्मण, 11 कुमारी कन्याओं को भोजन करावें तथा सभी को दक्षिणा प्रदान करें। “गुरु कवच यंत्र” एवं पूजन सामग्री (फूल, विल्व—पत्र, हवन भस्म आदि बहती दरिया में प्रवाहित कर दें और स्वयं निर्मित यंत्र को गले में धारण कर लें।) आपका जीवन धन्य—धन्य हो जायेगा। यह मेरा स्वयं का रिसर्च है, आप भी आजमा कर देखें।



तत्पश्चात् किसी भी शनिवार की रात्रि में तारा यंत्र निर्माण कर, 21 माला मंत्र जप एवं षोडशोपचार पूजन सम्पन्न कर, जिसे भी यंत्र प्रदान करेंगे उसे चमत्कारिक लाभ हासिल होगा।

### भगवती छिन्नमस्ता महाविद्या सिद्धि

भगवती छिन्न मस्ता महाविद्या सिद्धि से लाभ—साधक के घर में निरन्तर धन का आगमन होता ही रहता है। नौकरी, इंटरव्यू और परिक्षा में निश्चित सफलता मिलती है। साधक की व्यवसाय में चमत्कारिक प्रगति होती है और यदि साधक नौकरी करने वाला होता है तो शीघ्र ही पदोन्नति हो जाती है।

भगवती छिन्न मस्ता के अन्य नाम और रूप—दस महाविधाओं में छिन्न मस्ता का स्वरूप अन्य सभी से भिन्न है। अपनी प्रिय सहचरी जया और विजया की क्षुधा शान्ति के लिए दयामयी माता ने स्वयं का सिर काटकर स्वशरीर से निकली हुई रक्त धारा से उन दोनों को तथा स्वयं को तृप्त किया। इनका दूसरा नाम “प्रचण्ड चण्डिका” भी है। इस देवी की आराधना दक्षिण, उत्तर और अधर आम्नायों से होती है।

साधना विधि—भगवती “छिन्न मस्ता” की साधना दिवाली की रात्रि ठीक बारह बजे आरम्भ करें। अपने भवन के एकान्त, पवित्र कमरे में उत्तर दिसा में दक्षिण मुख आम लकड़ी से बना और लाल रंग से रंगा हुआ सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन के ऊपर लाल रंग का आसन बिछावें। तत्पश्चात् उस सिंहासन पर भगवती छिन्न मस्ता की तस्वीर स्थापित करें। यह साधना आरम्भ वाली रात्रि में वैदिक पंडित द्वारा षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करावें। वैदिक पंडित एवं साधक दोनों ही लाल वस्त्र धारण करें। इस साधना में विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृद्यादि न्यास, ध्यान और स्तोत्र निम्न मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें —

#### विनियोग मंत्र

अस्य शिराच्छिन्न मंत्रस्य, भैरव ऋषिः सम्राट् छन्दः, छिन्न मस्ता देवता, हुं हुं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, क्लीं कीलंक, मम अभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

#### ऋष्यादि न्यास

ॐ भैरव ऋषये नमः ( शिरसि )

सम्राट् छन्दसे नमः ( मुखे ), छिन्न मस्ता देवतायै नमः ( हृदि ), हुं हुं बीजाय नमः ( गुह्ये ), स्वाहा शक्त्यै नमः ( पादयोः ), क्लीं कीलकाय नमः ( नाभौ ) विनियोगाय नमः ( सर्वांगे )।



## करन्यास मंत्र

ॐ छूं अंगुष्ठाभ्यां नमः, ॐ छूं तर्जनीभ्यां नमः, ॐ छूं मध्याभ्यां नमः, ॐ छूं अनामिकाभ्यां नमः, ॐ छूं कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ छूं करतलपृष्ठाभ्यां नमः ।

## हृदयादि न्यास मंत्र

ॐ छूं हृदयाय नमः, ॐ छूं शिरसि-स्वाहा, ॐ छूं शिखायै वषट्, ॐ छूं कवचाय हुम्, ॐ छूं नेत्रयाय वौषट्, ॐ छूं अस्त्राय फट् ।

## ध्यान मंत्र

अनोग्र स्वशरीरस्य नाभि नीरज संगताम् ।  
निर्लेपां निर्गुणां सूक्ष्मां बाल चन्द्र सम प्रभाम ॥  
समाधि मात्र गम्यां तु गुणाश्रितय वेष्टिताम् ।  
कालातीतां गुणातीतां मुक्ति-भुक्ति प्रदायिनीम् ॥  
पत्यालीढं पदां दधतीं छिन्नं शिरः कर्त्रिका ।  
छिन्न मस्ता भजे देवीं सर्व सौख्य प्रदायिनीम् ॥

**भगवती छिन्न मस्ता कवच पाठ**

देव्यु वाच-

कथिताश्छिन्न मस्ताया याया विद्याः सुगोपिताः ।  
त्वया नाथेन जीवेश श्रुताश्चाधिगता मया ॥१॥  
इदानीं श्रोतमिच्छामि कवचं पूर्वं सूचितम् ।  
त्रैलोक्या विजयं नाम कृपया कथ्यतां प्रभो ॥२॥  
भैरव उवाच-

शृणु वक्षयामि देवेशि सर्वदेव नमस्कृते ।  
त्रैलोक्य विजयं नाम कवचं सर्व मोहनम् ॥३॥  
सर्वाविद्या मयं साक्षात् सुरासुर जयप्रदम् ।  
दारणात्पठनादीश त्रैलोक्य विजयी विभुः ॥४॥  
ब्रह्मा नारायणो रुद्रो धारणात्पठ नाद्यतः ।  
कर्ता पाता च सहर्ता भुवनानां सुरेश्वरि ॥५॥  
न देयं परशिष्येभ्य अभक्तेभ्यो विसेषतः ।  
देयं शिष्याय भक्ताय प्राणेभ्योऽप्यधिकाय च ॥६॥

कवच पाठ-

त्रैलोक्य विजये मुक्तौ विनियोगः प्रकीर्तितः ।



देव्याश्च छिन्न मस्तायाः कवचस्य च भैरवः ॥७॥  
 ऋषिर्विराट् छन्दस्तु देवताच्छिन्न मस्तका ।  
 ॐ हूँकारो मे शिरः पातु छिन्न मस्ता बलप्रदा ॥८॥  
 ह्रीं ह्रीं ऐं त्र्यक्षरी पातु मालं वक्त्र दिगम्बरा ।  
 श्रीं ह्रीं हुं ऐं दृशौ पातु मुण्डे कर्त्तधरापि सा ॥९॥  
 सा विद्या प्रणवाद्यन्ता श्रुति युग्म सदाऽवतु ।  
 वज्र वैरोच नीचे हूं फट् स्वाहा च भ्रुवादिकम् ॥१०॥  
 घ्राणां पातु छिन्न मस्ता मुण्डकर्तृ विद्यारिणी ।  
 श्री मायाकूर्जवाग्बीजैर्वज्र वैरोचनीयहूं ॥११॥  
 हुं फट् स्वाहा महाविद्या षोडशी ब्रह्मरुपिणी ।  
 स्वपार्श्वेवर्णिनी चासृग्धारा पाययती मुदा ॥१२॥  
 वदनं सर्वदा पातु छिन्नमस्ता स्वशक्तिका ।  
 मुण्डकृधरा रक्ता साधकाभीष्टदायिनी ॥१३॥  
 वर्णिनी डाकिनीयुक्ता सापि मामभितोऽवतु ।  
 रामाद्या पातु जिह्वाञ्च लज्जाद्या पातु कण्ठकम् ॥१४॥  
 कूर्च्वाद्या हृदयं पातु वागाद्या स्तनयुग्मकम् ।  
 रमया पुटिता विद्या पार्श्वौ पातु सुरेश्वरी ॥१५॥  
 मायया पुटिता पातु नाभिदेशे दिगम्बरा ।  
 कूर्चेन पुटिता देवी पृष्ठदेशं सदावतु ॥१६॥  
 वाग्बीजपुटिता चैषा मध्य पातु सक्तिका ।  
 ईश्वरी कूर्चवाग्बीजैर्वज्र वैरोचनीयहूं ॥१७॥  
 हफट् स्वाहा महाविद्या कोटिसूर्यसमप्रभा ।  
 छिन्नमस्ता सदा पायादूरुयुग्मं सशक्तिका ॥१८॥  
 ह्रीं हूं वर्णिनी जानु श्रीं ह्रीं च डाकिनी पद्म ।  
 सर्वाविद्यास्थिता नित्या सर्वाङ्ग मे सदावतु ॥१९॥  
 प्राच्यां पायादेकलिङ्गा योगिनी पावेकऽवतु ।  
 डाकिनी दक्षिणे पातु श्रीमहाभैरवी च माम् ॥२०॥  
 नैर्ऋत्यां सततं पातु भैरवी पश्चिमेऽवतु ।  
 इन्द्राणी पातु वायव्येऽसितांगी पातु चोत्तरे ॥२१॥  
 संहारिणी सदा पातु शिवकोणे सकर्तुका ।  
 इत्यष्ट शक्तयः पान्तु दिग्विदिक्षु सकर्तुकाः ॥२२॥



क्रीं क्रीं क्रीं पातु सा पूर्वे ह्रीं ह्रीं मां पातु पावके ।  
 हूं हूं मां दक्षिणे पातु दक्षिणे कालिकावतु ॥२३॥  
 क्रीं क्रीं क्रीं चैव नैऋत्यां ह्रीं ह्रीं च पश्चिमेऽवतु ।  
 हूं हूं पातु मरुत्कोणे स्वाहा पातु सदोत्तरे ॥२४॥  
 महाकाली खड्गहस्ता रक्षःकोणे सदावतु ।  
 तारा मायावधूः कूर्चं फट्कारीयं महामनुः ॥२५॥  
 खड्गकर्तृधरा चारा चोर्ध्वदेशं सदावतु ।  
 ह्रीं स्त्रीं हूं फट् च पाताले पातु चैकजटा सती ॥२६॥  
 तारा तु सहिता खेऽव्यान्महानीलसरस्वती ।  
 इति ते कथितं देव्याः कवचं मन्त्रविग्रहम् ॥२७॥  
 युद्धत्वा पठनाद्धीमः क्रोधाख्यो भैरवः स्मृतः ।  
 सुरासुरमुनीन्द्राणां कर्ता हर्ता भवेत्स्वयम् ॥२८॥  
 यस्याज्ञया मधुमती याति सा साधकालयम् ।  
 भूतिन्याद्याश्च डाकिन्यो यक्षिण्याध्याश्च खेचराः ॥२९॥  
 आज्ञा गृह्णन्ति तास्तस्य कवचस्य प्रसादतः ।  
 एतदेव परं ब्रह्मकवचं मन्मुखोदितम् ॥३०॥  
 देवीमभ्यर्च्य गन्धाद्यैर्मूलेनैव पठेत्सकृत् ।  
 सम्वत्सरकृतायास्तु पूजायाः फलमाप्नुयात् ॥३१॥  
 भूर्जे विलिखितं चैतत्तुटिकां काञ्चनस्थिताम् ।  
 धारयेद्दक्षिणे बाहौ कण्ठे वा यदि वान्यतः ॥३२॥  
 सर्वैश्वर्ययुतो भूत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ।  
 तस्य गेहे वसेल्लक्ष्मीर्वाणी च वदनाम्बुजे ॥३३॥  
 ब्रह्मास्त्रादीनि शस्त्राणि तद्गात्रेयान्ति सौम्यताम् ।  
 इदं कवचमज्ञात्वा यो भजेच्छिन्नमस्तकाम् ।  
 सोऽपि शस्त्र प्रहारेणमृत्युमाप्नोति सत्वरम् ॥३४॥

साधकों! भगवती छिन्न मस्ता की षोडशोपचार पूजन महाकाली साधना में वर्जित विधि एवं पूजन द्वारा ही सम्पन्न करें। विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृद्यादि न्यास, ध्यान मंत्र, कवच पाठ छिन्नमस्ता सिद्धि शीर्षक में लिखित मंत्रों द्वारा ही सम्पन्न करें। षोडशोपचार पूजन सम्पन्न होने के बाद नीचे लिखित मंत्र का जप रुद्राक्ष की 108 दाने वाली माला से आरम्भ करें।



## भगवती छिन्न मस्ता सिद्धि मंत्र

॥ॐ श्रीं ह्रीं क्रीं वज्र वैरोचनाये हूं हूं फट स्वाहा ॥

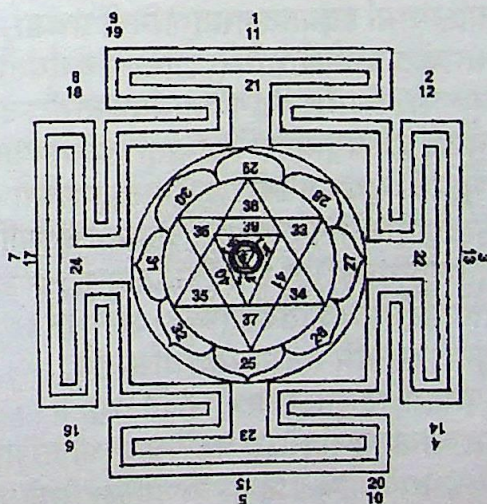
नोट—प्रथम रात्रि में 11 माला मंत्र जप सम्पन्न करें। जप के बाद नित्य रात्रि में आरती करें। दूसरे रात्रि से भगवती की पंचोपचार विधि से पूजन सम्पन्न कर जप किया करें। 90 रात्रि में चार लाख मंत्र जप सम्पन्न करें। अंतिम रात्रि में 101 माला मंत्र जप करते हुए हवन करें। इसके पश्चात् आरती व विसर्जन पूजन सम्पन्न कर 11 ब्राह्मण एवं 21 कुंवारी कन्याओं को मीठा भोजन करावें और दक्षिणा प्रदान कर विदाई दें।

उपरोक्त विधि से मंत्र सिद्धि पूर्ण होने के बाद आप पर भगवती की अपार कृपा हो जाएगी और शनिवार के दिन भोज पत्र पर मंत्र लिखकर, 5 माला जप सम्पन्न कर, ताबीज में भरकर जिसे भी प्रदान करेंगे, उसे चमत्कारिक लाभ प्राप्त होगा।

यंत्र साधना विधि—भगवती छिन्न मस्ता के यंत्र की सिद्धि शनिवार की रात्रि में आरम्भ करें। मंत्र साधना विधि के अनुसार ही पंडित से षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करावें। परन्तु याद रहे गुरु की आज्ञा के बिना, या गुरु यंत्र सिंहासन पर स्थापित किए बिना यह साधना न करें। सिंहासन के समीप 1-1 दीपक देसी घी (गाय का घी) का जगावें।

षोडशोपचार पूजन के बाद नीचे लिखित यंत्र का निर्माण करें। यंत्र निर्माण अनार की कलम, रक्त चन्दन की स्याही से भोजपत्र पर करें—

[ छिन्नमस्ता यंत्र स्वरूप ]





यंत्र निर्माण करने के पश्चात् सोने, चांदी या तांबे के ताबीज में भरकर उसमें लाल डोरे डालकर गुरु यंत्र वाले प्लेट में सिंहासन पर रख दें। इसके बाद नीचे लिखित “स्तोत्र” का पाठ हाथ जोड़कर करें :-

### छिन्नमस्ता स्तोत्रम्

नाभौ शुभ्रारविन्दं तदुपरि विलसन्मण्डलम चंडरश्मे,  
 संसारस्यैकसारां त्रिभुवनजननीं धर्मकामार्थदात्रीम् ।  
 तस्मिन् मध्ये त्रिभागे त्रितयतनुधरां छिन्नमस्तां प्रशस्तां,  
 तां वंदे छिन्नमस्ता शमनभयहरां योगिनीं योगमुद्राम् ॥  
 नाभौ शुद्धसरोजवकाविलसद् बंधूकपुष्पारुणां  
 भास्वद् भास्करमंडलं तदुदरे द्योनिकचक्रं महत् ।  
 तन्मध्य विपरीतमैथुनरत प्रद्युम्नसत्कामिनी-  
 पृष्ठस्थां तरुणार्ककोटिविलसत्तेज स्वरूपां भजे ॥  
 वामे छिन्नशिरोधरां तदितरे पौ महत्कर्तृकां,  
 प्रत्यालीढपदां दितवसनामुन्मुक्तके शब्रजाम् ।  
 छिन्नत्मीयशिरस्समुच्छलदसृग्धारां पिबन्तीं परां,  
 बालादित्यसमप्रकाशविलसन्नेत्रत्रयोद् भासिनीम् ॥  
 वामादयत्रनालं बहुगहनगलदूरक्तधाराभिरुच्चे-  
 गारयंतीमस्तिभूषां करकमललसत्कर्त्रिकामुग्ररूपाम् ।  
 रक्तामारक्तकेशीमपगतवसनां वर्णिनीमात्म शक्तिं,  
 प्रत्यालीढोरूपादारुणितनयनां योगिनीं योगनिद्राम् ॥  
 दिग्वस्त्रां मुक्तकेशीं प्रलयघनघटाघोररूपां प्रचंडां,  
 दंष्ट्रादुष्यप्रेक्ष्य वक्त्रोदरविवरलसल्लोलजिह्वाग्रमासाम् ।  
 विद्युल्लोलाक्षियुग्मां हृदयतटलसद्मोगिनीं प्रचंडां,  
 सद्यश्छिन्नात्मकंठ प्रगलितरुधिरेरडाकिनीं वर्धयंतीम् ॥  
 ब्रह्मेशानाच्युताद्यैः शिरशि विनिहितामंदपादारविन्दे,  
 राक्षसैर्योगैर्द्रमुख्यै प्रतिपदमनिशं चिन्तितां चिंत्यरूपाम् ।  
 संसारे सारभूतां त्रिभुवनजननीं छिन्नमस्ता प्रशस्ता-  
 मिष्टां तामिष्टदात्रीं कलिकलुषहरां चेतसा चिंदयामि ॥  
 उत्पत्तिस्थितिसंहतीर्घटयितुं धत्ते त्रिरूपां तुनं,  
 त्रैगुण्याज्जगतो यदीयविकृतिर्ब्रह्माच्युतः शूलभृतं ।  
 तामाद्यां प्रकृति स्मरामि मनसा सर्वार्थसिद्धये,  
 यस्याः स्मेरपादारविंदयुगले लाभं भजन्ते नराः ॥  
 अभिलषितपरस्त्रीयोगपूजापरोऽहं बहुविधजनभावारंभसंभावितोऽहम् ।  
 पशुजनविरतोऽहं भैरवीसंस्थितोऽहं गुरुचरणरतोऽहं भैरवोऽहं शिवोऽहम् ॥



नोट—स्तोत्र पाठ समाप्त होने के बाद नीचे लिखित मंत्र का जप 41 रात्रि में एक लाख एकावन हजार सम्पन्न करें। अन्तिम रात्रि में निम्न मंत्र द्वारा ही 11 माला हवन में आहुति डालें।

**ॐ श्रीं ह्रीं क्रीं वज्र वैरोच नाये हूं हूं फट स्वाहा।**

हवन के पश्चात् आरती करें। तत्पश्चात् पूजन विसर्जन कर, यंत्र को प्रणाम कर गले में धारण कर लें। गुरु द्वारा प्राप्त यंत्र को बहती दरिया में विर्सजित कर दें। इस यंत्र साधना से वही लाभ होता है, जो लाभ उस देवी के मंत्र सिद्धि से प्राप्त होता है।

### **भगवती धूमावती महाविद्या सिद्धि**

भगवती धूमावती महाविद्या सिद्धि से लाभ—यह महाविद्या साधना के पश्चात् या इनका यंत्र धारण करने के पश्चात् साधक की दरिदरता दूर हो जाती है और शत्रुओं का सर्वनाश हो जाता है। यह साधना अर्थ, धर्म, काम तथा मोक्ष भी प्रदान करती है। रोग, ऋण आदि की स्थिति स्वतः ही नष्ट हो जाती है। इस यंत्र—मंत्र साधना के प्रभाव से घर में अगर तांत्रिक प्रयोग हो तो वह तुरन्त नष्ट हो जाता है।

भगवती धूमावती के अन्य नाम, रूप और उत्पत्ति कथा—साधको! भगवती धूमावती महाउग्र शक्ति है। भगवान् शिव इसमें धूम्र रूप से विराजमान हैं। विश्व की अमांगल्य पूर्ण अवस्था की अधिष्ठात्री के रूप में ये मातेश्वरी त्रिवर्णा, चंचला, गलिताम्बरा, विरल दन्ता, विधवा, मुक्तकेशी, शूर्प हस्ता, काक ध्वजिनी, रुद्रनेत्रा, कलह प्रिया आदि विशेषणों से वर्णित हैं। शत्रु संहार, दारिद्र्य विध्वंसन, एवं भक्त संरक्षण के लिए ये सदा आराध्य हैं।

“नारद पंचरत्न ग्रन्थ” में इनकी उत्पत्ति कथा वर्णित है, जिसमें कहा गया है कि एक समय भगवान् शिव के अंक में विराजमान पार्वती देवी ने शिव से प्रार्थना की कि हे प्राणेश्वर! हमें अत्यधिक भूख लग गई है अतः हमें तुरन्त कुछ भोजन प्रदान करें। तब त्रिनेत्र शिव ने आश्वासन दिया कि कुछ प्रतीक्षा करो, अभी व्यवस्था होती है, किन्तु व्यवस्था नहीं हुई और समय बीत गया। तब भगवती ने स्वयं शिव को ही मुख में रखकर निगल ली। उससे उनके शरीर से धुआं निकला और अपनी माया शक्ति से भगवान् शिव बाहर आ गये। तत्पश्चात् शिव जी ने पार्वती से कहा कि हे देवी! मैं एक ही पुरुष हूँ और तुम एक ही स्त्री हो। तुमने अपने पति को निगल लिया अतः तुम विधवा हो गई हो। अब तुम सौभाग्यवती के श्रृंगार छोड़कर वैधव्य वेष (विधवा वेष) में रहो। पहले तुम्हारा यह शरीर “भगवती बगला” के रूप में विद्यमान था। अब तुम “धूमावती महाविद्या” के रूप में संसार में पूजित होकर विश्व का कल्याण करोगी।

मंत्र साधना विधि—इस पर भगवती की साधना चन्द्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण लगते ही आरम्भ कर दें। स्नान से पवित्र होकर एकान्त कमरे में पवित्र स्थान पर आम की लकड़ी से बना सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन के ऊपर सफेद आसन बिछाकर



भगवती धूमावती की तस्वीर की स्थापना करें। सिंहासन के चारों दिशा में चार चौमुखी दीपक [गाय के घी से] जगावें। सुगन्धित अगरबत्ती जगावें। तत्पश्चात् वैदिक पंडित से “षोडशोपचार पूजन” महाकाली षोडशोपचार मंत्र विधि द्वारा ही सम्पन्न करावें। स्वयं सफेद वस्त्र धारण करें एवं पुरोहित भी सफेद वस्त्र ही पहनें तभी पूजन आरम्भ करावें। इस पूजन में पुष्प, अक्षत्, चन्दन आदि नैवेद्य की वस्तुएं भी सफेद रंग की होनी चाहिए। सिंहासन पर सिद्ध गुरु द्वारा प्राप्त “सिद्ध धूमावती कवच यंत्र” अवश्य स्थापित करें। इस साधना में विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृदयादि न्यास, ध्यान मंत्र एवं धूमावती कवच मंत्र निम्न मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें।

### विनियोग मंत्र

ॐ अस्य श्रीधूमावती महामंत्रस्य, पिप्पलाद् ऋषिः, निवृच्छन्दः, ज्येष्ठा देवता, धूं बीजम्, स्वाहा शक्तिः, धूमावती कीलंक ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

### ऋष्यादिन्यास मंत्र

ॐ पिप्पलाद् ऋषये नमः शिरसि।  
निवृच्छन्दसे नमः मुखे।  
श्रीज्येष्ठा धूमावती देवतायै नमः हृदि।  
धूं बीजाय नमः गुह्ये।  
स्वाहा शक्तिये नमः पादयोः।  
धूं कीलकं नमः सर्वांगे।

### करन्यास मंत्र

ॐ धां अंगुष्ठाभ्यां नमः।  
ॐ धीं तर्जनीभ्यां नमः।  
ॐ धूं मध्यमाभ्यां नमः।  
ॐ धैं अनामिकाभ्यां नमः।  
ॐ धौं कनिष्ठाभ्यां नमः।  
ॐ धंः करतलपृष्ठाभं नमः।

### हृदयादिन्यास मंत्र

ॐ धां हृदयाय नमः।  
ॐ धीं शिरसे स्वाहा।  
ॐ धूं शिखायै वषट्।  
ॐ धैं कवचाय हुम्।  
ॐ धौं नेत्रत्रयाय वौषट्।  
ॐ धंः अस्त्राय फट्।



### ध्यान मंत्र

विवर्णा चंचला कृष्णा दीर्घा च मलिनाम्बरा ।

विमुक्त कुन्तला रुक्षा विधवा विरल द्विजा ॥

काकध्वजरथारुढ़ा विलम्बित पयोधरा ।

शूर्पहस्तातिरक्ताक्षी धूम हस्ता वरान्विता ॥

प्रवृद्ध घोणा तु भृशं कुटिला कुटिलेक्षणा ।

क्षुत्पिपासार्दिता नित्यं भयदा कलहास्पदा ॥

नोट—षोडशोपचार पूजन सम्पन्न होने के पश्चात् नीचे लिखित मंत्र का जप 41 दिन रात्रि में 5 लाख (मंत्र जप) सम्पन्न करें। मंत्र जप तुलसी, मोती या आक की लकड़ी से बनी माला द्वारा करें। हवन सामग्री में कौवे का पंख मिलावें। अन्तिम दिन 108 माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति दें। जप करने हेतु मूल मंत्र निम्न प्रकार है—

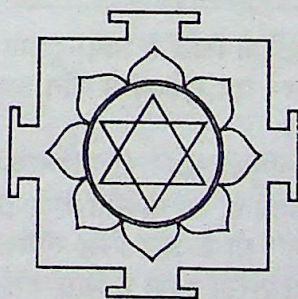
### मंत्र साधना हेतु मूल मंत्र

ॐ धूं-धूं-धूं धूमावती स्वाहा ॥

अन्तिम दिन हवन आरती कर्म के पश्चात् साधना कर्म विसर्जन करें। इसके पश्चात् 11 ब्राह्मण और 21 कुंवारी कन्याओं को भोजन करावें।

तत्पश्चात् आप नीम की पत्तेवाली झाड़ी से मंत्र पढ़कर किसी भी रोगी को 21 बार झाड़ा लगा देंगे तो रोगी रोग से मुक्त हो जायेगा। यदि किसी को भूत-प्रेत लगता हो तो उसे भी मंत्र पढ़कर नीम की झाड़ी से झाड़ा लगावेंगे तो व्यक्ति प्रेत बाधा से मुक्त हो जायेगा।

श्री धूमावती यंत्र साधना विधि—शनिवार की रात्रि में स्नान से पवित्र होकर “धूमावती मंत्र साधना” विधि के अनुसार सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर सिद्ध गुरु द्वारा प्राप्त-सिद्ध “धूमावती कवच यंत्र” स्थापित करें। विधि पूर्वक षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करें। तत्पश्चात् सफेद चन्दन की स्याही और कौवे पंख की कलम से भोजपत्र के ऊपर नीचे वर्णित यंत्र निर्माण करें—



श्री धूमावती यंत्र

यंत्र निर्माण करने के बाद “श्री धूमावती माला मंत्र” का पाठ करें—



(घ) श्रीधूमावती माला-मन्त्र-ॐ, धूं धूमावति चतुर्दश-भुवननिवासिनि सकल ग्रहोच्चाटनि सकलशत्रुरक्तमांसभक्षिणि, मम शरीररक्षिणि भूतप्रेत-पिशाच-ब्रह्मराक्षसादि सकलग्रहसंहारिणि मम शरीर परमन्त्र-परयन्त्र-परतन्त्रनिवारिणि आत्ममन्त्रयन्त्रतन्त्र प्रकाशिनि मम शरीरे परकट्टु-परवाटु-परवेट्टु-परजप-परहोम-परशून्य-परवृष्टि-परकौतुक-परौषदाधिच्छेदिनि-घिट्टेरि-काहेरि-कन्नेरि-पाट्टेरि-शुनककाट्टेरि-प्ररिटिकाट्टेरि-दर्भकाट्टेरि-पालकाट्टेरि-सकलजाति-काट्टेरि-ग्रहच्छेदिनि मम नाभि-कमलस्थान-संचारग्रहसंहारिणि धूम्र-लोचनि उग्ररुपिणि सकलविषच्छेदिनि सकलविषसंचयान् नाशय नाशय मारय मारय विषमज्वर-तापज्वर-शीतज्वर-वातज्वर-लूतज्वर-पयत्यज्वर-श्लेष्मज्वर-मोहज्वर-सान्निपातज्वर-पातालकाट्टेरिज्वर-प्रेतज्वर-पिशाचज्वर-कृत्रिमज्वर-नानादोषज्वर-सकलरोगनिवारिणि सकलग्रहच्छेदिनि शिरःशूलाक्षिशूल-कुक्षिशूल-कर्णशूल-नाभिशूल-कटिशूल-पार्श्वशूल-गण्डशूल-गुल्मशूलांगशूल-सकलशूलान् निधूमय सकलग्रहान् निवारय निवारय रां रां रां रां रां, क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां, ख्रैं ख्रैं ख्रैं ख्रैं ख्रैं, धूं धूं धूं धूं धूं, फ्रैं फ्रैं फ्रैं फ्रैं फ्रैं, धूं धूं धूं धूं धूं धूमावती मां रक्ष-रक्ष शीघ्रं शीघ्रमागच्छा गच्छ प्रमेवारोग्यं कुरु-कुरु हूं फट् धूं-धूं-धूमावती स्वाहा।

नोट-धूमावती माला मंत्र पाठ सम्पन्न होने के बाद नीचे लिखित मंत्र का 5 लाख मंत्र 41 दिन में जप सम्पन्न करें। अन्तिम दिन 51 माला मंत्र जप करते हुए हवन करें, आरती करके साधना विसर्जन करें। यंत्र को (स्वयं निर्मित यंत्र) ताबीज में भरकर, सफेद रंग के डोरे डालकर गले में धारण कर लें। इसके पश्चात् किसी भी शनिवार को स्वयं यंत्र निर्माण कर किसी व्यक्ति को यंत्र प्रदान करेंगे तो उनकी वे समस्त कामनाएँ पूर्ण हो जायेंगी जो धूमावती मंत्र साधना से पूर्ण होती है। यंत्र निर्माण के पश्चात् 11 माला मंत्र जप सम्पन्न करने के पश्चात् ही किसी को यंत्र प्रदान करें।

### भगवती बगला मुखी महाविद्या सिद्धि

भगवती बगलामुखी महाविद्या सिद्धि से लाभ-दुश्मन को अपने अनुकूल बनाने तथा शत्रुओं का सर्वनाश करने एवं मुकदमें में जीत तथा समस्त इच्छाओं की पूर्ति हेतु यह साधना की जाती है।

यदि कोई मात्र “बगलामुखी यंत्र” ही धारण करता है, तो उसे एक ऐसा विशिष्ट सुरक्षा कवच प्राप्त होता है, जो चौबीसों घण्टे उसकी सुरक्षा करता है। देवी बगला मुखी का नाम “बला” भी है और सिद्ध साधक के चारों ओर एक बला चक्र निरन्तर घूमता व सुरक्षा करता रहता है जिसे कोई अन्य नहीं देख सकता है। जिन्हें बड़े-बड़े प्रतिष्ठान संभालने हों अथवा महत्वपूर्ण पदों पर रहना हो, जिन्हें नेतृत्व का भार प्राप्त हो, उनके लिए तो यह साधना सम्पन्न करना नितांत आवश्यक है।



बगलामुखी शक्ति का मूल सूत्र है—“अथवा प्राण सूत्र”, ये प्राणसूत्र प्रत्येक प्राणी में सुप्त अवस्था में होता है और साधना द्वारा इसे चैतन्य किया जा सकता है। जब यह प्राण सूत्र जागृत हो जाता है, तो व्यक्ति अपने सामने बैठे व्यक्ति पर ही नहीं अपितु दूरस्थ स्थान पर स्थित व्यक्ति को सम्मोहित कर सकता है। बगलामुखी की साधना द्वारा ही इस ‘अथर्वा प्राण सूत्र’ को जागृत किया जा सकता है। जब यह सूत्र जाग्रत हो जाता है, तो व्यक्ति अपने जीवन में स्तम्भन, वशीकरण और कीलन की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

भारतीय तंत्र विज्ञान अपने में अद्भुत एवं विशाल महाशक्तियों से सम्पन्न है, इसमें प्रकृति के सभी गूढ़ तत्व निहित हैं। जिनमें मानव जीवन की पूर्णता एवं प्रकृति का रहस्य छिपा हुआ है। महाशक्तियों में कई महाविद्याएं आती हैं, किन्तु उनमें जो विश्व की श्रेष्ठ महाविद्या साधना है वह भगवती बगलामुखी साधना है।

प्राचीन काल से ही जो भी महापुरुष हुए हैं या राजा-महाराजाओं ने निष्कण्टक राज्य किया है, उनके जीवन में विजय एवं सफलता का रहस्य ही भगवती बगलामुखी उपासना रही है।

“विष्णु पुराण” में वर्णन आया है कि एक बार सृष्टि में तपस्या हीनता से महाप्रलय की स्थिति आ गई और स्वयं विष्णु विचार करने लगे कि मैं इस जगत का पालन कर्त्ता हूँ और अभी महाप्रलय नहीं होना चाहिए, जगत की रक्षा करना मेरा कर्त्तव्य है। ऐसा विचार कर भगवान् विष्णु स्वयं सौराष्ट्र प्रदेश के हरिद्रा तट पर गए और वहां घनघोर साधना तपस्या आरम्भ की। तपस्या की पूर्णता के पश्चात् मंगलवार चतुर्दशी के दिन एक देवी की उत्पत्ति हुई जो स्वर्णासीन थी, पीत वस्त्र और माला धारण किए हुए थी, हाथ में मुद्गर था और दूसरे हाथ से देवी ने शत्रु की जीभ पकड़ी थी। यह देवी “वल्गा देवी” थी। जिसके प्रभाव से सृष्टि का प्रलय रुक गया।

एक बगलामुखी देवी ही स्तम्भन, कीलन और सम्मोहन की महादेवी है। यह मूल रूप से मारण साधना नहीं है, ह तो अपने प्रभाव को इतना अधिक विस्तारित कर देने की साधना है, जिससे साधक के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।

“तोड़ल तंत्र” में कहा गया है कि बगला मुखी साधना तंत्रोक्त पद्धति से सिद्ध की जानी चाहिए।

“रुद्रयामल तंत्र” में स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि बगलामुखी साधना की पीठ पद्धति अपने आप में सर्वाधिक महत्वपूर्ण और दुर्लभ है, जिसे महायोगी जगद्गुरु मत्स्येन्द्र नाथ ने योग विद्या से स्वयं भगवती बगलामुखी को अपने सामने प्रकट कर उनकी गोपनीय विधि और रहस्य को प्राप्त किया था। कहते हैं कि मत्स्येन्द्र नाथ को पीठ पद्धति के द्वारा जब बगलामुखी सिद्ध हुई तो वह नित्य मत्स्येन्द्र के सामने आकर उपस्थित होती और योगीराज उन्हें स्वयं अपने हाथों से नैवेद्य अर्पित करते थे।

मत्स्येन्द्र नाथ ने ताड़ पत्रों पर वल्गा सिद्ध साधना पर एक अद्वितीय ग्रन्थ



लिखा है, जो कि इस महाविद्या की सिद्धि के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। यह ग्रन्थ अत्यन्त गोपनीय और दुर्लभ रहा, किन्तु तिब्बत के मठों में इसकी प्रति उपलब्ध है, जिसका अध्ययन कर साधना रूप आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। इस महाग्रन्थ में लिखा है कि—

**ब्रह्मास्त्र च प्रवक्ष्यामि सदयः प्रत्यय कारणम्।**

**यस्य स्मरण मात्रेण पवनोऽपि स्थिरायेत् ॥**

इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद मात्र स्मरण से ही प्रचण्ड पवन भी स्थिर हो जाता है। भगवती बगलामुखी को “पीताम्बरा” भी कहा गया है। इसलिए इसकी साधना में पीले वस्त्रों, फूलों व रंगों का विशेष महत्व है। किन्तु साधक के मन में यह प्रश्न उठता है कि इस सर्वाधिक प्रचण्ड महाविद्या भगवती बगलामुखी का विशेषण “पीताम्बरा” क्यों ? वह इसलिए कि यह पीताम्बर पटधारी भगवान श्रीमन्नारायण की अमोघ शक्ति, उनकी शक्तिमय सहचरी है।

ब्रह्मास्त्र की अचूक क्षमता का बल तथा शत्रुओं को सहज ही स्तम्भित कर देने का प्रभाव लिए ही तो अवतरित होती हैं पीताम्बरा देवी साधक के जीवन में स्वर्ण आसन पर—स्वर्णीम आभा के साथ आसीन, पीत वस्त्रों को धारण किए, मस्तक पर चन्द्रमा को धारण करने वाली त्रिनेत्री देवी बगलामुखी का तो सम्पूर्ण स्वरूप ही मातृमय है। साधक के लिए तो ये देवी मातृमय स्वरूप हैं।

यदि देवी उग्र है तो साधक के जीवन में दुःख देने वाले शत्रुओं के लिए हैं शत्रु चाहे बाहरी हो या आन्तरिक। आन्तरिक शत्रु का तात्पर्य रोग, शोक, तनाव, पीड़ा व दरिद्रता आदि ये दस आन्तरिक शक्ति साधक को अन्दर से खोखला करने का प्रयास करते हैं। इन सभी पर बज्र की तरह प्रहार करने की क्षमता प्रदान करते हैं भगवती बगलामुखी।

भगवती बगलामुखी की षोडश शक्तियाँ—भगवती बगलामुखी में 16 शक्तियाँ समाहित हैं। ये सोलह शक्तियाँ इस प्रकार हैं—

1. मंगला 2. स्तम्भिनी 3. जूम्भिनी 4. मोहिनी 5. वश्या 6. बलाय 7. अचलाय 8. मुंधरा 9. कल्पमसा 10. धात्री 11. कलना 12. कालकर्षिणी 13. भ्रमिका 14. मन्दगमना 15. भोगस्था 16. भाविका।

साधना विधि—यह साधना किसी भी मंगलवार से आरम्भ करें। साधक ब्रह्म मुहूर्त में उठ कर स्नान आदि से निवृत्त होकर अपने पूजा कक्ष को स्वच्छ कर आलकड़ी के सिंहासन पर पीला कपड़ा बिछा दें। सिंहासन भी पीले रंग से रंगा हो स्वयं भी एवं पुरोहित भी पीला वस्त्र ही धारण करें। सिंहासन पर सिद्ध गुरु से प्राप्त किया—बगलामुखी कवच यंत्र—एक पीतल के प्लेट में स्थापित करें। पुरोहित द्वारा भगवती का षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करावें। इस पूजन में विनियोग, ऋष्यार्पण, न्यास, करन्यास, हृदयादि न्यास निम्न प्रकार करें—



### विनियोग

ओम् अस्य श्रीबगलामुखि महामंत्रस्य नारद ऋषिः त्रिष्टुप् छंदः श्री बगलामुखि देवता ह्ली बीजम् स्वाहा शक्तिः ह्लीं कीलकं मम श्री बगलामुखि प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

### ऋष्यादिन्यास

नारद ऋषये नमः ( शिरसि ), त्रिष्टुप्छंदसे नमः ( मुखे ), श्रीबगलामुखिदेवताये नमः ( हृदि ), ह्लीं बीजाय नमः ( गुह्ये ), स्वाहा शक्तये नमः ( पादयोः ), ह्लीं कीलकाय नमः ( नाभौ ), विनियोगाय नमः ( सर्वांगे ) ।

### करन्यास

ओम् ह्लीं ( अंगुष्ठाभ्यां नमः ), बगलामुखि ( तर्जनाभ्यां नमः ), सर्वदुष्टानां ( मध्यमाभ्यां नमः ), वाचं, मुखं पदं, स्तंभय ( अनामिकाभ्यां नमः ), जिह्वां कीलय कीलय ( कनिष्ठिकाभ्यां नमः ), बुद्धि नाशय ह्लीं ओम् ( करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ) ।

### हृदयादिन्यास

ओम् ह्लीं ( हृदयाय नमः ), बगलामुखि ( शिरसि स्वाहा ), सर्वदुष्टानां ( शिखाये वषट् ), वाचं, मुखं पदं, स्तंभय ( कवचाय हुम ), जिह्वां कीलय कीलय ( नेत्रत्रयाय वौषट् ), बुद्धिं नाशय ह्लीं स्वाहा ( अस्त्राय फट् ) ।

### ध्यानम्

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्न वे द्यां सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम् ।  
पीतांबरभरणमाल्यविभूषितांगी देवी भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम् ॥  
जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रुन परिपीडयंतीम् ।  
गदाभिघातेन च दक्षिणेन पीतांबरद्वयां द्विभुजा नमामि ॥  
नोट—षोडशोपचार पूजन के पश्चात् नीचे लिखित स्त्रोत का पाठ करें —

### स्तोत्रम्

चलत्कनक कुंडलोल्लसित चारु गंडस्थलां ।  
लसत्कनक चंपक द्युतिमादिंदु बिम्बाननाम् ॥  
गदाहत विपक्षिकां कलितलोजिह्वांचला ।  
स्मरामि बगलामुखिं विमुखवांगमुखस्तम्भिनीम् ॥



पीयूषोदधिमध्यचारुविलसद् रक्तोत्पले मंडपे ।  
 सतिसहासन मौलिपातितरिपुं प्रेतसनाध्यासिनीम् ॥  
 स्वर्णाभां करपीडितारिरसनां भ्राम्यद्गदां विभ्रवा ।  
 मित्थं ध्यायेति यांति तस्य विलयं सद्योऽथ सर्वापदः ॥  
 देवि त्वच्चरणांबुजार्चनकृते य ) पीतपुष्पांजलिं ।  
 भक्त्या वामकरे निधाय च मनुं मंत्री मनोरक्षरम् ॥  
 पीठ ध्यानपरोऽथ कुंशकवशाद् बीजं स्मरेत् पार्थिवं ।  
 तस्यामित्रमुखस्य वाचि हृदये जाड्यं भवेत् तत्क्षणात् ॥  
 वादी मूककि रंकति क्षितिपतिर्वेश्वानरः शीतति ।  
 क्रोधी शांयति दुर्जनः सुजनति क्षिप्रानुगः खंजति ॥  
 गर्वी खर्वति सर्वविच्च जडति त्वद्यंत्रणायंत्रितः ।  
 श्रीनित्ये बगलामुखि प्रतिदिनं कल्याणि तुभ्यं नमः ॥  
 मंत्रस्तावदलं विपक्षदलनं स्तोत्र पवित्रं च ते ।  
 यत्र वादिनियंत्रण त्रिजगतां चित्रं च जेत्र च ते ॥  
 मातः श्रीबगलेति नाम ललितं यस्यास्ति जंतोर्मुखे ।  
 त्वं नामग्रहणेन संसदि मुखस्तंभो भवेद् वादिनाम् ॥  
 दुष्टस्तंभनग्रविघ्नशमनं दारिद्र्य विद्रावणं ।  
 भूभृद्भीशमनं चला मृगदृशां चेतः समाकर्षणम् ॥  
 सौभाग्यैकनिकेतनं समदृशः कारुण्यपूर्णांमृतं ।  
 मृत्योम्मरिणमाविरस्तु पुरतो मातस्त्वदीयं वपुः ॥  
 मातर्भजयं द्विपक्षिवदनं जिह्वांचलं कीलय ।  
 ब्राह्मी मुद्य नाशयाशु धिषणामुग्रां गतिं स्तंभय ॥  
 शत्रूश्चक्षुदेवि तीर्णयणागदया गौरांगि पीतांबरे ।  
 विघ्नौघं बगले हर प्रणमतां कारुण्यपूर्णेक्षणे ॥  
 मातर्मैरवि भद्रमहाकालिविजये वाराहि विश्वाश्रये ।  
 श्रीविद्ये समय महेशि बगले कामेशि रामे रमे ॥  
 मातंगि त्रिपुरे परात्परतरे स्वर्गापवर्गप्रदे ।  
 दासोऽहिं शरणागतः करुण्या विश्वेश्वरि त्राहि माम् ॥  
 संरंभे चोरसंघे प्रहरणसमये बंधने वारिमध्ये ।  
 विद्यावादे विवादे प्रकुपितनृपतौ द्विकाले निशायकम् ॥  
 वश्ये वा स्तंभने वा रिपुवधसमये निर्जने वा वने वा ।  
 गच्छेत्तिष्ठेत्स्त्रिकालं यदि पठति शिवं प्राप्नुयादाशु धीरेः ॥



नित्यं स्तोत्रमिदं पवित्रमिह यो देव्याः पठत्यादराद् ।  
 धृत्वा यंत्रमिदं तथैव समरे वाहो करे वा गले ॥  
 राजानोऽप्यरयो मदांधकरिणः सर्पा मृगेंद्रादिकास्ते ।  
 वै यांति विमोहिता रिपुगणा लक्ष्मीः स्थिराः सिद्धयाः ॥  
 त्वं विद्या परमा त्रिलोकजननो विघ्नौघसंछेदिनी ।  
 योषाकर्षणकारिणी त्रिजगतामानंदसंवर्धिनी ॥  
 दुष्टोच्चाटनकारिणी जनमतः सम्मोहसंदायिनी ।  
 जिह्वाकीलनभैरवी विजयते ब्रह्मादिमंत्रो यथा ॥  
 विद्यलक्ष्मी सर्वसौभाग्यमायुः पुत्रेः पौत्रे सर्वसाम्राज्यसिद्धि ।  
 मानं भोगो वश्यमारोग्य सौख्य प्राप्तंतद्भूतलेऽस्मिन्नेन ॥  
 यत्कृत जपसंनाहं गदितं परमेश्वरि ।  
 दृष्टानां निग्रहथर्या तद्गुहाण नमोऽस्तु ते ॥  
 ब्रह्मास्त्र विख्यातं त्रि लोकेषु विश्रुतम् ।  
 गुरुभक्ताय दातव्यं न देयं यस्य कस्यचित् ॥  
 पीतांबरं द्विभुजां च त्रिनेत्रां गात्रकोज्ज्वलाम् ।  
 शिलमुद्गरहस्तांच स्मरेत् तां बगलामुखीम् ॥

नोट—स्तोत्र पाठ के बाद हल्दी की 108 दाने वाली माला से नीचे लिखित मंत्र का जप आरम्भ करें।

### साधना मंत्र

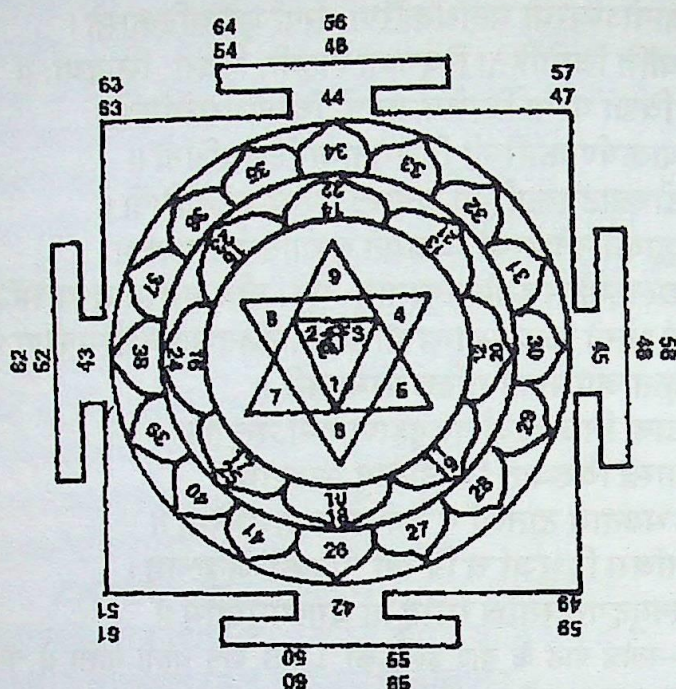
ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं,  
 स्तम्भ्य जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्रीं फट् स्वाहा ॥

उपरोक्त मंत्र का जप 41 दिन में एक लाख एकवान हजार सम्पन्न करें। अन्तिम दिन मंत्र जप का दशांश हवन करें। इसके पश्चात् 5 ब्राह्मण एवं 11 कुंवारी कन्याओं को पीले रंग की वस्तु भोजन करावें। पूजा में सभी सामग्री पीले रंग की होनी चाहिए। दीपक की बत्ती भी हल्दी में रंगकर पीला बनाकर जलाएं।

यंत्र साधना विधि—बगलामुखी यंत्र की साधना शुभ मुहूर्त चतुर्दशी के दिन या किसी भी मंगलवार के दिन आरम्भ करें। प्रातः काल स्नान से पवित्र होकर, पूजा स्थल पर पीले रंग से रंगा आम लकड़ी का सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर पीला आसन बिछाकर माता बगलामुखी की तस्वीर स्थापित करें। सिंहासन पर गुरु द्वारा प्राप्त—“सिद्ध बगलामुखी कवच यंत्र” पीतल की प्लेट में रखें। इसके बाद विधि पूर्वक षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करें। पूजन के बाद भोजपत्र पर हल्दी की स्याही व अनार की कलम से यंत्र निर्माण करें—



## [ श्री बगलामुखी यंत्र ]



यंत्र निर्माण करने के पश्चात् पीले रंग के ताबीज नें भरकर, ताबीज में सूती पीले डोरे डालकर गुरु कवच यंत्र वाले प्लेट में रख दें। इसके पश्चात् पीछे पृष्ठ में लिखित बगलामुखी स्तोत्र का पाठ हाथ जोड़कर करें। स्तोत्र पाठ के बाद नीचे लिखित मंत्र का 41 दिन में 1 लाख 51 हजार मंत्र जप सम्पन्न करें।

## यंत्र सिद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं बगलामुखी सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं, स्तम्भ्य जिह्वां  
कीलय बुद्धि विनाशय ह्रीं फट् स्वाहा ॥

अन्तिम दिन मंत्र जप का दशांश हवन करें। हवन सामग्री हल्दी से रंगा दें। इसके बाद आरती और विसर्जन क्रिया सम्पन्न कर स्वयं निर्मित यंत्र गले में धारण कर लें। गुरु कवच यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें।

इसके पश्चात् मंगलवार के दिन स्वयं यंत्र निर्माण कर, विधिपूर्वक पूजन व 21 माला मंत्र जप सम्पन्न कर जिसे भी प्रदान करेंगे, उनकी समस्त इच्छाओं की पूर्ति हो जायेगी और उनके दुश्मन का सर्वनाश हो जायेगा। आजमा कर देखें। यह दिव्य मंत्र मुझसे प्राप्त कर हजारों लोग लाभ उठा चुके हैं और यह यंत्र चमत्कारिक फल प्रदान करता है।



## भगवती मातंगी महाविद्या साधना

भगवती मातंगी महाविद्या सिद्धि से लाभ—तंत्र शास्त्रों में वर्णित है कि जो भी साधक भगवती मातंगी के मंत्र की साधना करता है अथवा “सिद्ध मातंगी यंत्र” धारण करता है वह वाद-विवाद में हार नहीं सकता। साधक जिस कार्य में हाथ डालता है उसमें विजय ही प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति समाज में सम्मानीय एवं पूजनीय होता है। उच्च कोटि के मंत्रीगण एवं अधिकारी भी उसकी बात को मस्तक पर धारण करते हैं। वह सभी का प्रिय होता है, जीवन में उसे किसी चीज का अभाव नहीं रहता। ज्योतिष शास्त्र, विज्ञान, उच्च विद्याध्ययन, संगीत, वेद-वेदांग, औषधि विज्ञान तथा वकालत करने वाले साधकों को अपूर्व क्षमता प्राप्त हो जाती है। इसके साथ-साथ उसका पारिवारिक जीवन अत्यन्त ही सुखद हो जाता है। घर में यदि कोई क्लेश व्याप्त हो तो वह भी शान्त हो जाता है। साधारण जड़मति मनुष्य को भी ये प्रकाण्ड विद्वान बनाने में समर्थ है।

मातंगी भगवती के अन्य रूप और शक्तियां—भगवती मातंगी के अन्य नाम इस प्रकार हैं। उच्छिष्टा, सम्मोहिनी, लघु श्यामा, राज मातंगी, वश्च मातंगी, चंतु मातंगी, कर्ण मातंगी, षडाम्नाय—साध्या सुमुखी मातंगी। रति, प्रीति, मनोभवा, क्रिया, शुद्धा, अनंग कुसुमा, अनंग मदना और मदनालसा—ये भगवती की आठ शक्तियां हैं।

साधना विधि—यह साधना शुभ मुहूर्त में कृष्ण पक्ष की अष्टमी, होली, दिवाली, अथवा चतुर्दशी की रात्रि में प्रारम्भ की जाती है। उपरोक्त रात्रि में स्नान से पवित्र होकर आम लकड़ी के सिंहासन पर सफेद आसन बिछाकर भगवती मातंगी की तस्वीर की स्थापना करें। पूजा करने हेतु उत्तर मुख होकर बैठें। सफेद वस्त्र धारण करें और पूजन सामग्री भी सफेद रंग का इस्तेमाल करें। विधि विधान से षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करें और विनियोग, ऋष्यादि-न्यास करन्यास, हृदयादि न्यास, ध्यान मंत्र निम्न मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें।

### विनियोग

ॐ अस्य श्रीमातंगी महामंत्रस्य, दक्षिणामूर्ति ऋषिः, विराट छन्दः, श्री मातंगी देवता, ह्रीं बीजम्, हूं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, श्री मातंगी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

### ऋष्यादिन्यास

ॐ दक्षिणामूर्ति ऋषये नमः शिरसि।

विराट छन्दसे नमः मुखे।

श्रीमातंगी देवतायै नमः हृदि।

ह्रीं बीजाय नमः गुह्ये।



हूं शक्तये नमः पादयोः ।  
 क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।  
 विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

### करन्यास

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।      ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः ।  
 ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।      ॐ ह्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः ।  
 ॐ हूं मध्यमाभ्यां नमः ।      ॐ हंः करतलपृष्ठाभ्यां नमः ।

### हृदयादिन्यास

ॐ ह्रां हृदयाय नमः ।      ॐ ह्रैं कवचाय हुम् ।  
 ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा ।      ॐ ह्रौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।  
 ॐ हूं शिखायै वषट् ।      ॐ हंः अस्त्राय फट् ।

### ध्यान मंत्र

श्यामां शुभ्रांशु भालां त्रिनयन कमलां रत्नसिंहासनस्थां ।  
 भक्ताभीष्ट प्रदात्रीं सुरनिकर करा सेव्य कञ्जाङ्गियुग्याम् ॥  
 नीलाम्भोजांश कान्तिनिशिचर निकरारण्य दावाग्नि रूपां ।  
 पाशं खड्गं चतुर्भिर्वर कमल करैः खेटकाञ्चाकुशञ्ज ।  
 मातङ्गी मावहन्ती मभिमत फलदां मोदिनीं चिन्तयामि ॥

नोट-षोडशोपचार पूजन, विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृदयादि न्यास और ध्यान मंत्र सम्पन्न होने के बाद निम्नलिखित “कवच” का पाठ करें :-

### कवचम्

ओम् शिरो मातङ्गिनी पातु भुवनेशक्षी तु चक्षुषी ।  
 तोडला कर्णयुगलं त्रिपुरा वदनं मम ॥  
 पातु कंठे महामाया हृदि माहेश्वरी तथा ।  
 त्रिपुष्पा पार्श्वयो पातु गुदे कामेश्वरी मम ॥  
 उरुद्वये तथा चंडी जंघयोश्च हरिप्रिया ।  
 महामाया पादयुग्मे सर्वांगेषु कुलेश्वरी ॥  
 अंग प्रत्यंगकं चैव सदा रक्षतु वैष्णवी ।  
 ब्रह्मरंध्रे सदा रक्षेन्मातङ्गी नाम संस्थिता ।  
 ललाटे रक्षयेन्नित्यं महापिशाचिनीति च ।  
 नेत्राभ्यां सुमुखीरक्षेद् देवी रक्षतु नासिकाम् ॥  
 महापिशाचिनी पायान्मुखे रक्षतु सर्वदा ।  
 लज्जा रक्षतु मां दंते चोष्ठा सम्मार्जनीकरी ॥  
 चिबूके कंठदेशे तु चकार त्रितयं पुनः ।



सविसर्ग महादेवी हृदयं पातु सर्वदा ॥  
 नाभिं रक्षतु मां लोला कालिकावतु लोचने ।  
 उदरे पातु चामुंडा लिंगे कालिकावतु तथा ॥  
 उग्रतारा गुदे पातु पादौ रक्षतु चांबिका ।  
 भुजौ रक्षतु शर्वाणी हृदयं चंड भूषणा ॥  
 जिह्वायां मातृका रक्षेत् पूर्वं रक्षतु वारुणे ।  
 विजया दक्षिणे पातु मेघा रक्षतु पुष्टिका ॥  
 नैऋत्यां सुदया रक्षेत् वायव्यां पातु लक्ष्मणा ।  
 ऐशान्या रक्षयेद् देवीं मातंगी शुभकारिणी ॥  
 रक्षेत् सुरेशा चाग्नेये बगला पातु चोत्तरे ।  
 ऊर्ध्वं पातु महादेवी देवानां हितकारिणी ॥  
 पाताले पातु मां नित्यं वशिनी विश्वरूपिणी ।  
 प्रणवं च ततो माया कामबीजं च कूर्चकम् ॥  
 मातंगिनी डे.युतास्यं वह्निजाया वधिर्मनुः ।  
 साब्दैकादशवर्णा सा सर्वत्र पातु मा सदा ॥

नोट—कवच पाठ सम्पूर्ण होने के बाद निम्न मंत्र का जप आरम्भ करें। यह जप सफेद मूंगे की माला से करें।

### मातंगी सिद्धि मंत्र

माणिक्य वीणा मुपलाल यंती मदालशां मंजुल वाग्विलासाम् ।

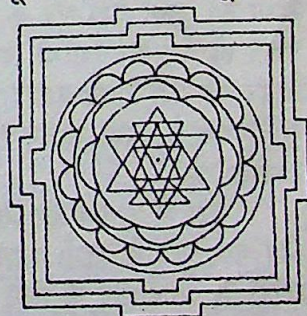
महेंद्रनील द्युति कोमलांगी मातंग कन्या मनसा स्मरामि ॥

उपरोक्त मंत्र जप सवा लाख 41 रात्रि में सम्पन्न करें। नित्य ही भगवती की आरती व पंचोपचार पूजन करें। अन्तिम दिन मंत्र जप का दशांश हवन करें। 11 ब्राह्मण व 21 कन्याओं को मीठा भोजन करावें।

मातंगी महाविद्या यंत्र साधना—इस महायंत्र की साधना बसंत-पंचमी, होली या दीपावली की रात्रि में करें। मातंगी महाविद्या मंत्र साधना के अनुसार ही सिंहासन की स्थापना, गुरु कवच यंत्र स्थापना एवं षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करें। पूजन के पश्चात् भोजपत्र के ऊपर अनार की कलम व सफेद चन्दन की स्याही से निम्न रचित यंत्र का निर्माण करें—

### [ श्री मातंगी यंत्र स्वरूप ]

निर्मित यंत्र को चांदी की ताबीज में भरकर सफेद सूती डोरे डालकर, गुरु कवच यंत्र वाले प्लेट में रख दें। इसके बाद निम्न मंत्र द्वारा भगवती का ध्यान करें।





## ध्यान मंत्र

माणिक्य वीणामुपलालयंती मदालसां मंजुल वाग्विलासाम् ।  
 महेंद्रनीलद्युति कोमलांगी मातंग कन्या मनसा स्मरामि ॥  
 श्यामांगीं शशिशेखरां त्रिनयनां सदरत्नसिंहासने,  
 संस्थां रत्नविचित्रभूषणयुतां संक्षीणमध्यस्थलाम् ।  
 आपीनस्तमंडलां स्मितमुखीं वंदे दधानां क्रमाद्,  
 वेदैर्बाहुभिर्नूंकुशासिलतिके पाशं तथा खेटकम् ॥  
 श्यामां शुभ्राशुबालां त्रिकमलनयनां रत्नसिंहासनस्थां,  
 भक्ताभीष्ट प्रदात्रीं सुरनिकरकरसेव्यकंजाङ्गि, घ्रयुग्माम् ।  
 नीलां भोजांशुकान्तिं निशिचरनिकरारंयदावाग्निरूपां,  
 पाशं खड्गं चतुर्भिर्वरकमलकरैः खेटकं चांकुशं च ॥

नोट—ध्यान मंत्र समाप्त होने के बाद रुद्राक्ष की माला से या सफेद मोती की माला से 21 दिन में नीचे लिखित मंत्र का 51 हजार मंत्र सम्पन्न करें।

## यंत्र सिद्धि मंत्र

ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातंग्ये फट् स्वाहा ॥

अन्तिम दिन मंत्र जप समाप्त होने के बाद दशांश हवन करें। तत्पश्चात् आरती व विसर्जन कर स्वयं निर्मित यंत्र को गले में धारण कर लें। गुरु कवच यंत्र को नदी में विसर्जित कर दें। इसके पश्चात् किसी भी मंगलवार के दिन यंत्र निर्माण कर, विधि पूर्वक पूजन कर, 21 माला मंत्र जप सम्पन्न कर जिसे भी प्रदान करेंगे, वह भी सम्पूर्ण लाभ प्राप्त करेगा।

### भगवती भुवनेश्वरी महाविद्या साधना

श्री भुवनेश्वरी महाविद्या साधना की महानता—सारी रात हनुमान ने आंखों में बिता दी थी। उन्हें पल भर भी नींद नहीं आयी थी, अभी हाल ही में गुप्तचर संदेश लेकर आया था कि रावण ने युद्ध में विजय हेतु “महाचण्डी” यज्ञ आरम्भ कर दिया है। उसने देश भर के उत्कृष्ट विद्वानों को आमंत्रण भेजा था, और वे सभी इकट्ठे हो गए थे। बस दो दिन बाद से ही इस महायज्ञ का प्रारम्भ हो जायेगा और अगर वह यज्ञ किसी प्रकार से सफलता पूर्वक सम्पन्न हो जाए तो रावण की विजय सुनिश्चित है, यही सोचकर अंजनी सुत सारी रात गंभीर चिन्तन में इधर-उधर टहलते रहे।

युद्ध में रावण की स्थिति दयनीय हो गई थी। उसके समस्त उच्च कोटि के वीर मारे गये थे, सभी काल कवलित हो गए थे और वह निःसहाय, निरुपाय मां चण्डी के आशीर्वाद के लिए लालायित था।



पर हनुमान को चैन कहाँ, वे तो निरन्तर इसी चिन्तन में थे कि किस प्रकार से श्री राम के सामने आने वाली विपदा को पहले से ही ध्वस्त कर दिया जाए, किस प्रकार से उनके कंटकाकीर्ण मार्ग को पुष्पों से आच्छादित कर दिया जाए ताकि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़े।

और इसके लिए अगले ही दिन हनुमान एक विप्र का रूप धरकर पहुंच गए यज्ञ स्थली पर और वहां पहुंचकर सभी ऋषि-मुनियों की पूर्ण श्रद्धा भाव से सेवा करने लगे। उनकी निःस्वार्थ सेवा भावना से सभी ऋषि-मुनि इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने विप्र के रूप में आए हनुमान को वर मांगने को कहा।

“नहीं-नहीं महात्मन! मैंने किसी प्रयोजन से आपकी सेवा नहीं की थी, मैं तो मात्र, आपका साहचर्य लाभ प्राप्त करना चाहता था,” हनुमान ने विनम्रता पूर्वक कहा।

पर ऋषि भी कब मानने वाले थे, उनके बार-बार आग्रह करने पर कपि श्रेष्ठ ने एक अति विस्मित करने वाला वर मांगा, जो कि आगे जाकर श्री राम की विजय का एक मुख्य कारण बना।

महाचण्डी यज्ञ में जिस मंत्र के संपुटीकरण से हवन किया जाना था, वह था—

**जय त्वं देवी चामुण्डे जय भूतार्तिहारिणी।**

**जय सर्वगते देवि कालरात्रि नमोस्तुते ॥**

इसमें “भूतार्तिहारिणी” का अर्थ है — “सभी प्राणियों की पीड़ा हरने वाली।” हनुमान ने ऋषियों से यह वर मांगा कि वे “भूतार्तिहारिणी” में “ह” की जगह “क” का उच्चारण कर दें। बेचारे ऋषि तो वचन बद्ध थे ही, उन्होंने “तथास्तु” कह दिया। इस प्रकार वह शब्द बन गया — “भूतार्तिकारिणी”— जिसका अर्थ है — “सभी प्राणियों को कष्ट देने वाली।”

इस प्रकार एक अक्षर के बदलने मात्र से यज्ञ रावण के लिए ही अनिष्टकारी बन गया।

परन्तु इसके बाद भी हनुमान चैन से नहीं बैठे। वे तत्काल भगवान श्री राम के पास पहुंचे और विनम्रता पूर्वक कहा—

“प्रभु! हमारे युद्ध कौशल के आगे रावण की समस्त सेना का विध्वंस हो चुका है, हमारी राजनीति और आपके आशीर्वाद के द्वारा उनका अत्यधिक अहित हो चुका है, परन्तु”

“परन्तु क्या कपि श्रेष्ठ ?” श्री राम बोले।

— “परन्तु रावण अभी भी जीवित है और वही हमारा मुख्य प्रबलतम शत्रु है। उसकी नाभि में अमृत कुंड स्थापित है, जिससे वह सदैव चिर-यौवन बना रहता है और जिसके फलस्वरूप उसकी मृत्यु संभव नहीं।

इसके अलावा भी वह अपने कई आत्मजों के शव को ढो चुका है, यहां तक कि उसकी विजय का आखिरी प्रयास महा चण्डी यज्ञ भी आपकी कृपा से विफल हो



चुका है। अतः वह एक घायल सिंह की भांति हो गया है और आप तो जानते ही हैं कि सौ सिंहों से एक घायल सिद्ध अधिक खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

वैसे तो वह बड़ा मायावी और प्रपंची है। उच्च कोटि की सिद्धियाँ उसके पास हैं और समस्त प्रकृति को वह अपने नियंत्रण में ले चुका है, सारी प्रकृति उसके इशारों पर नृत्य करती है। साथ ही साथ उसके पास अद्वितीय दिव्य शस्त्रों की भरमार है और उनमें कुछ तो ऐसे हैं जो समस्त ब्रह्माण्ड को विनष्ट करने में सक्षम हैं।

“तो तुम्हारा क्या विचार है हनुमान ?” श्री राम ने पूछा

“प्रभु के आशीर्वाद से मुझे स्मरण आ रहा है कि बाल्यावस्था में मैं शिक्षा प्राप्त करने के दौरान एक अद्वितीय महा तेजस्वी साधना पद्धति मेरे गुरु सूर्यदेव ने प्रदान की थी, जो “भुवनेश्वरी भगवती” से सम्बन्धित है। उनके अनुसार समस्त देवियों की शक्ति को भुवनेश्वरी के रूप में सिद्ध कर लेने से वह साधक अजेय हो जाता है और फिर उसके सामने समस्त त्रैलोक्य के देवता, दानव, मनुष्य, गन्धर्व आदि भी युद्ध में नहीं टिक सकते।”

“जिस क्षण यह साधना सम्पन्न होती है, उसी क्षण से शत्रु काल के सुपुर्द हो जाता है और उसका विनाश उतना ही निश्चित हो जाता है, जितना कि सूर्य और चन्द्र का अस्तित्व में होना।”

और प्रभु राम मुस्करा दिए, प्रभु अपने भक्त की प्रसन्नता के लिए स्वयं विष्णु अवतार होते हुए भी शिष्य भक्त हनुमान के निवेदन पर उसी क्षण भुवनेश्वरी साधना एवं अनुष्ठान का प्रारम्भ कर दिया एवं उसे सफलता पूर्वक सम्पन्न किया।

और इतिहास भी इस बात का गवाह है, कि जो रावण नाभि में अमृत कुंड स्थापित होने की वजह से अजेय था, अंततः काल के विकराल पंजों से बच नहीं पाया।

वास्तव में ही यह साधना अपने आप में महातेजस्वी एवं अनिवर्चनीय है। ऐसा आज तक हुआ ही नहीं, कि व्यक्ति यह साधना सम्पन्न करे और उसका परिणाम उसे न मिले।

ऊपर दिए गए संदर्भ में साधना का एक ही तथ्य स्पष्ट किया गया है। वैसे इसके सफलता पूर्वक सम्पन्न होने से अथवा सिद्ध गुरु द्वारा प्राप्त “सिद्ध भुवनेश्वरी यंत्र” धारण करने से निम्न स्थितियाँ साधक के जीवन में अंकुरित हो जाती हैं—

भगवती भुवनेश्वरी मंत्र सिद्धि करने या सिद्ध भुवनेश्वरी यंत्र धारण करने से लाभ—

1. यह यंत्रराज गले में धारण कर किसी से भी मिलने जाये और कोई भी कार्य कहे तो सामने वाला तुरन्त कार्य कर देता है।

2. जिस लड़के-लड़की के विवाह में विलम्ब हो रहा हो, उसे यंत्र धारण करने से तीन महीने के अन्दर विवाह हो जाता है और दाम्पत्य जीवन सदैव सुखी रहता है।



3. यदि यंत्रराज को धारण कर किसी अधिकारी या बहुत बड़े व्यापारी के सामने जाकर अपनी इच्छा प्रकट करें, अथवा प्रमोशन, स्थान्तरण या कोई एजेन्सी प्राप्त करने की बात कहें तो वह निश्चय ही स्वीकार कर ली जाती है।

4. यदि यंत्रराज को जल से धोकर, वह जल किसी को भी पिला देंगे तो वह आपके वश में हो जायेगा [या हो जायेगी], यह अनुभूत प्रयोग है, तुरन्त इसका प्रभाव होता है।

5. यह दिव्य यंत्र धारण करने से दुकान या फैक्ट्री अथवा घर के ऊपर किए गए तांत्रिक प्रयोग समाप्त हो जाता है और व्यापार में आश्चर्य जनक वृद्धि होने लगती है।

6. यदि यंत्र धोकर जल रोगी को पिलाया जाये तो वह रोग मुक्त हो जाता है।

7. इस दिव्य यंत्र को धोकर, धोए हुए जल में 101 काली मिर्च डालकर शत्रु के आंगन में उड़ेल दिया जाये, या जमीन में गाड़ दिया जाये तो उसका विनाश हो जाता है।

8. यदि इस यंत्र को धोकर, रजस्वला समय में स्त्री को तीन दिन तक पिलाई जाये तो वह अवश्य गर्भ धारण करती है और पुत्र ही होता है।

साधकों! मैंने इस यंत्र के प्रयोग को कई स्थानों पर कई प्रकार से आजमाया है, कितने दुखी व्यक्ति को यह यंत्र सिद्ध करके दिया हूँ, इस कलियुग में भी इस दिव्य महान् यंत्र राज का प्रभाव देखकर मैं दंग रह गया हूँ।

नोट :- साधकों! सर्वप्रथम मैं भगवती की मंत्र साधना रूप का उल्लेख कर रहा हूँ, इसके पश्चात् यंत्र साधना की विधि वर्णित करूंगा।

श्री भुवनेश्वरी साधना विधि—यह महासाधना नवरात्रि के अवसर पर सम्पन्न करने का विधान है। प्रथम नवरात्रि से आरम्भ कर नवमी वाली रात्रि को साधना पूर्ण करें, अर्थात् यह साधना नौ दिनों में पूर्ण होती है। नौ रात्रि में 51 हजार मंत्र जप सम्पन्न करना होता है।

निर्धारित दिवस की रात्रि में लगभग 10 बजे साधक स्नान आदि से निवृत्त होकर श्वेत स्वच्छ धोती धारण कर श्वेत आसन पर पूर्वाभिमुख होकर बैठें। सामने आम लकड़ी से बना लाल रंग का सिंहासन स्थापित कर, उस पर लाल रंग का आसन बिछाकर माता भुवनेश्वरी की तस्वीर स्थापित करें।

तत्पश्चात् गुरु से प्राप्त किया — “सिद्ध भुवनेश्वरी कवच यंत्र” तांबे के प्लेट में रखकर भगवती तस्वीर के समक्ष रख दें। धूप दीप जगाकर षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करें। इस महासाधना में विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृदयादि न्यास निम्न मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें।

### विनियोग

अस्य श्री भुवनेश्वरी मंत्रस्य शक्तिऋषिर्गायत्रीच्छंदसे भुवनेश्वरी देवता हकरो बीजम्, ईकारः शक्तिः, रेफः कीलकं चतुर्वर्गसिद्धयर्थं जपे विनियोगः।



## ऋष्यादिन्यास

ऋषये नमः ( शिरसि ), गायत्रीछंदसे नमः ( मुखे ), श्री भुवनेश्वरी देवतायै नमः ( हृदये ), हकार बीजाय नमः ( गुह्ये ), ईकार शब्दया नमः ( पादयोः ), रकार कीलकाय नमः ( नाभौ ), विनियोगाय नमः ( सर्वांगे ) ।

## करन्यास

ओम् ह्रां ( अंगुष्ठाभ्यां नमः ), ओम् ह्रीं ( तर्जनीभ्यां नमः ), ओम् हुं ( मध्यमाभ्यां नमः ), ओम् हूं ( अनामिकाभ्यां नमः ), ओम् हौं ( कनिष्ठिकाभ्यां नमः ), ओम् हः ( करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ) ।

नोट-षोडशोपचार पूजन सम्पन्न होने के बाद “भुवनेश्वरी कवच” का पाठ करें-

## भुवनेश्वरी कवच

ह्रीं मे पातु भुवनेशी ललाटकम् ।  
 एं पातु दक्ष नेत्रे मे ह्रीं पातु वाम लोचनम् ॥  
 श्रीं पातु दक्ष कर्णे मे त्रिवर्णात्मा महेश्वरी ।  
 वाम कर्णे सदापातु एं घ्राणं पातु मे सदा ॥  
 ह्रीं पातु वदनं देवी एं पातु रसना मम् ।  
 वस्पुटा व त्रिवर्णात्मा कण्ठे पातु परात्मिका ॥  
 श्रीं स्कंधौ पातु नियतं ह्रीं भुजौ पातु सर्वदा ।  
 क्लीं करौ त्रिपुरा पातु त्रिपुरेश्वर्यदायिनी ॥  
 ॐ पातु हृदयं ह्रीं मे मध्यदेशे सदाऽवतु ।  
 क्रीं पातु नाभिदेशं सा त्र्यक्षरी भुवनेश्वरी ॥  
 सर्व बीज प्रदा पृष्ठं पातु सर्व वशंकरी ।  
 ह्रीं पातु गुह्यदेशं मे नमो भगवती कटिम् ॥  
 माहेश्वरी सदापातु शंखिनी जानुयुक्मकम् ।  
 अन्नपूर्णा सदापातु स्वाहा पातु पादद्वयम् ॥  
 सप्तदशाक्षरी पायादन्नपूर्णात्मिका परा ।  
 तारं माया रमा कामः षोडशाणी ततः परम् ॥  
 शिरस्थां सर्वदा पातु विशत्यर्णात्मिका परा ।  
 तारं दुर्गे युगं रक्षिणी स्वाहेति दशाक्षरी ॥  
 जयदुर्गा घनश्यामा पातु मां पूर्वतो मुदा ।  
 मायाबीजादिका चैवा दशार्णा च ततः परा ॥  
 उत्तमकांचना भाषा जयदुर्गा ननेऽवतु ।



वारं ह्रीं दुं दुर्गायं नमोऽष्टावर्णात्मिका परा ॥  
 शंख चक्र धनुष वार्णधरा मां दक्षिणेऽवतु ।  
 नैर्ऋत्यां सर्वदा पातु महिषासुर नासिनी ।  
 माया पद्मावती स्वाहा सप्तार्णां प्रकीर्तिता ॥  
 पद्मावती पद्मसंस्था पश्चिमे मां सदाऽवतु ।  
 पाशांकुशपुटा माये हि परमेश्वरि स्वाहा ॥  
 त्र्योदशार्णां ताराधा अश्वरूढा ननेऽवतु ।  
 सरस्वती पञ्चशरे नित्यक्लिन्ने मदद्रवे ॥  
 स्वाहा रण्येक्षरी विद्याममुत्तरे सदाऽवतु ।  
 तारं माया तु कवचं सं रक्षेत सदा वधुः ॥  
 हूं क्षेणं फट् महाविद्या दृढशार्णाखिलप्रदा ।  
 त्वरिताष्टा हिभिः पायाच्छिवकोणे सदा च माम् ॥

नोट—“कवच पाठ” पूर्ण होने के पश्चात् मूंगे की माला से नीचे लिखित मंत्र का जप आरम्भ करें।

### सिद्धि मंत्र

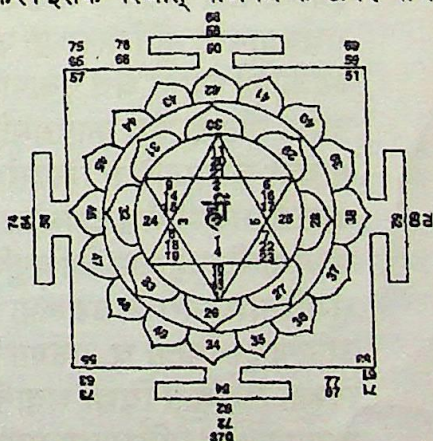
॥ॐ एं ह्रीं श्रीं नमः ॥

उपरोक्त मंत्र का 9 रात्रि में 51 हजार मंत्र जप सम्पन्न होने के बाद, मंत्र का दशांश हिस्सा मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें, आरती कर्म सम्पन्न कर साधना विसर्जन करें। तत्पश्चात् 21 कन्याओं को मीठा भोजन करावें, लाल वस्त्र प्रदान करें और दक्षिणा देकर विदा करें। इस प्रकार साधना सम्पन्न करने से समस्त कामनाओं की पूर्ति हो जाती है।

भुवनेश्वरी यंत्र साधना विधि—मंगलवार की रात्रि में मंत्र साधना विधि के अनुसार ही भगवती का षोडशोपचार पूजन सम्पन्न करें। इसके पश्चात् भोजपत्र के ऊपर नीचे वर्णित यंत्र, अनार की कलम और रोली चन्दन की स्याही से निर्माण करें—

### [ भुवनेश्वरी यंत्र स्वरूप ]

निर्मित यंत्र को ताबीज में भरकर, लाल सूती डोरे डालकर — गुरु द्वारा प्राप्त — “सिद्ध गुरु कवच यंत्र” वाले प्लेट में रख दें। इसके पश्चात् — “भुवनेश्वरी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र का पाठ हाथ जोड़कर करें।”





## भुवनेश्वरी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र

### विनियोग

अस्य श्रीभुवनेश्वर्यष्टोत्तरशतनामस्तोत्रस्य शक्तिऋषिः गायत्रीच्छंदः, श्रीभुवनेश्वरीदेवता मम चतुर्वर्गसाधनार्थं पाठे, पूजने विनियोगः ।

इसके बाद साधक न्यासादि की क्रिया कर स्तोत्र का पाठ करे ।

श्रीभुवनेश्वरीदेवता मम चतुर्वर्गसाधनार्थं पाठे, पूजने विनियोगः ।

इसके बाद साधक न्यासादि की क्रिया पर स्तोत्र का पाठ करें ।

महामाया महाविद्या महायोगा महोत्कटा ।

माहेश्वरी कुमारी च ब्रह्माणी ब्रह्मरूपिणी ॥

वागीश्वरी योगरूपा योगिनी कोटिसेविता ।

जया च विजया चैव कौमारी सर्वमंगला ॥

हिङ्गुला च विलासी च ज्वालिनी ज्वालरूपिणी ।

ईश्वरी क्रूरसंहारी कुलमार्गप्रदायिनी ॥

वैष्णवी सुभगाकारा सुकुल्याकुलपूजिता ।

वामांगा वामचारा च वामदेवप्रिया तथा ॥

डाकिनी योगिनीरूपा भूतेशी भूतनायिका ।

पद्मावती पद्मनेत्रा प्रबुद्धा च सरस्वती ॥

भूचरी खेचरी माया मातंगी भुवनेश्वरी ।

कांता पतिव्रता साक्षी सुचक्षुः कुंडवासिनी ॥

उमा कुमारी लोकेशी सुकेशी पद्मरागिनी ।

इंद्राणी ब्रह्मचांडाली चंडिका वायुवल्लभा ॥

सर्वधातृमयी मूर्तिजलरूपा जलोदरो ।

आकाशी रणगा चैव नृकपाल विभूषणा ॥

नर्मदा मोक्षदा चैव कामधर्मार्थदायिनी ।

गायत्री चैव सावित्री क्षिप्रसंध्या तीर्थगामिनी ॥

अष्टमी नवमी चैव दशम्येकादशी तथा ।

पौर्णमासी कुहूरूपा तिथिमूर्तिस्वरूपिणी ॥

सुरारिनाशकारी च उग्ररूपा च वत्सला ।

अनला अर्धमात्रा च अरुणा पीतलोचना ॥

लज्जा सरस्वती विद्या भवानी पापनाशिनी ।

नागपाशधरा मूर्तिरगाधा घृतकुण्डाला ॥



**क्षत्ररूपा क्षयकरी तेजस्विनी शुचिस्मिता ।**

**अव्यक्ता व्यक्तलोका च शुभ्ररूपा मनस्विनी ॥**

नोट—भुवनेश्वरी अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र पाठ समाप्त होने के बाद नीचे लिखित मंत्र का जप 9 रात्रि में 51 हजार सम्पन्न करें। नित्य ही भगवती का पंचोपचार पूजन व आरती किया करें। अन्तिम रात्रि में मंत्र जप सम्पन्न होने के पश्चात् 101 माला मंत्र जपते हुए हवन करें।

**यंत्र साधना मंत्र**

**॥ॐ ऐं ह्रीं श्री नमः ॥**

हवन कर्म समाप्त होने के पश्चात् आरती करके साधना विसर्जन करें। इसके पश्चात् यंत्र को प्रणाम कर गले में धारण कर लें। गुरु कवच यंत्र को बहती दरिया में प्रवाहित कर दें, तथा नौ दिनों के फूल, बिल्वपत्र, हवन भस्म आदि सामग्री को दरिया में ही विसर्जित करें।

तत्पश्चात् मंगलवार के दिन यंत्र विधिपूर्वक निर्माण करें, षोडशोपचार पूजन सम्पन्न कर, 21 माला मंत्र जप पूर्ण कर किसी को प्रदान करेंगे तो उसका जीवन धन्य हो जायेगा। महा से महा दुर्भाग्यशाली, दरिद्र व्यक्ति का भी जीवन सफल हो जायेगा और उसकी समस्त कामना पूर्ण हो जायेगी।

### **भगवती त्रिपुर भैरवी महाविद्या साधना**

भगवती त्रिपुर भैरवी महाविद्या की महानता—माहेश्वरी त्रिपुर भैरवी को “त्रिपुर सुन्दरी” एवं “षोडसी” नाम से भी साधना की जाती है। शत्रुओं का दलन करने वाली, त्रिजगत धारिणी ये भगवती माता महाकाली के ही स्वरूप है। बाराही पुराण में वर्णित है, कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव ने भी इनकी साधना व आराधना की है, इसलिए इनका नाम “त्रिपुरा” पड़ा।

त्रिपुर भैरवी महाविद्या साधना से लाभ—त्रिपुर भैरवी की कृपा से साधक समस्त प्रकार की सिद्धियां प्राप्त कर लेता है। उसकी समस्त इच्छाएं व कामनाएं पूर्ण हो जाती है, जिससे साधक स्वयं ही आश्चर्य चकित हो जाता है। वास्तव में तो वह अपने आप में ही अद्वितीय पुरुष, तेजस्वी युग पुरुष बन जाता है। साथ ही साथ वह समस्त ज्ञान—विज्ञान में पारंगत हो वर्तमान पीढ़ी का मार्ग दर्शन करने में सक्षम हो जाता है। उसे दुनिया दिव्य पुरुष की संज्ञा में विभूषित कर आदर भाव से देखती है।

साधना विधि—यह महा साधना शुभ मुहूर्त के किसी भी शनिवार को आरम्भ कर सकते हैं। रात्रि 11 बजे स्नानादि से पवित्र होकर एकान्त कमरे में पवित्र स्थान पर आम लकड़ी से बना, लाल रंग से रंगा हुआ सिंहासन की स्थापना करें। सिंहासन पर लाल वस्त्र के आसन बिछाकर भगवती की तस्वीर रखें, धूप दीप जलावें। तत्पश्चात् लाल कम्बल के आसन पर बैठकर, महाकाली षोडशोपचार पूजन विधि से पूजन आरम्भ करें। स्वयं लाल वस्त्र पहनें और लाल रंग का ही पुष्प,



तथा पूजन सामग्री इस्तेमाल करें। विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृदयादि न्यास, ध्यान मंत्र, मूल मन्त्र, कवच पाठ निम्न मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें—

### विनियोग

ॐ अस्य श्रीत्रिपुरभैरवी मंत्रस्य, दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्चछन्दः, त्रिपुरभैरवी देवता, वाग्भोम बीजम्, शक्ति बीजं शक्तिः, कामराज कीलकं, श्रीत्रिपुरभैरवी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

### ऋष्यादिन्यास

ॐ दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः शिरसि ।

ॐ पंक्तिश्छन्दसे नमः मुखे ।

श्रीत्रिपुरभैरवी देवतायै नमः हृदि ।

वाग्भोम बीजाय नमः गुह्ये ।

शक्ति बीजम् नमः पादयोः ।

कामराज कीलकाय नमः नाभौ ।

विनियोगाय नमः सर्वांगे ।

### करन्यास

हस्त्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः ।

हस्त्रैः अनामिकाभ्यां नमः ।

हस्त्रीं तर्जनीभ्यां नमः ।

हस्त्रीं कनिष्ठाभ्यां नमः ।

हस्त्रूं मध्यामाभ्यां नमः ।

हंस्त्रः करतलपृष्ठाभ्यां नमः ।

### हृदयादिन्यास

हस्त्रां हृदयाय नमः ।

हस्त्रैः कवचाय हुम् ।

हस्त्रीं शिरसे स्वाहा ।

हस्त्रों नेत्रत्रयाय वौषट् ।

हस्त्रूं शिखायै वषट् ।

हंस्त्रः अस्त्राय फट् ।

### ध्यान मंत्र

उद्यद् भानु सहस्र कान्तिमरुण क्षौभां शिरोमालिकां ।

रक्तालिलपयोधरां जप वटीं विद्यामभीतिं वरां ॥

हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद् वक्त्रारविन्दश्रियं ।

देवीं बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटां वन्दे सुमन्दस्मिताम् ॥

### मूलमंत्र

ॐ हस्त्रीं त्रिपुर भैरव्यै नमः ।

### त्रिपुर भैरवी कवच

हस्त्रै मे शिरः पातु भैरवी भयनाशिनी ।

हसफलरीं नेत्रे च हस्त्रौश्च ललाटकम् ॥

कुमारी सर्वगात्रे च वाराही उत्तरे तथा ।

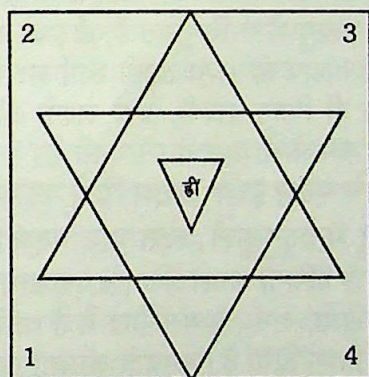


पूर्वे च वैष्णवी देवी इन्द्राणी मम दक्षिणे ॥  
 दिग्विदिक्षु सर्वत्रैव भैरवी सदावतु ।  
 त्राहि मां देवि दुष्प्रेक्ष्ये शत्रुणां भयवर्द्धिनी ॥  
 आयु रक्षतु वाराही धर्म रक्षतु वैष्णवी ।  
 यशः कीर्तिं च लक्ष्मीं च धनं च विद्यां चक्रिणी ॥  
 पन्थानं सुपथा रक्षेन्मार्ग क्षेमकरी तथा ।  
 राजद्वारे महालक्ष्मी विजया त्रिपुर भैरवी ॥

नोट—इसके बाद “मूल मंत्र” का पाठ 81 दिन की रात्रि में 5 लाख मंत्र जप सम्पन्न करें। मंत्र जप सम्पन्न होने के पश्चात् दशांश हवन करें। हवन के बाद आरती विसर्जन कर साधना सम्पन्न करें। 41 कुंवारी कन्याओं को मीठा लाल भोज्य पदार्थ भोजन करावें।

भगवती त्रिपुर भैरवी यंत्र साधना—त्रिपुर भैरवी यंत्र साधना विधि में सिंहासन की स्थापना व पूजन विधि—“मंत्र साधना विधि” के अनुसार ही सम्पन्न करें। पूजन सम्पन्न होने के पश्चात् भोजपत्र के ऊपर रक्त चन्दन की स्याही व अनार की कलम से यंत्र निर्माण करें।

### [ श्री त्रिपुर भैरवी यंत्र स्वरूप ]



नोट—यंत्र निर्माण करने के बाद ताबीज में भरकर, लाल डोरे (रेशमी) डालकर गुरु यंत्र कवच वाले प्लेट में रख दें। इसके बाद निम्न मंत्र का एक लाख एकावन हजार जप 41 रात्रि में सम्पन्न करें।

### यंत्र साधना मंत्र

ॐ श्रीं क्लीं क्रीं ह्रीं ऐं मातेश्वरी प्रगति सफलता देहु नमः ॥

अन्तिम रात्रि में जप सम्पन्न होने के बाद 101 माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। आरती करके साधना विसर्जन करें। इसके पश्चात् 21 कुंवारी कन्याओं को भोजन करावें। गुरु कवच यंत्र को बहती दरिया में विसर्जित कर दें। स्वयं निर्माण किया यंत्र अपने गले में धारण कर लें।



## भगवती कमला महाविद्या साधना

भगवती कमला महाविद्या की महानता—सिद्ध कमला भगवती “महालक्ष्मी” का ही स्वरूप हैं, सर्व कल्याणमयी परमेश्वरी कमलात्मिका दश महा विद्याओं में से एक हैं, जिनकी तंत्र शास्त्रों और पुराणों में विशेष महिमा वर्णित है। साधक का सौभाग्य ही जाग्रत होता है जब वह कमला मंत्र-यंत्र की साधना गुरु के आदेशानुसार करता है। इनकी साधना कर जहां साधक सांसारिक सिद्धि प्राप्त कर लेता है, वहीं परालौकिकता का भी अभ्युदय होता है। यह साधना भोग और मोक्ष दोनों एक साथ देने में समर्थ है।

भगवती कमला विष्णु की शक्ति अर्थात् अधिष्ठात्री देवी है जो सर्वत्र व्याप्त है इसलिए इनके ही द्वारा जगत का पालन होता है। अतः इन्हें विष्णु शक्ति कहा गया है।

**शुद्ध सत्व स्वरूपा त्वं, भक्तानुग्रह विग्रहा।**

**राज-स्वर्ण-गृह श्रीश्च, मिताचार सुखावहा ॥**

**विष्णु लक्ष्मीः सर्व भूक्ष्मी, शिव लक्ष्मी सुरार्चिताः।**

**सर्वदेवमयी लक्ष्मीः, कमला-कमलात्मिका ॥**

“अर्थात् जो शुद्ध, सत्वगुणों से विभूषित है और जो अपने भक्तों के लिए ही विग्रह रूप धारण करती है। आप ही राज्य लक्ष्मी स्वर्ग लक्ष्मी हैं, जो अपने भक्तों के सुखदात्री हैं और आप ही विष्णु-लक्ष्मी, ब्रह्म-लक्ष्मी और शिव-लक्ष्मी हैं, जो कमल वासिनी हैं, अर्थात् कमलों में वास करने वाली हैं।”

**पद्मानने पद्मिनि पद्म हस्ते, पदम प्रिये पदमदलायताक्षि।**

**विश्व-प्रिये विष्णु मनोऽनुकूले, त्वत् पाद पद्मं मयि सन्निधत्-स्व ॥**

“कोमल मुख वाली है पद्मिनी कमले। जिनके एक हाथ में कमल है, कमलवत् ही जिनका हाथ है, कमल प्रिया, कमल पुष्प सरीखे नेत्रों वाली, पराकाश में जिनकी उपस्थिति है, विश्व प्रिया, विष्णु प्रिया हैं। भगवती कमला! आप अपने चरण कमलों को मेरे मस्तक पर रखने की कृपा करें।”

“हे कमलिनी! आप तो साक्षात् देवस्वरूपा हैं, आनन्द कदम और ऐश्वर्य तीनों ऋषि आपके पुत्र हैं। हे भगवती आप ही हमें कल्याण के मार्ग पर प्रवृत्त करने वाली हैं।”

धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार प्रकार के पुरुषार्थ को प्राप्त करना ही सांसारिक प्राप्ति का ध्येय होता है और इसमें से भी लोग “अर्थ” को अत्यधिक महत्व प्रदान करते हैं। इनका कारण यह है कि भगवती कमला अर्थ की अधिष्ठात्री देवी हैं। उनकी आकर्षण शक्ति में जो मातृ शक्ति का गुण विद्यमान है, उस सहज स्वभाविक प्रेम के पाश से वे अपने पुत्रों को बांध ही लेती हैं।



जो “भौतिक सुख” के इच्छुक होते हैं, उनके लिए कमला सर्वश्रेष्ठ साधना है।  
सर्व मंगल-मांगल्ये, शिवे! सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरी,  
नारायणि नमोऽस्तुते ॥

अर्थात् — “सर्व मंगल कार्यों को पूर्ण करने वाली मांगल्य स्वरूपा हे भगवती! आप समस्त विश्व का सदैव कल्याण करने वाली हैं तथा धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष चारों पुरुषार्थों को सफल करने वाली हैं। हे शिवे! जो आपके पास जिस-जिस मनोरथ से आता है, आप उसको पूर्ण करती ही हैं। त्रिनेत्रधारी हे त्र्यम्बके! अर्द्ध-नारीश्वर रूप हे गौरी! हे नारायणी! मैं आपको श्रद्धा पूर्वक बारम्बार प्रणाम करता हूँ।”

### भगवती कमला महाविद्या साधना से लाभ

भगवती कमला की जो साधना करता है, उसके जीवन से कर्ज, रोग, व्याधि, दरिद्रता, पाप, भय, शोक, मानसिक-संताप व अकाल मृत्यु कोसों मील दूर चले जाते हैं। इसके बदले उसे बुद्धि, बल, तेजस्विता, कान्ति, आयुष्य, आरोग्य, दृढ़ता, धन-धान्य, पुत्र-पौत्र सब कुछ प्राप्त हो जाता है।

अस्तु देवी कमला सर्व दुःखहर्त्री हैं, अर्थात् समस्त दुःखों को दूर करने वाली हैं तथा सर्वदोषहर्त्री हैं, अर्थात् समस्त दोषों का नाश करने वाली हैं, इसलिए भगवान् विष्णु इन्हें एक क्षण के लिए भी नहीं छोड़ना चाहते, क्योंकि उन्हें भी अनेक दोष आने का भय बना रहता है। इसलिए “मत्स्य पुराण” में तो यह भी कहा गया है, कि —

यथा न कमला देहात्, प्रयाति तव केशव।

तथा ममापि देवेश! शरीर स्वे कुरु प्रभो ॥

अर्थात् — हे केशव (विष्णु) जिस तरह तुम्हारी देह से कमला (लक्ष्मी) पल भर के लिए भी अलग नहीं होती, उसी तरह तुम भी मेरे हृदय में निवास करो।

इसका तात्पर्य विश्व की प्राप्ति नहीं है, अपितु वैष्णवी मतानुसार उनका कहना था, कि जब भगवान् विष्णु हमारे शरीर में हमारी आत्मा में विराजमान हो जायेंगे, तो भगवती कमला (लक्ष्मी) का निवास स्वतः ही हो जायेगा और इस प्रकार बिना प्रयास ही लक्ष्मी की प्राप्ति सम्भव हो सकेगी। जो हमारे समस्त दोषों को शमन स्वतः ही कर देगी।

इस संसार सागर में बालक से लेकर वृद्ध तक कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है, जिसके मन में लक्ष्मी को प्राप्त करने की कामना न हो। अतः मत्स्य पुराण में दुःखों का हरण करने वाली मां कमला को “शरण सुखदायिनी” के नाम से भी सम्बोधित किया जाता है।

सिद्ध कमला प्रयोग शीघ्र सिद्धिप्रद है, जो अचूक एवं तुरन्त फल प्रदान करने



में समर्थ है। दस महाविद्याओं में से एक होने के कारण यह जीवन का श्रेष्ठतम प्रयोग है। यह प्रयोग किसी दीन-हीन, असहाय, दुर्भाग्यशाली को भी उच्चता के शिखर पर पहुंचा देने वाला सर्व मंगल कारक अद्वितीय प्रयोग है, जिसे प्रत्येक स्त्री, पुरुष, वृद्ध व बालक को सम्पन्न करना ही चाहिए क्योंकि यह सिद्धि-साधना असफल नहीं जाता, यदि इसे पूर्ण श्रद्धा के साथ सम्पन्न किया जाये तो

यह साधना सर्वशक्ति प्रदायक है, क्योंकि कीर्ति मति, धृति, पुष्टि, बल, मेधा, श्रद्धा, आरोग्य, विजय आदि देवी शक्तियां भिन्न-भिन्न देवों के अंश से उत्पन्न हुई हैं। दासी होकर सिद्ध कमला की आराधना करती हैं, फलस्वरूप तीनों लोकों को प्रकाशित करने वाली प्रकाश रूप लक्ष्मी की साधना करना तो जीवन का श्रेष्ठतम सौभाग्य है।

साधना विधि—मुख्यतः यह साधना दिवाली की रात्रि में की जाती है, इसके अलावा साधक किसी भी शुभ मुहूर्त के मंगलवार को भी यह महा साधना आरम्भ कर सकते हैं। शुभ दिवस में प्रातः काल 7 बजे के अन्दर स्नान से पवित्र हो जावें। तत्पश्चात् गृह के एकान्त पवित्र कमरे में आम लकड़ी से बना, लाल रंग से रंगा हुआ सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर लाल रंग का आसन बिछावें और उस पर भगवती कमला (लक्ष्मी) की तस्वीर की स्थापना करें। स्वयं लाल वस्त्र पहनें और पूज्य पुरोहित भी लाल वस्त्र ही धारण करें। धूप-दीप जगावें। तत्पश्चात् लाल कम्बल के आसन पर बैठकर भगवती कमला की “षोडशोपचार” पूजन करें। पूजन आरम्भ से पूर्व सिद्ध गुरु से प्राप्त “सिद्ध कमला कवच यंत्र” तांबे के प्लेट में भगवती तस्वीर के समक्ष रखें। सम्पूर्ण पूजन विधि महाकाली साधना में वर्णित विधि के अनुसार ही सम्पन्न करें, परन्तु विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृदयादि न्यास, ध्यान मंत्र, और कवच पाठ निम्न मंत्रों द्वारा सम्पन्न करें।

### विनियोग

ॐ अस्य श्रीमहालक्ष्मी मंत्रस्य भृग ऋषिः, निवृच्छन्दः, श्रीमहालक्ष्मी देवता, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, ऐं कीलकं, श्री लक्ष्मी प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

### ऋष्यादिन्यास

|                                   |                          |
|-----------------------------------|--------------------------|
| ॐ भृगु ऋषये नमः शिरसि।            | ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। |
| निवृच्छन्दसे नमः मुखे।            | ऐं कीलकाय नमः नाभौ।      |
| श्री महालक्ष्मी देवतायै नमः हृदि। | विनियोगाय नमः सर्वांगे।  |
| श्रीं बीजाय नमः गुह्ये।           |                          |

### करन्यास

|                            |                           |
|----------------------------|---------------------------|
| ॐ श्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। | ॐ श्रीं अनामिकाभ्यां नमः। |
| ॐ श्रीं तर्जनीभ्यां नमः।   | ॐ श्रीं कनिष्ठाभ्यां नमः। |



ॐ श्रूं मध्यमाभ्यां नमः ।

ॐ श्रं करतलपृष्ठाभ्यां नमः ।

हृदयादिन्यास

ॐ श्रां हृदयाय नमः ।

ॐ श्रौं कवचाय हुम् ।

ॐ श्रीं शिरसे स्वाहा ।

ॐ श्रीं नेत्रत्रयाय वौषट् ।

ॐ श्रूं शिखायै वषट् ।

ॐ श्रं: अस्त्राय फट् ।

ध्यान मंत्र

कान्त्या काञ्चनसन्निभां हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजै ।  
 हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मया मृतघटै रासिच्यमानां श्रियम् ॥  
 विभ्राणां वरमब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम् ।  
 क्षौमा बद्धनितम्ब विम्बललितां वन्देऽरविन्द स्थिताम् ॥

कवचम्

एकारो मस्तके पातु वाग्भवी सर्वसिद्धिदा ।  
 ह्रीं पातु चक्षुषोर्मध्ये चक्षुयुग्मे च शांकरी ॥  
 जिह्वायां मुखवृत्ते च कर्णयोर्दन्तयोर्नसि ।  
 ओष्ठाधरे दंतपंक्तौ तालुमूले हनौ पुनः ॥  
 पातु मा विष्णु वनिता लक्ष्मी श्रीविष्णुरूपिणी ।  
 कर्णयुग्मे भुजद्वंद्वे स्तनद्वंद्वे च पार्वती ॥  
 हृदये मणिबंदे च ग्रीवायां पार्श्वयोः पुनः ।  
 जातु चक्रे परद्वंद्वे घुटिके अंगुलमूलिके ॥  
 स्वधातु प्राणशक्त्यात्मसीमंते मस्तके पुनः ।  
 विजया पातु भवने जया पातु सदा मम ॥  
 सर्वांगे पातु कामेशी महादेवी सरस्वती ।  
 तुष्टिः पातु महामाया उत्कृष्टिः सर्वदाऽवतु ॥  
 ऋद्धि पातु महादेवी सर्वत्रशंभु वल्लभा ।  
 वाग्भवी सर्वदा पातु पातु मा हरगेहिनी ॥  
 रमा पातु सदादेवी पातु माया स्वराट् स्वयम् ।  
 सर्वांगे पातु मा लक्ष्मी विष्णु माया सुरेश्वरी ॥  
 शिवदूती सदापातु सुंदरी पातु सर्वदा ।  
 भैरवी पातु सर्वत्र भेरुंडा सर्वदाऽवतु ॥  
 त्वरिता पातु मा नित्युग्रतारा सदाऽवतु ।  
 पातु मा कालिका नित्यं कालरात्रि सदाऽवतु ॥  
 नवदुर्गा सदा पातु कामाक्षी सर्वदा वतु ॥  
 योगिन्यः सर्वदा पातु मुद्राः पातु सदा मम ॥



मात्रा पातु सदा द्वेवश्चक्रस्था योगिनी गणाः ।

सर्वत्र सर्वकामेषु सर्वकर्मसु सर्वदा ॥

पातु मा देवदेवी च लक्ष्मीः सर्वसमृद्धिदा ॥

नोट—षोडशोपचार पूजन, न्यासादि और कवच पाठ सम्पूर्ण होने के पश्चात् निम्न मंत्र का 41 दिनों में एक लाख एकावन हजार मंत्र जप सम्पन्न करें

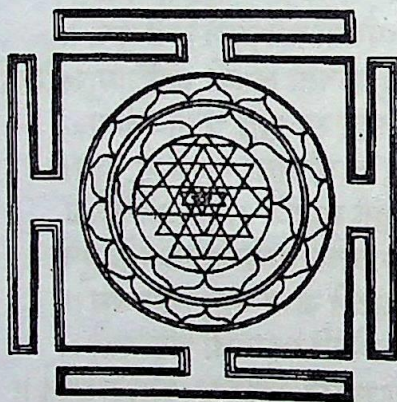
**साधना मंत्र**

॥ॐ श्रीं नमः ॥

अन्तिम दिन जप समाप्त होने के बाद 108 माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। तत्पश्चात् आरती व विसर्जन कर्म सम्पन्न करें। 5 ब्राह्मण और 11 कुंवारी कन्याओं को भोजन करावें तथा दक्षिणा देकर विदा करें।

भगवती कमला यंत्र साधना—भगवती कमला “मंत्र साधना” के अनुरूप ही पूजन विधि सम्पन्न करें। इसके पश्चात् भोजपत्र पर अनार की कलम और रक्त चन्दन की स्याही से निम्न वर्णित यंत्र का निर्माण करें।

**[ भगवती कमला यंत्र स्वरूप ]**



निर्मित यंत्र तांबीज में भरकर, उसमें लाल डोरे डालकर, सिद्ध गुरु कवच यंत्र वाले प्लेट में रख दें। इसके पश्चात् निम्न मंत्रों का 21 दिनों में एक लाख एकावन हजार मंत्र जप सम्पन्न करें। नित्य ही मातेश्वरी की पूजा करके मंत्र जपें और आरती किया करें। अन्तिम दिन मंत्र जप पूर्ण होने के बाद ग्यारह माला मंत्र जप करते हुए हवन में आहुति डालें। तत्पश्चात् आरती करके साधना विसर्जन करें।

**जप हेतु मंत्र**

ॐ ऐं श्रीं ह्रीं क्लीं क्षोः जगत्प्रसूत्ये नमः ॥

नोट—साधना विसर्जन करने के पश्चात् कन्याओं को भोजन करावें। इसके बाद यंत्र को प्रणाम कर गले में धारण कर लें। गुरु कवच यंत्र व फूल बिल्वपत्र, हवन भस्म आदि सामग्री बहती दरिया में प्रवाहित कर दें। इसके पश्चात् किसी भी



अमित पाकेट बुक्स

मंगलवार को यंत्र विधि पूर्वक निर्माण कर, षोडशोपचार पूजन कर और 21 माला मंत्र जप सम्पन्न कर जिसे भी प्रदान करेंगे वह समस्त ऐश्वर्यों को प्राप्त कर लेगा।

## भगवती षोडशी महाविद्या साधना

भगवती षोडशी महाविद्या की महानता—भगवती षोडशी महाविद्या को “त्रिपुर सुन्दरी” भी कहा जाता है। इनकी आभा प्रातः कालीन सूर्य के समान है। ये समस्त भुवनों एवं नक्षत्रों पर अंकुश रखती हैं। सृष्टि कर्ता ब्रह्मा, संचालन कर्ता विष्णु, संहार कर्ता रुद्र, तथा प्रलय कर्ता यम—ये चारों इनके अधीन हैं।

भगवती षोडशी साधना से लाभ—ये आद्या शक्ति भगवती मोक्ष-दायिनी हैं तथा शिवलोक प्राप्त कराती हैं। अनेक जन्मों की उपासना व पुण्य कर्मों के कारण ही इनकी साधना का सौभाग्य प्राप्त होता है। भगवती साधक को समस्त ऐश्वर्यों से भंडार भर देती है क्योंकि ये अत्यन्त ही दयालु हैं।

साधना विधि—यह महासाधना किसी भी शुभ मुहूर्त के शनिवार की रात्रि में आरम्भ करें। रात्रि 10 बजे स्नान से पवित्र होकर, घर के एकान्त कमरे में पवित्र स्थान पर आम लकड़ी से बना, सफेद रंग से रंगा हुआ सिंहासन स्थापित करें। सिंहासन पर सफेद नवीन वस्त्र का आसन बिछाकर भगवती षोडशी की तस्वीर स्थापित करें। स्वयं सफेद वस्त्र धारण कर सफेद कम्बल के आसन पर बैठ जावें। बैठने में मुख उत्तर दिशा या पूरब दिशा की ओर हो। इसके पश्चात् धूप-दीप जगाकर, महाकाली षोडशोपचार पूजन विधि के अनुसार पूजन सम्पन्न करें, परन्तु विनियोग, ऋष्यादि न्यास, करन्यास, हृदयादि न्यास, ध्यान मंत्र और कवच पाठ निम्न मंत्रों द्वारा समपन्न करें।

### विनियोग

ॐ अस्य श्रीत्रिपुरसुन्दरी मंत्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्री महात्रिपुर सुन्दरी देवता, ऐं बीजम्, सौं शक्तिः, क्लीं कीलकं ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

### करन्यास

ह्रीं श्रीं अं ( अंगुष्ठाभ्यां नमः ), ह्रीं श्रीं आं ( तर्जनीभ्यां नमः ), ह्रीं श्रीं सोः ( मध्यमाभ्यां नमः ), ह्रीं श्रीं अं ( अनामिकाभ्यां नमः ), ह्रीं श्रीं आं ( कनिष्ठिकाभ्यां नमः ), ह्रीं श्रीं सोः ( करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः )।

### हृदयादिन्यास

ह्रीं श्रीं अं ( हृदयाय नमः ), ह्रीं श्रीं आं ( शिरसि सवाहा ), ह्रीं श्रीं सौः ( शिखायै वषट् ), ह्रीं श्रीं अं ( कवचकाय हुम् ), ह्रीं श्रीं आं ( नेत्रत्रयाय वौषट् ), ह्रीं श्रीं सोः ( अस्त्राय फट् )।



## ध्यानम्

बालार्क युत तेजसं त्रिनयनां रक्ताम्बरोल्लासिनीं,  
 नानालंकृति राज मानपुषं बालेंदु युक्त शेखराम् ।  
 हस्तैरिक्षु धनुः सृणिं सुमशरं पाशं मुदा विभ्रतीं,  
 श्री चक्र स्थित सुंदरीं त्रिजगतामाधार मूतां भजे ॥  
 मूल मंत्रः श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सोः ओम् ह्रीं क ए ई ल  
 ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं नमः ।

## कवच-पाठ

बालार्क मंडल भासां चतुर्वाहा त्रिलोचनाम् ।  
 पाशांकुश शरंश्चापान धारयंतीम् शिवां भजे ॥  
 ओम् पूर्वे मां भैरवी पातु बाला मां पातु दक्षिणे ।  
 मालिनी पश्चिमे पातु त्रिसिनी उत्तरेऽवतु ॥  
 ऊर्ध्व पातु महादेवी महात्रिपुर सुंदरी ।  
 अद्यस्तात पातु देवेशी पाताल तल वासिनी ॥  
 आधारे वाग्भवः पातु कामराजस्तथा हृदि ।  
 डामरः पातु माम् नित्यं मस्तके सर्वकामदः ॥  
 ब्रह्मरन्ध्रे सर्वगात्रे छिद्रस्थाने च सर्वदा ।  
 महाविद्या भगवती पातु मां परमेश्वरी ॥  
 ऐं ह्रीं ललाटे मां पातु क्लीं क्लृं सश्चनेत्रयोः ।  
 नासायां मे कर्णयोश्च द्वां द्वे द्वां चिबुके तथा ॥  
 सौः पातु गले हृदये सह ह्रीं नाभिदेशके ।  
 क ल ह्रीं क्लीं स्त्रीं गुह्यदेशे सह ह्रीं पादयोस्तथा ॥

नोट—कवच पाठ, न्यासादि एवं षोडशोपचार पूजन सम्पन्न होने के पश्चात् नीचे लिखित मंत्र का एक लाख चालीस हजार की संख्या जप 40 दिन में पूर्ण करें।

## साधना मंत्र

॥ॐ श्री ह्रीं क्लीं, ऐं सौं नमः ॥

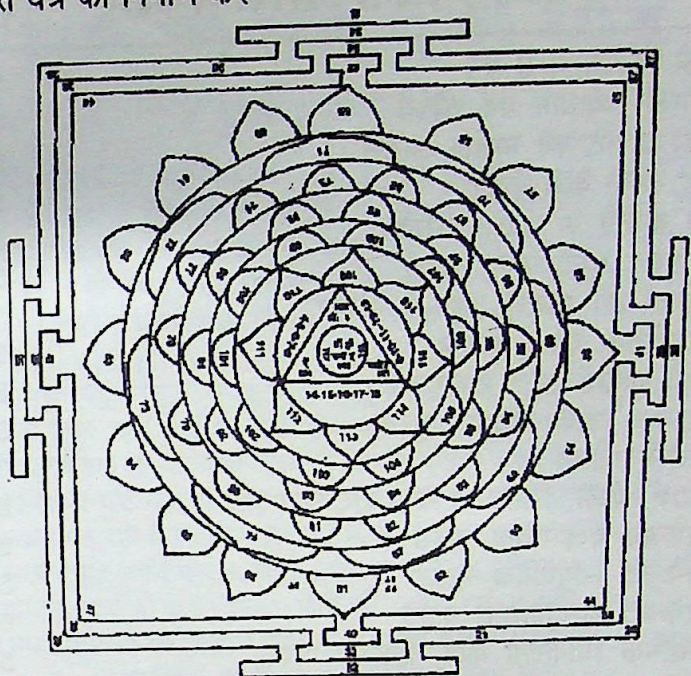
नित्य ही पूजन आरती किया करें। अन्तिम दिन मंत्र जप सम्पन्न होने के बाद 108 माला मंत्र जप करते हुए हवन कुंड में, हवन सामग्री द्वारा आहुति डालें। तत्पश्चात् आरती करके साधना विसर्जन करें। 21 कन्याओं को खीर का भोजन करावें।

यंत्र साधना विधि—भगवती षोडशी यंत्र साधना किसी शुभ मुहूर्त के मंगलवार, होली, दिवाली या शिवरात्री की रात्रि में आरम्भ करें। सिंहासन की स्थापना, षोडशोपचार पूजन “षोडशी मंत्र साधना” विधि के अनुसार ही सम्पन्न करें। पूजन



अमित पाकेट बुक्स

सम्पन्न होने के पश्चात् भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगंध की स्याही से नीचे वर्णित यंत्र का निर्माण करें—



निर्मित यंत्र को चांदी की ताबीज में भरकर, सफेद सूती डोरे डालकर, गुरु कवच यंत्र वाले प्लेट में रख दें। इसके पश्चात् रुद्राक्ष की माला से 21 दिन में एक लाख एकावन हजार मंत्र जप सम्पन्न करें। नित्य ही आद्या शक्ति षोडशी की आरती व पंचोपचार पूजन किया करें। अन्तिम रात्रि में मंत्र जप सम्पूर्ण होने के पश्चात् 101 माला मंत्र जप करते हुए हवन सामग्री द्वारा हवन कुंड में आहुति डालें। इसके पश्चात् आरती करें और साधना विसर्जन करें। स्वयं निर्मित यंत्र को प्रणाम कर गले में धारण कर लें। 21 कुंवारी कन्याओं का पूर्णहुति वाली रात्रि को मीठा खीर भोजन करावें, तत्पश्चात् दक्षिणा देकर विदा करें। शेष पूजन सामग्री, फूल-बिल्वपत्र, हवन भस्म तथा गुरु द्वारा प्राप्त सिद्ध षोडशी कवच यंत्र बहती दरिया में प्रवाहित कर दें।

इसके पश्चात् किसी भी मंगलवार या शनिवार को यंत्र निर्माण कर, षोडशोपचार पूजन सम्पन्न कर और 21 माला मंत्र जप कर जिसे भी प्रदान करेंगे उसका जीवन धन्य हो जायेगा।

साधकों! दस महाविद्याओं की साधना सम्पन्न कर आप यश, मान, सम्मान, प्रतिष्ठा, पुत्र-पौत्रादि, धन-धान्य एवं उत्तम सौभाग्य की प्राप्ति करें और समस्त ऐश्वर्यों के स्वामी हो जाएं, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ—

॥ इति शुभम् ॥



## घर बैठे अपनी मनपसंद पुस्तकें (डाक) V.P.P. द्वारा मंगवाएँ

|                                              |        |
|----------------------------------------------|--------|
| 1. बॉडी बिल्डर कैसे बनें                     | 50.00  |
| 2. योगासन व्यायाम एवं सौंदर्य                | 50.00  |
| 3. जूडो कराटे एवं मार्शल आर्ट्स              | 50.00  |
| 4. कद लम्बा कैसे करें?                       | 50.00  |
| 5. धन कमाने के 400 तरीके                     | 50.00  |
| 6. परफैक्ट ब्यूटी पार्लर कोर्स               | 50.00  |
| 7. दीवानों की शायरी (खून-ए-जिगर)             | 50.00  |
| 8. आयुर्वेदिक घरेलू इलाज                     | 50.00  |
| 9. जड़ी बूटियों द्वारा रोगोपचार              | 50.00  |
| 10. स्वास्थ्य रक्षक रामबाण नुस्खे            | 50.00  |
| 11. निरोगी जीवन                              | 100.00 |
| 12. शराब, बीडी, सिग्रेट से कैसे छुटकारा पाएं | 50.00  |
| 13. परफैक्ट एलोपैथिक गाईड                    | 50.00  |
| 14. परफैक्ट आयुर्वेदिक गाईड                  | 50.00  |
| 15. परफैक्ट होम्योपैथिक गाईड                 | 60.00  |
| 16. प्राथमिक चिकित्सा और नागरिक सुरक्षा      | 50.00  |
| 17. चुंबक एवं सूर्य किरण चिकित्सा            | 50.00  |
| 18. संपूर्ण हिप्नोटिज्म (नया टाईटल)          | 50.00  |
| 19. धन प्रदायक साधनाएं                       | 50.00  |
| 20. लक्ष्मी प्राप्ति के प्रयोग एवं साधना     | 50.00  |
| 21. सर्व मनोकामना सिद्धि                     | 50.00  |
| 22. इच्छापूरक सिद्धियां                      | 50.00  |
| 23. विपत्ति नाशक टोटके                       | 50.00  |
| 24. जंत्र मंत्र तंत्र द्वारा भाग्य बदलिये    | 50.00  |
| 25. तंत्र मंत्र यंत्र से रोग निवारण          | 50.00  |
| 26. जंत्र मंत्र द्वारा उपाय (पराशर)          | 50.00  |
| 27. वशीकरण यंत्र तंत्र मंत्र टोटके           | 50.00  |
| 28. तंत्र विद्या के अद्भुत प्रयोग            | 50.00  |

कोई भी पुस्तक V.P.P. से मंगवाने के लिए 20-30 रुपये अग्रिम अवश्य  
भेजें, बिना अग्रिम पुस्तकें नहीं भेजी जाएगी।

पुस्तक मंगवाने का पता

**अमित पाकेट बुक्स**, नजदीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर



सर्वमनोकामना पूर्ण करने वाली पुस्तक

# सम्पूर्ण नव दुर्गा पाठ

( दुर्गा स्तुति सहित )

जो प्राणी भगवती माँ शेरावाली का भजन-पूजन व स्मरण करता है उस प्राणी को इस कलियुग में माँ शेरावाली मुँह माँगा वरदान देती है। ऐसे अनेकों उदाहरण सामने आये हैं। जो प्राणी नव-दुर्गा पाठ प्रति-दिन शुद्ध तन-मन से करता है, उसके उपर किसी प्रकार कि विपत्ति नहीं आती और ना ही किसी प्रकार का जादू-टोना, भूत-प्रेत बाधा ही असर करता है। अगर किसी प्राणी को पहले से किसी प्रकार कि विपत्ति बाधा या दुख हो तो पाठ करते ही दूर हो जाते हैं।

इस "सम्पूर्ण नवदुर्गा पाठ" नामक पुस्तक में दुर्गा पाठ करने की विधि, दुर्गा कवच, अगला स्तोत्र, कीलक स्तोत्र, एक से लेकर तेरह अध्याय का पाठ, देवी का प्रधान रहस्य, वैकृतिक रहस्य, मूर्ति रहस्य याद रहे यह तीनों रहस्य माँ भगवती दुर्गा ने भक्तों के उद्धार हेतु अपने मुख से बताये थे जिसका पाठ करने पर मनुष्य मुँह मांगी मुराद अवश्य ही पा सकता है। परन्तु खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि अन्य पुस्तकों में यह रहस्य कदापि नहीं है।

इनके अलावा पुत्र प्राप्ति वन्दना, विद्या प्राप्ति वन्दना, रोग मुक्ति वन्दना, भगवती के 103 नामों का महाजाप, दुर्गा जी के 51 शक्ति-पीठों की उत्पत्ति, साथ ही नवों अवतारों (नव दुर्गा) का उत्पत्ति एवं महिमाओं का इतिहास पूर्ण रूप से दर्शाया गया है। लेखक पंडित वाई०एन०झा०

कौन से अध्याय का पाठ किस लिए करें

पहला अध्याय-हर प्रकार की चिन्ता मिटाने के लिए एवं शत्रु के भय को नष्ट करने के लिए।

दूसरा अध्याय-शत्रु द्वारा धन-सम्पत्ति अधिकार में कर लेने के बाद उन्हें फिर से प्राप्ति के लिए।

तीसरा अध्याय-शत्रु से छुटकारा पाने के लिए एवं उसे परास्त करने के लिए।

चौथा अध्याय-सौभाग्यवान पत्नी एवं सर्वसिद्धि सफलता प्राप्ति के लिए।

पाँचवाँ अध्याय-भूत-प्रेत की छाया, भय आदि नष्ट करने के लिए।

छठा अध्याय-सर्वकामना सिद्धि हेतु।

सातवाँ अध्याय-प्रेमी से मिलाप एवं वशीकरण के लिए।

आठवाँ अध्याय-गुमशुदा की तलाश एवं पुत्र प्राप्ति के लिए।

नौवाँ अध्याय-लक्ष्मी प्राप्ति के लिए।

दसवाँ अध्याय-शक्ति एवं विद्या प्राप्ति के लिए।

ग्यारहवाँ अध्याय-भक्ति एवं मुक्ति प्राप्ति के लिए।

बारहवाँ अध्याय-रोग मुक्ति के लिए।

तेरहवाँ अध्याय-मान, इज्जत प्राप्ति के लिए।

यात्रा पर जाने से पूर्व दुर्गा कवच का पाठ करें। असली पुस्तक खरीदते समय अमित पाकेट बुक्स जालन्धर अवश्य देख लें। मूल्य 60 रुपये डाक खर्च सहित।

पुस्तक मंगवाने का पता

212696

## अमित पुस्तक भंडार

ज्ञान मार्किट, नजदीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।



# सम्पूर्ण शिव उपासना



अति शीघ्र प्रसन्न होकर दर्शन देकर, कृतार्थ करने वाले भोले भंडारी भगवान शिव की आराधना, उपासना करने से उनके भक्तों का परम कल्याण हुआ है। प्रसन्न होने पर भगवान रुद्र देव भक्तों के भण्डार भर देते हैं।

इस पुस्तक में भगवान शिवजी की उपासना, आराधना, हवन पूजन आदि का विस्तृत वर्णन है। मंत्रों द्वारा पूजन, ध्यान आदि का गूढ़ रहस्य जिसके करने से भगवान शिव अति शीघ्र प्रसन्न होकर भक्तों की मुरादें पूर्ण करते हैं।

यह पुस्तक आज ही मंगाकर पढ़ें और लाभ उठायें। क्योंकि शिव भक्तों के हित के लिए ही यह पुस्तक हमने छापी है।

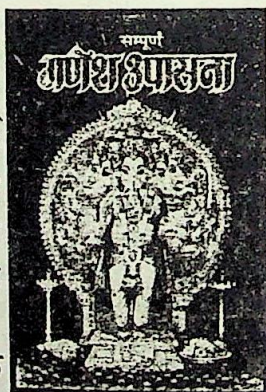
घर बैठे पुस्तक प्राप्त करने के लिए 50/- रु. का मनीआर्डर अवश्य भेजें।

# सम्पूर्ण गणेश उपासना

सभी प्रकार की पूजा, अर्चना, आराधना, हवन, विवाह शादी, गृह प्रवेश आदि शुभ कार्यों में विघ्न विनाशक गणेश जी की सर्वप्रथम पूजा होती है अर्थात् 'प्रथम पूज्य' हैं। किसी भी कार्य का शुभारम्भ करना होता है तो शिव पुत्र गणेश जी के नाम का ही उच्चारण होता है - "श्री गणेशाय नमः" यह जानने के बाद भी यदि गणेश जी की आराधना आप विधिवत् रूप में न कर सकें तो यह महान् दुर्भाग्य है।

गणेश जी के भक्तों के लिए यह अनमोल पुस्तक महान लाभकारी ओर फलदायक है।

घर बैठे आज ही पुस्तक प्राप्त करने के लिए 50/- रु. का मनी आर्डर भेजें। आपको हम वी. पी. द्वारा पुस्तक भेज देंगे।



पुस्तक मंगवाने का पता — 212696 —

## अमित पुस्तक भंडार

ज्ञान मार्किट, नजदीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।

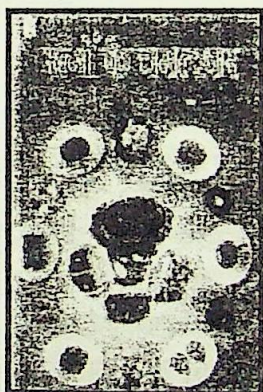


# हस्त रेखा शास्त्र

हस्त रेखाओं पर आधारित हमारी एक ऐसी अनमोल पुस्तक जिसमें विवाह रेखा, जीवन रेखा, भाग्य रेखा, मस्तक रेखा, हृदय रेखा, स्वास्थ्य रेखा आदि कई प्रकार की रेखाओं का फल चित्रों सहित समझाया गया है। इस पुस्तक में 500 से अधिक हाथों के चित्र दिये गये हैं। गोल चक्र, त्रिकोण, चतुर्भुज आदि होने से मनुष्य को क्या फल प्राप्त होता है ? इनका विस्तारपूर्वक वर्णन पुस्तक में लिखा है। इसे पढ़कर आप हस्त रेखाओं की अच्छी जानकारी पा सकते हैं।



पुस्तक का मूल्य 50/- रु. है। घर बैठे पुस्तक प्राप्त करने के लिए 50/- रु. मनीआर्डर अवश्य भेजें।



## रत्नों के चमत्कार

रत्न 84 प्रकार के होते हैं किसको कौन सा रत्न पहनना चाहिए अधिकतर लोग नहीं जानते। कई बार गलत रत्न धारण करने से लोग समस्याओं से घिर जाते हैं।

इस पुस्तक में हमने रत्नों, उपरत्नों के बारे में आवश्यक खोजपूर्ण जानकारी दी है जो लेखक (ज्योतिषी) के 40 वर्षों का दुर्लभ अनुभव है।

इस पुस्तक को पढ़कर आप जान सकेंगे कि कौन सा रत्न आपके लिए लाभकारी और भाग्यवर्धक है।

आज ही पुस्तक माँगा कर लाभ उठायें। घर बैठे पुस्तक प्राप्त करने के लिए 50/- रु. मनीआर्डर अवश्य भेजें।

पुस्तक मंगवाने का पता — 212696 —

## अमित पुस्तक भंडार

ज्ञान मार्किट, नजदीक चौक अड़डा टांडा, जालन्धर शहर।



# निरोगी जीवन

शरीर स्वस्थ न हो और जीवन निरोगी हो, तो किसी भी कार्य में मन नहीं लगता, दिलों-दिमाग काम नहीं करता, विषय-वासना सब व्यर्थ हो जाती है, क्योंकि एक रोगी को कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

धन, पुत्र और स्त्री आदि जितने भी सुख हैं, स्वास्थ्य के बिना सब कुछ फीके और व्यर्थ प्रतीत होते हैं। जो व्यक्ति संसार में इस महत्व को पहचान जाता है, वो ही 100 से ज्यादा सालों तक जीता है।



अपने शरीर की जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति का प्रथम परम कर्तव्य है। पूर्ण

रूप से स्वस्थ रहने और शरीर में पनपे या पनपने वाले रोगों का जड़ से समूल नष्ट करने के उपायों को इस पुस्तक में चुन-चुनकर संकलित कर प्रस्तुत किया है। पुस्तक के पाठकों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि खान-पान की कोई ऐसी वस्तु नहीं, जिससे अपनी चिकित्सा करना संभव न हो।

जब हम घर में रहकर, घर में मौजूद फल, सब्जी, मिर्च-मसालों, आहार, धान्य, मेवा और वनस्पतियों आदि के द्वारा अपनी चिकित्सा बखूबी कर सकते हैं, तो फिर डाक्टर, वैद्य या हकीम के पास जाकर अपने गाढ़े पसीने की कमाई क्यों उनके हवाले कर दें? हम उपवास, खान-पान तथा प्राकृतिक चिकित्सा के द्वारा भी स्वस्थ और निरोग रह सकते हैं। फिर भी यदि किसी औषधि की आवश्यकता पड़ ही जाए, तो उसे स्वयं घर तैयार कर सकते हैं।

आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में जहां योग्य चिकित्सकों और परामर्शदाताओं का अभाव है, वहां इस पुस्तक से ज्ञान प्राप्त कर, स्वयं अपने तथा दूसरों के स्वास्थ्य की रक्षा कर निरोगता प्रदान कर सकते हैं।

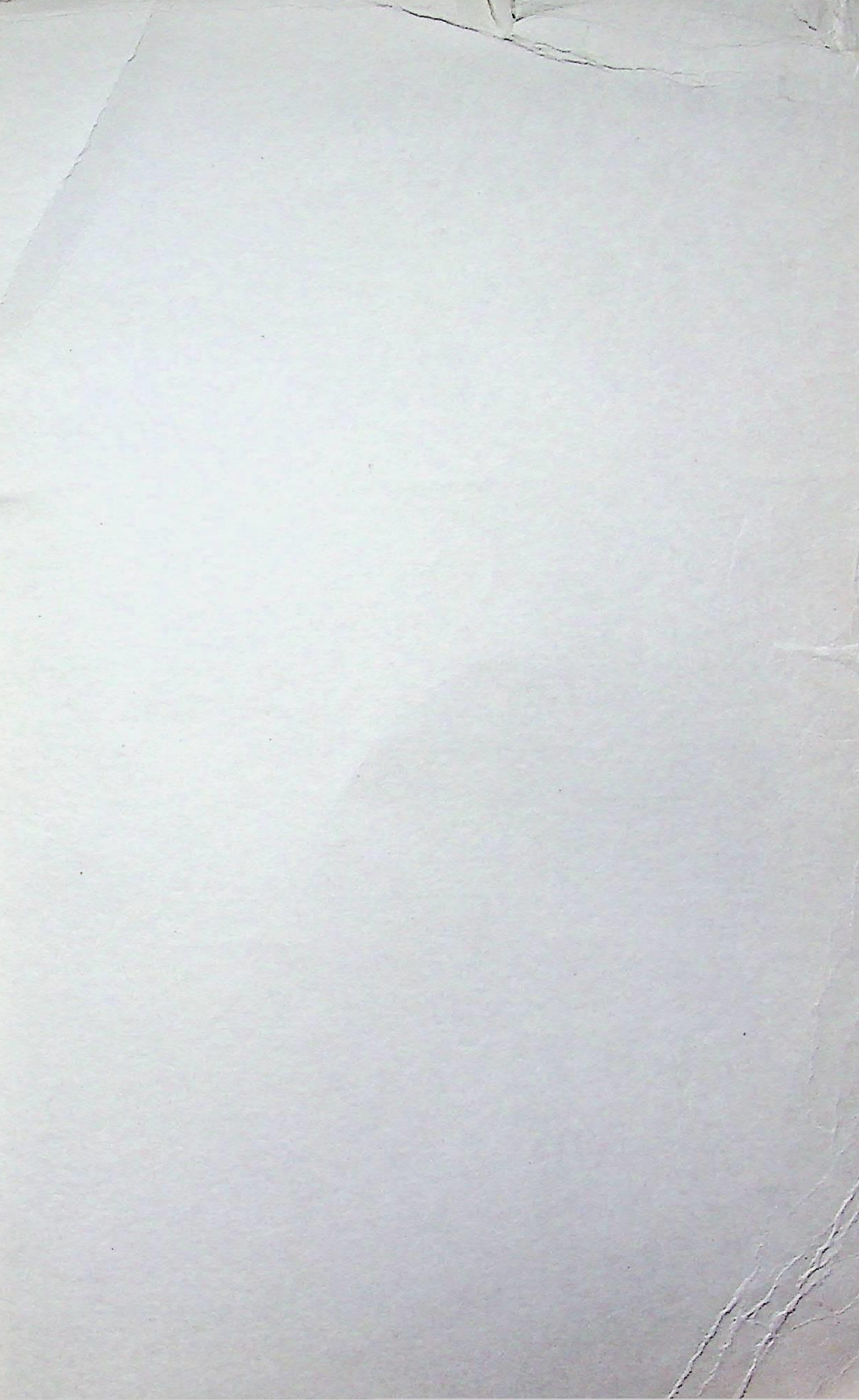
सुखी और दीर्घ जीवन की प्राप्ति के लिए, स्वस्थ, सुंदर और सबल बनकर जीने के लिए और जीवन भर निरोग रहने के लिए, निरोगी जीवन को पढ़िए। असली किताब मंगवाने के लिए कृपया एडवांस 100 रुपये मनीआर्डर से जरूर भेजे।

पुस्तक मंगवाने का पता — 212696 —

## अमित पुस्तक भंडार

ज्ञान मार्किट, नजदीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर।



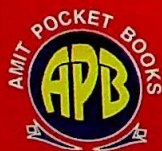




विश्व प्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवम्  
धार्मिक पुस्तकों के लेखक  
पण्डित वाई० एन० झा० 'तूफान'



इस पुस्तक में दस महाविद्या अवतार कथा,  
दस महाविद्या तत्व, दस महाविद्याओं के रूप,  
सिद्धि के सरल मार्ग, पंचोपचार पूजन,  
समस्त न्यास, मूल मंत्र, माला जप विधि,  
साधना में विभिन्न आसन प्रयोग,  
यंत्र-मंत्र साधना की मूल विधि,  
कवच एवं विविध स्तोत्र,  
षोडशोपचार पूजन, हवन,  
कलश स्थापना विधि,  
मातृ का पूजन विधि सहित अनेकों विषयों का  
वर्णन विस्तृत रूप से वर्णित किया गया है।



**अमित पाकेट बुक्स**

सखुजा मार्केट, नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर-8

☎ 0181-212696